GOVT. COLLEGE KARSOG

"विद्यया अमृतमश्नुते"

Government College Karsog

District Mandi (HP) 175011

NACC Accredited
Grade 'B'

KAMAKSHA

2023-24

Editor in Chief
Dr. Kulbhushan Sharma

Patron
Dr. Jagjit Singh Patiyal
Principal

www.gckarsog.edu.in   gckarsog-hp@nic.in   01907-222116

Editorial Board

Dr. Kulbhushan Sharma
Editor-in-Chief

Staff Editors

Ms. Anupama Sharma
English Section

Dr. Savitri Devi
Hindi Section

Dr. Lomeshwar
Science Section

Ms. Vidya Devi
Commerce Section

Dr. Prem Prakash
Planning Forum

Mr. Jai Kumar
Sanskrit Section

Mr. Bhisham Kumar
Pahari Section

Student Editors

Ms. Simran
English Section

Ms. Manisha
Hindi Section

Ms. Gargi Gupta
Science Section

Ms. Nirjala
Commerce Section

Ms. Veena Kumari
Planning Forum

Mr. Manish Kumar
Sanskrit Section

Ms. Divya
Pahari Section

Dr. Amarjeet K. Sharma
Director (Higher Education)

Directorate of Higher Education
Himachal Pradesh
Shimla-171001
Tel. : 0177-2656621
Fax: 0177-2811347
E-mail: dhe-sml-hp@gov.in

Message

It is a matter of immense delight for me to know that your college is going to publish the college magazine.

College magazine is a very useful medium for young minds to express their bristling ideas and thoughts. It gives a chance to students, the budding writers, to get the attention of others through their creative and contemporary writings. It is an essential ingredient of college regular activities and documentation of such events. The true purpose of higher education is to open the horizons for the curious young minds and to refine and polish them in such a way that they become responsible citizens of our country.

I wish your college a great future and grand success to the college magazine. I also congratulate the Editor(s) of the magazine and wish everyone all the best in their ventures.

Jai Hind.

(Dr. Amarjeet K. Sharma)

Principal
Govt. College Karsog

From the Desk of Principal

Dear students,

It gives me immense pleasure to present yet another issue of the College Magazine "Kamkasha". An analytical mind with a passion for learning leads an individual to achieve success and glory in life. In the era of privatization as well as globalization the hallmark of success is hard work. College being an institution of higher learning provides an environment to train our young boys and girls to build an effective future career. College Magazine provides a platform to our young students to express their thoughts on various issues pertaining to academics, society, literature, etc. and ignites the young minds for the generation of constructive inputs/ideas to bring all round growth and development. I take this opportunity to compliment the Editor-in-chief as well as the entire team of Editorial Board in their endeavour in bringing out the issue of the magazine.

Dr. Jagjit Singh Patyal
Principal

Govt. College Karsog

From the Desk of Editor-in-Chief

"If you want to change the world, pick up you pen and write." -Martin Luther.

Greetings to all the stakeholders of the college!

It is a moment of pleasure for me to present the issue of college magazine "Kamaksha" for 2023-24. GCK started its journey in the year 1994 with the aim of providing education to rural youths and empowering them so that they can be financially independent, socially conscious, morally upright and emotionally balanced. We as an institution have completed three cycles of National Assessment Accreditation Council (NAAC). It is, indeed, a moment of pride for all of us, that we have been accreditated thrice by NAAC. The Internal Quality Assurance Cell (IQAC) is working assiduously to improve on the quality aspects and preparing itself towards 4th cycle of accreditation by NAAC in 2029. The college has maintained its excellence in academic records and two students have been placed in the merit list.

Government College Karsog is an amalgamation of competent teachers, state-of-the-art infrastructure and an experienced and efficient Management, safe and supportive environment for its students to provide a perfect balance of academics, sports, artistic and social opportunities. Genuine concern of our institution is to ensure students emotional growth along with intellectual excellence. This empowers them to develop their self-esteem, self-awareness and self-confidence. Discipline, values and integrity are the foundation of this Institution. Our vision is to produce conscientious, confident citizens of India who will go out into the world and make us proud.

Come on, let's give our best and make this institution a modern temple of learning through our diligence, devotion and dedication.

I am thankful to my team for being supportive and dedicated to make this magazine all it can be. We expect all the students to enjoy reading the articles, poems and the literary pieces.

Best wishes!

Dr. Kulbhushan Sharma
Editor-in-Chief

NAAC PEER TEAM VISIT

ETF NATIONAL CONFERENCE AT GC KARSOG

FACULTY DEVELOPMENT PROGRAMME

ANNUAL PRIZE DISTRIBUTION FUNCTION

HPU YOUTH FESTIVALS

NATIONAL CADET CORPS

NATIONAL SERVICE SCHEME

ROVERS & RANGERS

SPORTS

CHRONICLE SECTION

वार्षिक प्रतिवेदन

(शैक्षणिक सत्र : 2023-24)

महाविद्यालय : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

अपने स्थापना वर्ष 1994 से लेकर आज तक अपने 29 साल के सफर में महाविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। करसोग महाविद्यालय की उपलब्धियां इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज हैं। महाविद्यालय की स्थापना के समय छात्रों की संख्या केवल 187 थी जो वर्तमान में 2067 हो गयी है। विकास के पथ पर अग्रसर होते हुए महाविद्यालय ने अनेक उपलब्धियां अर्जित की हैं। महाविद्यालय ने न केवल संख्या में वृद्धि दर्ज की है अपितु शिक्षा में गुणात्मकता लाने का भी प्रयास किया है। वर्तमान में महाविद्यालय में कला, विज्ञान व् वाणिज्य संकायों में स्नातक स्तर तक शिक्षा प्रदान की जाती है। वर्तमान में अंग्रेजी, हिंदी और राजनीति शास्त्र विषयों में स्नातकोत्तर की कक्षाओं का भी प्रावधान है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय केंद्र (IGNOU) के अंतर्गत विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों में अनेक विद्यार्थी शिक्षा अर्जित कर रहे हैं। महाविद्यालय में आधुनिक समय की मांग को समझते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सूचना एवं प्रौद्यौगिक विभाग द्वारा अत्याधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण कंप्यूटर लैब भी उपलब्ध है और कंप्यूटर साइंस का कोर्स भी विद्यार्थियों के लिए प्रारम्भ किया गया है जिससे विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS):

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय ने वर्ष 2013-1 4 से स्नातक स्तर पर CBCS एवं सत्र प्रणाली लागू की है। वर्तमान में महाविद्यालय में CBCS के अंतर्गत स्नातक स्तर पर वार्षिक प्रणाली की कक्षाएं तीनों संकायों में सामान रूप से चल रही हैं। इसके अलावा स्नातकोत्तर स्तर पर अंग्रेजी, हिंदी और राजनीतिक शास्त्र विषयों में भी शिक्षा प्रदान की जा रही है।

कार्यग्रहण, नियुक्तियां, स्थानांतरण एवं रिक्तियां:

स्थानांतरण एवं कार्यग्रहण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत कुछ लोग महाविद्यालय परिवार में सम्मिलित होते हैं तथा कुछ स्थानांतरित होकर अन्य संस्थानों में अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं। इस शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय परिवार में निम्नलिखित सदस्य सम्मिलित हुए हैं:-

क्रम	नाम	पद
1.	डॉ० जगजीत सिंह पटियाल	प्राचार्य
2.	डॉ० दायक राम	सह आचार्य (राजनीतिक विज्ञान)
3.	डॉ० कुलभूषण शर्मा	सहायक आचार्य, (अंग्रेजी)
4.	प्रो० जय कुमार	सहायक आचार्य (हिंदी)
5.	प्रो० अनुपमा शर्मा	सहायक आचार्य (अंग्रेजी)
6.	डॉ० ओम प्रकाश कौशल	सहायक आचार्य, (संगीत गायन)
7.	प्रो० सुनीता कुमारी	सहायक आचार्य, (अंग्रेजी)
8.	डॉ० वीरेंद्र	सहायक आचार्य, (भौतिक विज्ञान)
9.	प्रो० रीना देवी	सहायक आचार्य, (इतिहास)
10.	प्रो० रेणुका शर्मा	सहायक आचार्य, (रसायन विज्ञान)
11.	प्रो० गौरव ठाकुर	सहायक आचार्य, (भूगोल)
12.	प्रो० दिनेश कुमार	सहायक आचार्य, (संगीत वाद्य)
13.	प्रो० रितेश कुमार	सहायक आचार्य, (राजनीतिक शास्त्र)
14.	प्रो० हितेश शर्मा	सहायक आचार्य, (गणित)
15.	प्रो० पुष्पा देवी	सहायक आचार्य, (राजनीतिक विज्ञान)

16.	प्रो० मालविंदर	सहायक आचार्य, (लोक प्रशासन)
17.	प्रो० सतीश कुमार	हायक आचार्य,(वाणिज्य)
18.	श्री ठाकुर सेन	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
19.	श्री देश राज	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
20.	श्री योगेश शर्मा	लिपिक
21.	श्री राकेश कुमार	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
22.	श्री यशवंत सिंह	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
23.	श्री गुलाब सिंह	लिपिक
24.	श्रीमती राधा देवी	सेवादार

इस शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय से निम्न सदस्यों का स्थानांतरण हुआ:-

क्रम	नाम	पद नाम
1.	डॉ० दायक राम	सह आचार्य (राजनीतिक विज्ञान)
2.	डॉ० लीला धर	सहायक आचार्य अंग्रेजी विभाग
3.	प्रो० डालिम कुमार	सहायक आचार्य, हिंदी
4.	श्रीमती रीना देवी	सहायक आचार्य, इतिहास
5.	श्री मालविंदर	सहायक आचार्य, लोक प्रशासन
6.	श्री नन्द किशोर	अधीक्षक ग्रेड 2
7.	श्री शेर सिंह	वरिष्ठ सहायक
8.	श्री केशव राम	कनिष्ट प्रयोगशाला सहायक
9.	श्री उमा दत्त	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक
10.	श्री सोहन लाल	कनिष्ट प्रयोगशाला सहायक
11.	श्री योगेश शर्मा	लिपिक
12.	श्रीमती गुलाबी देवी	सेवादार

महाविद्यालय में प्रवक्ताओं के कुल 35 पदों में से 21 पद कला संकाय, 11 पद विज्ञान व 3 पद वाणिज्य विभाग के स्वीकृत हैं। कला संकाय में 22 पदों में से 19 पद भरे गये हैं, शेष 3 पद रिक्त हैं। विज्ञान संकाय में 11 पदों में से 10 पद भरे गये हैं, शेष 1 पद रिक्त हैं। वाणिज्य संकाय में सभी पद भरें हैं। गैर शिक्षक कर्मचारी वर्ग के 25 पदों में 19 पद भरे गये हैं, शेष 6 पद रिक्त हैं। रिक्त पदों में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक का 1 पद, तबला वादक का 1 पद,1 पद Animal Collector व पुस्तकालयाध्यक्ष का 1 पद शामिल हैं।

केंद्रीय छात्र संघ:

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार हर सत्र में महाविद्यालय में वरीयता के आधार पर केन्द्रीय छात्र संघ के सदस्य चयनित किए जाते हैं। इस सत्र में निम्न पदाधिकारी चयनित हुए:

अध्यक्ष	रक्षा कुमारी	कला स्नातकोत्तर राजनीतिक विज्ञान
उपाध्यक्ष	कांता कुमारी	कला स्नातकोत्तर अंग्रेजी
सचिव	वंदना	विज्ञान स्नातक द्वितीय वर्ष
सहसचिव	अंशिता ठाकुर	कला स्नातक प्रथम वर्ष

विद्यार्थियों की संख्या:

वर्तमान में महाविद्यालय में 2067 छात्र-छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसमें 1305 छात्राएं तथा 762 छात्र हैं। अनुसूचित जाति में 311 छात्राएं व 201 छात्र तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के 50 छात्र व 64 छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। महाविद्यालय में गत वर्ष का संकाय तथा कक्षावार विवरण निम्नलिखित है:

Stream	Class wise/ Stream wise	General		SC		ST		OBC		Total	Total	Grand Total
	Enrollment	B	G	B	G	B	G	B	G	B	G	B/G
Arts	B.A. I	111	225	66	90	2	0	12	18	191	333	524
	B.A. II	166	235	60	106	1	1	19	23	246	365	611
	B.A. III	120	259	48	56	0	1	11	17	179	333	512
	TOTAL	**397**	**719**	**174**	**252**	**3**	**2**	**42**	**58**	**616**	**1031**	**1647**
Science	B.Sc. I	16	25	3	12	1	0	0	0	20	37	57
	B.Sc. II	12	34	0	7	0	0	1	1	13	42	55
	B.Sc. III	16	29	2	4	0	0	1	0	19	33	52
	TOTAL	**44**	**88**	**5**	**23**	**1**	**0**	**2**	**1**	**52**	**112**	**164**
Commerce	B.Com. I	12	8	5	4	0	0	1	1	18	13	31
	B.Com. II	18	13	2	7	0	0	1	0	21	20	41
	B.Com. III	21	11	4	1	0	0	1	1	26	13	39
	TOTAL	**51**	**32**	**11**	**12**	**0**	**0**	**3**	**2**	**65**	**46**	**111**
M. A.	PG Sem. I	10	47	8	12	0	0	2	0	20	59	79
	PG Sem. III	5	42	3	12	0	0	1	3	9	57	66
	TOTAL	**15**	**89**	**11**	**24**	**0**	**0**	**3**	**3**	**29**	**116**	**145**
GRAND TOTAL		**507**	**928**	**201**	**311**	**4**	**2**	**50**	**64**	**762**	**1305**	**2067**

छात्रवृत्तियाँ:

महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं को कल्पना चावला छात्रवृत्ति योजना, इंदिरा गाँधी उत्कृष्ट छात्रवृति, प्रधानमंत्री यशस्वी छात्रवृत्ति अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवम आर्थिक पिछड़ा वर्ग, मुख्यमंत्री विद्यार्थी कल्याण योजना, दिव्यांग छात्रवृत्ति एवं केंद्रीय क्षेत्र छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। इस सत्र में इन छात्रवृत्ति योजनाओं के अन्तर्गत 229 विद्यार्थियों को 1954500/- रुपये प्रदान किए गए।

1.	Kalpana Chawla ChhateriVriti Yojna	73	1095000
2.	Indra Gandhi Utkrishta ChhateriVriti Yojna	1	10000
3.	PM Yasasvi Scholarship for SC	100	430000
4.	PM Yasasvi Scholarship for ST	0	0
5.	PM Yasasvi Scholarship for OBC	7	30100
6.	PM Yasasvi Scholarship for OBC	18	77400
7.	Mukhya Mantri Vidyarthi Kalyan Yojna	19	285000
8.	Disabilities	1	15000
9.	Central Sector Scholarship Scheme	10	12000
	TOTAL	**229**	**1954500**

वार्षिक परीक्षा परिणाम:

किसी भी शिक्षण संस्थान की गुणवत्ता वहां के शैक्षणिक वातावरण व परीक्षा परिणामों पर निर्भर करती है। महाविद्यालय का परीक्षा - परिणाम विश्वविद्यालय के परिणामों से अपेक्षाकृत बेहतर है। गत सत्र का वार्षिक परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहा है:

Class	College %	University %
M.A. English, Hindi, Political Science	100%	NA
B.A. 3rd year	90%	NA
B.Sc. 3rd year	86.11%	NA
B.Com. 3rd year	89.74%	NA

पुस्तकालय:

पुस्तकालय महाविद्यालय की आत्मा होती है। अतः पुस्तकालय की समृद्धि पर ही छात्रों का विकास निर्भर रहता है। महाविद्यालय के पुस्तकालय में विविध विषयों से सम्बंधित 13,731 पुस्तकें उपलब्ध हैं। छात्रों को सामान्य ज्ञान में जागरूक करने एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु 30 पत्रिकाओं व 6 अंग्रेज़ी- हिंदी समाचार पत्रों की व्यवस्था की गयी है।

अभिभावक - शिक्षक संघ:

इस महाविद्यालय में अभिभावक – शिक्षक संघ का विधिवत पुनर्गठन सितम्बर 9, 2023 को अभिभावक-शिक्षक संघ की मुख्य संरक्षक प्राचार्य महोदय की देख-रेख में हुआ था, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन किया गया:

अध्यक्ष	श्री कमल नयन शर्मा
उपाध्यक्ष	श्रीमती मीना वर्मा
सचिव	श्रीमती रूचि नारंग
सह सचिव	श्री कमर लाल
श्री नन्द किशोर	कोषाध्यक्ष
सलाहकार	श्रीमती बबिता ठाकुर

अभिभावक-शिक्षक संघ द्वारा विभिन्न विषयों में 6 प्राध्यापकों, तबला वादक, 2 सफाई कर्मचारियों, एक सुरक्षा कर्मचारी व 1 कंप्यूटर संचालक की सेवाएं उपलब्ध करवाई गयी तथा महाविद्यालय के सृजनात्मक एवं विकासात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

शिक्षेत्तर गतिविधियाँ:

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है ताकि वे समाज में अपनी सफल भूमिका निभा सकें। शिक्षेत्तर गतिविधियाँ शिक्षा का अभिन्न अंग हैं और महाविद्यालय समय-समय पर सांस्कृतिक, खेलकूद तथा अन्य गतिविधियों का आयोजन करता रहता है। इस वर्ष भी विद्यार्थियों ने महाविद्यालय में तथा ऑनलाइन आधारित अनेक गतिविधियों में अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित कर सत्र को यादगार बनाया:

महाविद्यालय की NCC/NSS/R&R इकाई द्वारा 21 जून 2023 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इसमें महाविद्यालय छात्र - छात्राओं तथा शिक्षकों ने भाग लिया।

राजकीय महाविद्यालय करसोग के कंप्यूटर विज्ञान विभाग ने 06.09.2023 को "प्रौद्योगिकी के माध्यम से सशक्तिकरण" विषय पर एक अंतर-विभागीय गतिविधि का आयोजन किया। गतिविधि का उद्देश्य छात्रों को प्रौद्योगिकी के विभिन्न हालिया रुझानों से अवगत कराना था। कंप्यूटर विज्ञान विभाग के छात्रों ने डिजीलॉकर, सेफ्टी ऐप्स (जैसे 112, शक्ति ऐप), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (चैट जीपीटी), गूगल एप्लिकेशन (जैसे, डॉक्स, स्लाइड, शीट्स, फॉर्म) विषय पर विभिन्न प्रस्तुतियाँ दीं और इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट प्रबंधन। प्रस्तुतियों के माध्यम से छात्रों को विभिन्न ऐप्स के बारे में जागरूक किया गया जिनका उपयोग वे आपातकाल या संकट के समय में कर सकते हैं। सत्र के मध्य में डॉ० प्रियंका राणा ने "इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का अनैतिक उपयोग" विषय पर अपनी प्रस्तुति दी।

कन्या छात्रावास:

महाविद्यालय में छात्राओं के लिए कन्या छात्रावास की सुविधा भी है। छात्रावास में वर्तमान में छात्राओं की संख्या 19 है।

महिला प्रकोष्ट (वूमन सेल):

1. अगस्त 9, 2023 को कॉलेज वुमन सेल द्वारा छात्रा कार्यकारिणी का गठन किया गया। संयोजक रुचि नारंग द्वारा आगामी गतिविधियों का संक्षिप्त ब्योरा प्रदान किया गया।
2. सितंबर 4, 2023 को वुमन सेल (स्पर्श) के अंतर्गत छात्र-छात्रा जागरूकता हेतु मैडम गीतांजलि, डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट ऑफ पुलिस, करसोग द्वारा "सोशल मीडिया का तर्कसंगत उपयोग" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।
3. दिसम्बर 1, 2023 को वुमन सेल सदस्य प्रोफेसर विद्या द्वारा छात्राओं के लिए "स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्वच्छता" विषय पर लेक्चर दिया गया।
4. मार्च 5, 2024 को कॉलेज प्रांगण में महाविद्यालय प्राचार्य की उपस्थिति में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को मनाया गया।

करियर काउंसलिंग और जॉब प्लेसमेंट सेल:

इस इकाई के समन्वयक श्री पंकज गुप्ता, सहायक आचार्य (जीव विज्ञान) है। इस सत्र में भी विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए सभी सब्जेक्ट के आचार्य के साथ मिलकर सब्जेक्ट आधारित करियर काउंसलिंग विशेष सत्रों का आयोजन किया गया। करियर काउंसलिंग सेल विद्यार्थियों

को अपने करियर से संबंधित जागरूकता लाने के लिए महाविद्यालय की लाइब्रेरी में विभिन्न प्रतियोगी पुस्तकों – पुस्तिकाओं और न्यूज़पेपर के माध्यम से जागरूकता का प्रयास करता रहा है। इस सत्र में विज्ञान संकाय के छात्रों के लिए दिनांक 6 दिसंबर, 2023 को "Career opportunity in Science" विषय पर आधारित एक विशेष सत्र का भी आयोजन किया गया जिससे 66 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

वाणिज्य परिषद:

1. सितंबर 13, 2023 को वाणिज्य परिषद समन्वयक प्रो० विद्या देवी की अध्यक्षता में वाणिज्य परिषद छात्र कार्यकारिणी का गठन करवाया गया।
2. अक्तूबर 31, 2023 को वाणिज्य विभाग द्वारा शैक्षणिक ज्ञानवर्धक हेतु अंतर-विभागीय गतिविधियों के अंतर्गत भाषण प्रतियोगिता, कविता पाठ, पोस्टर मेकिंग, स्लोगन राइटिंग, प्रश्नोत्तरी एवं तात्कालिक गतिविधि इत्यादि शामिल रहे। सभी गतिविधियों के करवाने का मुख्य उद्देश्य सभी छात्राओं के ज्ञान एवं कौशल में विकास करना रहा।
3. नवंबर 21, 2023 को वाणिज्य विभाग की दो छात्राओं – ज्योति और निर्जला ने जिला स्तरीय जीएसटी प्रतियोगिता मंडी में भाग लिया।

रेड रिबन क्लब:

1. 16 सितम्बर 2023 को एक दिवसीय ओरिएंटेशन एवं एक्सपोजर विजिट क्षेत्रीय अस्पताल मंडी में तीन छात्रों ने भाग लिया।
2. 1 दिसम्बर 2023 को महाविद्यालय में राष्ट्रीय एड्स दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं जिसमें पोस्टर मेकिंग, रंगोली एवं सम्भाषण आयोजित की गई। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

साहित्य परिषद्:

महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग द्वारा विद्यार्थियों के लिए अप्रैल 2023 में "Teach and Reach Programme" का आयोजन किया गया जिसमें उन्हें भाषा एवम् व्याकरण सम्बन्धी जानकारी व क्रियाकलाप करवाए गए। इस कार्यशाला में विद्यार्थियों ने वाक्य विन्यास, Tenses, Voice और Narration का व्यवहारिक रूप से प्रयास किया।

महाविद्यालय साहित्य परिषद् के अंतर्गत हिंदी विभाग द्वारा 14 सितंबर, 2023 को हिंदी दिवस मनाया गया जिसमें प्रश्नोत्तरी, काव्य पाठ एवं सम्भाषण प्रतियोगिताएँ करवाई गई। विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

साहित्य परिषद् के अंतर्गत अंग्रेजी विभाग द्वारा दिनाँक 10 अक्तूबर, 2023 को भारत के विश्वविख्यात अंग्रेज़ी लेखक आर. के. नारायण के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर "Remembering RK Narayan" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत काव्य-पाठ, संवाद अदायगी, पत्र वाचन और लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें अंग्रेज़ी विभाग के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को साहित्य के मर्म को गहन तरीके से समझने हेतु आवश्यक गुर भी सिखाए गए। विभिन्न प्रतियोगितओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार भी वितरित किए गए।

ड्रामेटिक क्लब द्वारा "रंगमंच कार्यशाला":

राजकीय महाविद्यालय करसोग में ड्रामेटिक क्लब द्वारा दिनाँक 15 अक्तूबर, 2023 से 15 नवम्बर, 2023 तक कार्यक्रम समन्वयक डॉ० कुलभूषण शर्मा (सहायक आचार्य, अंग्रेज़ी विभाग) व नरेश कुमार मिंचा के मार्गदर्शन में "रंगमंच कार्यशाला" का संचालन किया गया जिसके अंतर्गत महाविद्यालय के 30 युवा रंगकर्मियों को अभिनय कौशल की बारीकियों को सिखाया गया। इस कार्यशाला में अंग्रेजी साहित्य के विख्यात कवि जॉन मिल्टन के कालजयी काव्य "पैराडाइस लॉस्ट" का नाट्य रूपान्तर करते हुए नाटक मंचन किया। युवा रंगकर्मियों ने रंगकर्म को निभाते हुए महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भी अपने अभिनय का उम्दा प्रदर्शन किया। राजकीय महाविद्यालय करसोग के ड्रामेटिक क्लब के युवा रंगकर्मियों को ज़िला भाषा एवम् संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा गेयटी थिएटर में आयोजित "विंटर कार्निवाल" के अंतर्गत "हिमरंगमहोत्सव" के लिए चुना गया और इस नाट्य उत्सव के दौरान "पैराडाइज लॉस्ट" नाटक के मंचन का सुअवसर युवा रंगकर्मियों को विंटर कार्निवाल में प्राप्त हुआ।

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय युवा समारोह:

इस सत्र में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय युवा समारोह में महाविद्यालय के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए महाविद्यालय का मान बढ़ाया तथा ग्रुप I, II, III तथा ग्रुप IV में क्रमशः भाग लिया।

युवा समारोह (ग्रुप - II):

राजकीय महाविद्यालय करसोग के संगीत कला मंच के विद्यार्थियों ने डॉ० ओम प्रकाश कौशल (सहायक आचार्य, संगीत विभाग), दिनेश कुमार (सहायक आचार्य, संगीत विभाग) और बालक राम (तबला वादक) के मार्गदर्शन में दिनाँक 13 नवम्बर, 2023 से 16 नवम्बर 2023 तक राजकीय महाविद्यालय रामपुर में शानदार प्रदर्शन करते हुए रोहित ने सितार वादन में तृतीय स्थान प्राप्त किया और महाविद्यालय ने "Folk Orchestra" में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

युवा समारोह (ग्रुप-IV):

राजकीय महाविद्यालय करसोग के ड्रैमेटिक क्लब के रंगकर्मियों ने डॉ० कुलभूषण शर्मा (सहायक आचार्य, अंग्रेजी विभाग), रितेश कुमार

(सहायक आचार्य, राजनीति शास्त्र विभाग) और नरेश कुमार मिंचा के मार्गदर्शन में दिनाँक 19 नवम्बर, 2023 से 23 नवम्बर, 2023 तक राजकीय महाविद्यालय सीमा (रोहड्डू) में आयोजित हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय युवा समारोह ग्रुप - IV में नाटक, प्रहसन, मूक-अभिनय और मिमिक्री में भाग लिया तथा गौरव (कला स्नातकोत्तर, अंग्रेजी) द्वारा मिमिक्री में अति प्रशंसनीय प्रदर्शन करते हुए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया।

"कामाक्षा" महाविद्यालय पत्रिका:

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "कामाक्षा" विद्यार्थियों की रचनात्मकता व् सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का अवसर प्रदान करती है जो अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, वाणिज्य, योजना प्रबंधन, विज्ञान और पहाड़ी विषय से सुसज्जित है। कामाक्षा पत्रिका महाविद्यालय के उभरते हुए लेखकों के लिए एक सार्थक मंच है जिसमें वे अपनी स्वरचित रचनाओं के माध्यम से अपने मन के उदगारों को व्यक्त करते हैं। सत्र 2023-24 के लिए आचार्या/आचार्य वर्ग व छात्रा/छात्र वर्ग से निम्नलिखित मुख्य संपादक, संपादक व उप-संपादक बनाए गए:

मुख्य संपादक: डॉ० कुलभूषण शर्मा

1. अंग्रेजी अनुभाग	आचार्या संपादिका:	श्रीमती अनुपमा शर्मा
2. हिन्दी अनुभाग	आचार्या संपादिका:	डॉ० सावित्री देवी
3. संस्कृत अनुभाग	आचार्य संपादक:	श्री जय कुमार
4. योजना अनुभाग	आचार्य संपादक:	डॉ० प्रेम प्रकाश
5. वाणिज्य अनुभाग	आचार्या संपादिका:	सुश्री विद्या देवी
6. विज्ञान अनुभाग	आचार्य संपादक:	डॉ० लोमेश्वर
7. पहाड़ी अनुभाग	आचार्य संपादक:	श्री भीष्म

छात्रा/छात्र संपादक मंडल:

संपादक/संपादिका	कक्षा	अनुभाग
1. सिमरन	कला स्नातकोत्तर (अंग्रेज़ी)	अंग्रेजी
2. मनीषा	कला स्नातकोत्तर (हिन्दी)	हिन्दी
3.मुनीष	कला स्नातकोत्तर (हिन्दी)	संस्कृत
4. वीना कुमारी	कला स्नातक	योजना
5. निर्जला शर्मा	वाणिज्य स्नातक	वाणिज्य
6. गार्गी	विज्ञान स्नातक	विज्ञान
7. दिव्या	कला स्नातक	पहाड़ी

फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम (FDP 2023):

महाविद्यालय में Internal Quality Assurance Cell (IQAC), के सौजन्य से दिनाँक जुलाई 3, 2023 से जुलाई 9, 2023 तक फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम आयोजित किया गया, जिसमें NAAC के विभिन्न पहलुओं पर सहायक आचार्यों द्वारा विस्तृत चर्चा तथा आगामी SSR की तैयारी की गई। इसका मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय में NAAC के बारे में सभी को अवगत करवाना तथा आंतरिक गुणवत्ता को सुनिश्चित करना था।

NAAC Peer Team Visit और महाविद्यालय को ग्रेड "B":

राजकीय महाविद्यालय करसोग के लिए यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि दिनाँक फरवरी 9-10, 2024 को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद के अंतर्गत Third Cycle में NAAC Peer Team द्वारा महाविद्यालय का दौरा किया गया तथा विभिन्न पहलुओं पर शैक्षणिक स्तर व गुणवत्ता की जांच की गई। जिसके आधार पर महाविद्यालय करसोग को ग्रेड "B" प्राप्त हुआ। इससे पूर्व NAAC Peer Team महाविद्यालय का मूल्यांकन एवं प्रत्यापन 2011 और 2018 में कर चुकी है जिसमें भी महाविद्यालय करसोग ने ग्रेड "B" अर्जित किया है।

राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन:

राजकीय महाविद्यालय करसोग अकादमिक वातावरण को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए और आचार्यों के संवर्धन हेतु संकल्पबद्ध है। महाविद्यालय करसोग के अंग्रेजी विभाग ने English Teachers' Forum (etf) के संयुक्त तत्वावधान में दिनाँक मार्च 15-16, 2024 को "Exploring the Intersections: Autobiographies, Biographies and Travel Writing in Contemporary Literature" विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में मुख्य वक्ता प्रोफ़ेसर राजेश कुमार शर्मा, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, प्रोफ़ेसर अक्षय कुमार, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, प्रोफ़ेसर रोशन लाल शर्मा, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, डॉ० जनेश कपूर, प्रोफ़ेसर प्रवीण मलिक, डॉ० नम्रता टिकू, डॉ० अनुजा राठौर शर्मा और डॉ० हेमराज बंसल ने शिरकत की। इस कार्यक्रम में दिल्ली, पंजाब, चंडीगढ़ और राज्य के विभिन्न महाविद्यालयों से आए लगभग 40 सहायक आचार्यों और शोधार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस सम्मेलन के दौरान एक काव्य संग्रह

"The ETF Mosaic : From Tabriz to Rumi's Soul" का भी विमोचन किया गया।

"जगदीश चंद्र बोस साइंस सोसायटी":

महाविद्यालय में इस क्लब का गठन वर्ष 2013 में विज्ञान के प्रचार और प्रसार के लिए में किया गया था। इस वर्ष भी जे० सी० बोस साइंस सोसायटी द्वारा "राष्ट्रीय विज्ञान दिवस – 2024" पर महाविद्यालय के छात्रों के लिए 11 विभिन्न विषयों पर आधारित 11 प्रतियोगिताएं दिनांक 28 फरवरी, 2024 को महाविद्यालय सभागार में करवाई गई। नारा लेखन, पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध लेखन, प्रोजेक्ट मेकिंग, फ्रॉम वेस्ट, प्रोजेक्ट मेकिंग, वर्किंग मॉडल साइंस, भाषण प्रतियोगिता, हिमाचली परिधान प्रतियोगिता, एकल नृत्य एवं समूह नृत्य प्रतियोगिताओं में लगभग 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कॉलेज प्राचार्य डॉक्टर जे० एस० पटियाल जी ने इस मेगा इवेंट में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की थी। महाविद्यालय की सोसाइटी श्री पंकज गुप्ता सहायक आचार्य (जीव विज्ञान) के नेतृत्व में बेहतरीन कार्य कर रही है।

"रोड सेफ्टी क्लब":

राजकीय महाविद्यालय करसोग में रोड सेफ्टी इकाई विद्यार्थियों और महाविद्यालय के समस्त कर्मचारी को रोड सेफ्टी साइन, सीट बेल्ट, हेलमेट का उपयोग करना और ड्राइविंग करते समय मादक तत्वों का उपयोग न करना विषयों पर जागरूक करवाती रहती है। इस सत्र में भी 4 मार्च, 2024 को लगभग 153 विद्यार्थियों द्वारा महाविद्यालय परिसर से एस०डी०एम० ऑफिस तक रैली निकाली गई, विद्यार्थियों ने पोस्टर, स्लोगन, फ्लेक्स और नारों के माध्यम से वाहन चालकों एवं सामान्य जनों को रोड सेफ्टी नियमों से जागरूक करवाया। दिनांक 4 मार्च, 2024 को विद्यार्थियों को "रोड सेफ्टी और इसके नियम" अवगत करवाने के लिए समन्वयक के द्वारा महाविद्यालय सभागार में पीपीटी प्रेजेंटेशन रोड सेफ्टी अवेयरनेस पर प्रस्तुत की गई। प्राचार्य डॉक्टर जे० एस० पटियाल जी के नेतृत्व में कॉलेज के सभी विद्यार्थियों को रोड सेफ्टी शपथ भी दिलवाई गई। महाविद्यालय के छात्रों को जागरूक करने के लिए दिनांक 6 मार्च, 2024 को महाविद्यालय परिसर में 13 विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ "एकदिवसीय मेगा इवेंट" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि महाविद्यालय के कार्यकारी प्राचार्य डॉक्टर गुलशन महाजन ने शिरकत की और विद्यार्थियों ने पोस्टर मेकिंग, निबंध लेखन, स्लोगन लेखन, चित्रकला, कार्टून मेकिंग, रोड सेफ्टी प्रदर्शनी, कविता पाठ, नाटक, मूक अभिनय, ट्रेडिशनल मॉडलिंग आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया। महाविद्यालय में संपूर्ण वर्ष जागरूकता लाने के लिए डिजिटल डिस्पले स्क्रीन भी लगाई गई है ताकि विद्यार्थी, शिक्षक एवं गैर शिक्षक वर्ग रोड सेफ्टी कानून के सन्दर्भ में जागरूकता हो सके।

एन० सी० सी०:

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय की एन०सी०सी० की इकाई का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा। ANO डॉ० यमुना शर्मा के नेतृत्व में हमारे महाविद्यालय की एन०सी०सी० इकाई ने निम्नलिखित गतिविधियों में भाग लिया:-

1. महाविद्यालय के 23 छात्रों ने NCC "C" तथा 26 कैडेट्स ने NCC "B" सर्टिफिकेट के लिए आयोजित परीक्षा में भाग लिया।
2. महाविद्यालय के दो कैडेट चूड़ामणि और पुष्पनीत ने 21 मई से 28 मई, 2023 तक नेशनल कैंप ऑल इंडिया ट्रैकिंग expedition कैंप में भाग लिया अमरकंटक (मध्यप्रदेश) में आयोजित किया गया।
3. महाविद्यालय के चार कैडेट दीपांशु ठाकुर, फिज़ा ठाकुर, किरना कुमारी, निष्ठा ने 10 जून से 21जून, 2023 तक नेशनल कैंप (एक भारत श्रेष्ठ भारत) में भाग लिया मलेरकोटला (पंजाब) में आयोजित किया गया।
4. महाविद्यालय के एक कैडेट राहुल शर्मा ने 18 जून से 23 जून, 2023 तक रॉक क्लाइंबिंग ट्रेनिंग कैंप (नैशनल कैंप) में भाग लिया। आर्मी पब्लिक स्कूल पिथौरागढ़ (पंजाब) में इसका आयोजित किया गया।
5. दिनांक 29 जून से 8 जुलाई, 2023 तक नौणी यूनिवर्सिटी (सोलन) में एटीसी कैंप (1 एचपी ब्वॉयज बटालियन एनसीसी सोलन) द्वारा आयोजित किया गया। इसमें 50 कैडेट्स ने भाग लिया जिसमे की ड्रिल कंपटीशन में प्रथम स्थान सीनियर अंडर ऑफिसर महिमा ठाकुर और सीनियर अंडर ऑफिसर पुष्पनीत ने प्राप्त किया और द्वितीय स्थान अंडर ऑफिसर उमेश कुमार और अंडर ऑफिसर बनिता ने प्राप्त किया।
6. महाविद्यालय के तीन कैडेट कल्पना कुमारी, नेहा कुमारी, वंशिता ने 7 अगस्त से 17 अगस्त, 2023 तक थल सेना कैंप (नैशनल कैंप) में भाग लिया, जो कि 23 पंजाब बटालियन एन०सी०सी० रूपनगर (पंजाब) में आयोजित किया गया था।
7. महाविद्यालय के दो कैडेट अंडर ऑफिसर उमेश कुमार और कैडेट रितिका ठाकुर ने 11 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक (सी०ए०सी०) कैंप में भाग लिया जो कि 1 एचपी ब्वॉयज बटालियन एनसीसी सोलन द्वारा वी०पी०टी०ई० कोटला बरोग (सिरमौर) में आयोजित किया गया था।
8. महाविद्यालय के एक कैडेट तिग्मांशु ने 9 दिसंबर से 18 दिसंबर, 2023 तक रॉक क्लाइंबिंग ट्रेनिंग कैंप (नैशनल कैंप) में भाग लिया जो कि (गुजरात) में आयोजित किया गया था।
9. महाविद्यालय के दो कैडेट रोहन मेहता, अंडर ऑफिसर उमेश कुमार ने 17 दिसंबर से 28 दिसंबर, 2023 तक (नेशनल कैंप) आर्मी अटैचमेंट कैंप में भाग लिया जो कि (15 कुमाऊं इंदौर पठानकोट) में आयोजित किया गया था।
10. महाविद्यालय के 45 कैडेट ने 18 जनवरी से 27 जनवरी, 2024 तक (स्टेट आर०डी०सी०) कैंप में भाग लिया जिसमें से 12 कैडेट रिज मैदान परेड

के लिए चयनित किए गए। यह कैंप (7 एचपी इंडिपेंडेंस कंपनी एन०सी०सी० शिमला) द्वारा आयोजित किया गया था।

11. महाविद्यालय की रितिका ठाकुर ने जनवरी 2024 में आर०डी०सी० कैंप में भाग लिया था जो की नई दिल्ली में आयोजित किया गया था जिसमें पूरे इंडिया के 1500 कैडेटों ने भाग लिया था, जिसमें से रितिका ठाकुर एक थी। रितिका ठाकुर ने 6 कैंप लगाए जिसमें एक कैंप 10 दिन का था, रितिका 6 कैंप को पार करके रिपब्लिक डे कैंप (दिल्ली) तक पहुंची और (कर्त्तव्यपथ) में हिस्सा लिया। कैडेट रितिका ठाकुर (90) दिन तक अपने घर वालों से दूर रही। अपनी कड़ी मेहनत और दृढनिश्चय के कारण उन्होंने ये मुकाम हासिल किया। ये महाविद्यालय करसोग व एन०सी०सी० यूनिट करसोग के लिए गर्व की बात है।

मान्यवर! महाविद्यालय के लिए यह अति हर्ष का विषय है कि हमारे कैडेट्स रमन, सचिन, परमार का चयन भारतीय सेना के लिए हुआ। हमारे कैडेट्स ने जागरूकता रैली, पौधारोपण तथा स्वतंत्रता दिवस परेड में भी भाग लिया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS):

महाविद्यालय में प्रतिवर्ष की तरह स्वयंसेवियों ने महाविद्यालय के सौंदर्यकरण, जागरूकता, पौधारोपण व अन्य गतिविधियों में भाग लिया। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा किया गया इस सत्र का कार्य इस प्रकार से है:-

1. महाविद्यालय में स्वयंसेवियो ने 1 जून, 2023 को पर्यावरण संरक्षण हेतु 'वाटर सेविंग' थीम के माध्यम से गांव-गांव जाकर लोगों को जागरूक करवाया।
2. स्वयंसेवियों ने पर्यावरण संरक्षण हेतु 2 जून, 2023 को 'अडॉप्टिंग हेल्दी लाइफ़स्टाइल' थीम के माध्यम से एक अच्छे सेहत को बनाए रखने हेतु युवा पीढ़ी को जागरूक करवाया।
3. स्वयंसेवियो ने 3 जून, 2023 को 'एनर्जी सेविंग' थीम के माध्यम से लोगों को जागरूक करवाया।
4. दिनांक 5 जून, 2023 को महाविद्यालय की एन०एस०एस० इकाई ने विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष पर प्रकृति के बचाव हेतु पौधे लगाए और प्लास्टिक का निपटारा करने का प्रयास किया।
5. दिनांक 5 जून, 2023 को स्वयंसेवियों ने प्रयोग में न आने वाले लिफाफे तथा अन्य पैकेट से कुछ पैकेट बनाएं जो उन्होंने दुकानदारों को दिए और साथ ही प्लास्टिक उपयोग न करने की सलाह दी।
6. दिनांक 7 जून, 2023 को महाविद्यालय की एन०एस०एस० इकाई के स्वयंसेवियों द्वारा 'इ-वेस्ट हैंडलिंग' थीम के माध्यम से बच्ची हुई चीजों से अनेक वस्तुओं को बनाया।
7. दिनांक 9 जून, 2023 से दिनांक 21 जून, 2023 तक महाविद्यालय की एन०एस०एस० इकाई के स्वयंसेवियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य पर 'योग से ही सब होगा' थीम के माध्यम से एक माह तक जागरूक करवाया।
8. दिनांक 27 जून, 2023 को स्वयंसेवियों ने 'मेरी माटी मेरा देश धरती का संवर्धन' नामक कार्यक्रम थीम के माध्यम से बनौणी महादेव नामक वन में जाकर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया।
9. 12 अगस्त, 2023 को महाविद्यालय में विश्व सपूतों को नमन कार्यक्रम रखा गया जिसमें सभी स्वयंसेवियों ने देशभक्ति गीतों के साथ स्वतंत्रता सेनानियों अमर शहीदों को श्रद्धांजलि दी।
10. 4 सितंबर, 2023 को महिला प्रकोष्ठ द्वारा 'वूमेन एंड सोशल मीडिया' नामक विषय पर छात्राओं के लिए वक्तव्य का आयोजित किया गया जिसमें सभी महाविद्यालय के स्वयंसेवियों ने भागीदारी सुनिश्चित की।
11. 13 सितंबर, 2023 को महाविद्यालय के स्वयंसेवियों द्वारा जल स्रोतों की सफाई एवं स्थानीय लोगों में जागरूकता फैलाने का प्रयास किया।
12. 14 सितंबर, 2023 को हिंदी दिवस के उपलक्ष में महाविद्यालय सभागार में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें सभी स्वयंसेवियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।
13. 16 सितंबर. 2023 को जोनल अस्पताल मंडी मे रेड रिबन क्लब द्वारा विशेष अभ्यास सत्र बैठक का आयोजन किया गया था जिसमें राजकीय महाविद्यालय से तीन स्वयंसेवियों ने भाग लिया था।
14. 19 सितंबर, 2023 को एन०एस०एस० इकाई करसोग द्वारा डीएसपी करसोग गीतांजलि ठाकुर जी के नेतृत्व में एक गतिविधि की गई जिसका मूल उद्देश्य विद्यालय में पढ़ रहे युवाओं के मध्य जागरूकता फैलाना था। इसमें सभी स्वयंसेवियों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।
15. 20 सितंबर, 2023 को राष्ट्रीय सेवा योजना करसोग की चार स्वयंसेवियों का District Level Selection Camp के लिए चयन हुआ जिसे मंडी में आयोजित किया गया।
16. 24 सितंबर, 2023 को करसोग में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्थापना दिवस के उपलक्ष पर एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 87 स्वयंसेवियों ने भाग लिया।
17. 25 सितंबर, 2023 को स्वयंसेवियों ने 'वस्त्र दान' नामक एक विशेष गतिविधि को गोद लिए हुए गांव सानना में जाकर किया गया। जहां पर उन्होंने

जरूरतमंद लोगों तथा बच्चों के लिए कपड़े और जूते इकट्ठे किए।

18. 27 सितंबर. 2023 को स्वच्छता सेवा अभियान के तहत स्वयंसेवियों ने पास के जंगल के मंदिर में जाकर स्वच्छता अभियान चलाया।
19. 29 सितंबर 2023 को महाविद्यालय करसोग के स्वयंसेवियों ने विश्व रेबीस दिवस के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग कंपटीशन करवाया। जिसमें सभी स्वयंसेवियों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।
20. 1 अक्तूबर, 2023 को महाविद्यालय करसोग में स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत 'स्वच्छता ही सेवा' थीम के माध्यम से स्वयंसेवियों ने एक घंटे का श्रमदान किया।
21. 12 अक्तूबर, 2023 को नेहरू युवा केंद्र द्वारा महाविद्यालय में 'मेरी माटी मेरा देश' अभियान के तहत कलश यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें सभी स्वयंसेवियों ने भागीदारी सुनिश्चित की।
22. स्वयंसेवियों ने नवरात्रों के उपलक्ष्य पर नजदीक के मंदिर में माता के विशाल भंडारे में श्रमदान किया।
23. 21 अक्तूबर, 2023 को महाविद्यालय के स्वयंसेवियों ने नेहरू युवा केंद्र द्वारा जिला मंडी में आयोजित जिला स्तरीय युवा महोत्सव में भाग लिया।
24. स्वयंसेवियों ने माहूंनाग में सात दिवसीय विशेष शिविर में छठे दिन अपना अहम योगदान दिया जिसमें हमारे महाविद्यालय के स्वयंसेवियों ने भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।
25. 10 अक्तूबर, 2023 को महाविद्यालय के स्वयंसेवियों ने नजदीकी विद्यालयों में जाकर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता करवाई जिससे सभी छात्रों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास हो सके।
26. स्वयंसेवियों ने प्रकृति की सुंदरता को बनाए रखने के लिए सुरक्षित और हरित दिवाली बनाने के लिए नजदीकी गांव में जाकर लोगों को इससे अवगत करवाया।
27. 28 नवंबर, 2023 को राष्ट्रीय सेवा योजना के 27 स्वयंसेवियों ने SPU मंडी में युवा सेवा एवं खेल विभाग द्वारा आयोजित जिला स्तरीय युवा महोत्सव में भाग लिया।
28. 1 दिसंबर, 2023 को एड्स दिवस के उपलक्ष्य पर महाविद्यालय में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जिसमें सभी स्वयंसेवियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।
29 महाविद्यालय करसोग के शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा 5 दिसंबर, 2023 को वार्षिक एथलेटिक मीट का आयोजन किया गया जिसमें सभी स्वयंसेवियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।
30. महाविद्यालय के 6 स्वयंसेवियों का चयन जिला स्तरीय मेगा शिविर के लिए हुआ।
31. दिनांक 1 जनवरी से 7 जनवरी, 2024 तक महाविद्यालय एन०एस०एस० के स्वयंसेवियों ने नजदीकी नागरिक अस्पताल करसोग में अपनी सेवाएं दी।
32. 25 जनवरी, 2024 को स्वयंसेवियों ने राजकीय उत्कृष्ट वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला करसोग के खेल मैदान में एक विशेष शपथ ली जिसमें नव मतदाताओं ने निष्पक्षता के साथ मतदान के प्रति जागरूक करने का प्रण लिया।
33. 26 जनवरी, 2024 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई करसोग के 16 स्वयंसेवियों ने खंडस्तरीय गणतंत्र दिवस परेड के कार्यक्रम में भाग लिया।
34. दिनांक 22 फरवरी, 2024 से 28 फरवरी, 2024 तक महाविद्यालय करसोग में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के 50 स्वयंसेवियों ने भाग लिया।

रोवर्ज एण्ड रेंजर्स (R&R):

महाविद्यालय की यह इकाई रोवर्स स्काउट लीडर्स श्री पंकज गुप्ता श्री गौरव ठाकुर और श्री हितेश शर्मा के साथ-साथ रेंजर लीडर्स श्रीमती अनुपमा शर्मा और सुश्री पुष्पा देवी के नेतृत्व में बेहतरीन कार्य कर रही है। इस इकाई की सत्र 2023-24 की उपलब्धियां निम्नलिखित रही:-

1. इकाई की चार रेंजर्स और चार रोवर्स ने "भारत स्काउट एंड गाइड स्टेट ट्रेनिंग सेंटर रिवालसर" से दिनांक 14 से 18 जुलाई, 2023 को "स्पेशलाइज्ड कैंप ऑन स्काउटिंग स्किल्स" राज्य स्तर पर प्रथम स्थान लेते हुए उत्तीर्ण किया।
2. 14 रोवर्स और रेंजर्स ने "फ्री बीइंग मि" इंटरनेशनल प्रोजेक्ट के अंतर्गत करसोग के विभिन्न स्कूलों जैसे की सरस्वती विद्या मंदिर, डे स्टार स्कूल और बी एल सेंट्रल स्कूल में दिनांक 12 से 19 जुलाई, 2023 तक विभिन्न वार्तालाप सत्रों का आयोजन किया।
3. 10 रोवर और 6 रेंजर्स ने नवरात्रों के दौरान महाविद्यालय और मुमेल मंदिर में "खीर वितरण" में अपनी सेवाएं दिनांक 24 जुलाई, 2023 को प्रदान की।
4. 17 रोवर्स और रेंजर्स ने "अखिल भारतीय सन्मत सत्संग" द्वारा बरल में आयोजित सात दिवसीय भागवत कार्यक्रम में भोजन वितरण में एक हफ्ते तक जुलाई, 2023 में सेवाएं प्रदान की।
5. महाविद्यालय की इकाई द्वारा "सब डिविजनल लीगल सेल कमेटी" के साथ संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 26 जुलाई, 2023 को बनूनी जंगल में 110

पौधों का पौधारोपण किया।

6. "विश्व स्कार्फ दिवस 2023" को महाविद्यालय परिसर में मनाते हुए यूनिट के सदस्यों द्वारा रंगोली, स्कार्फ मेकिंग प्रतियोगिता और पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई।
7. 7 रोवर्स और 6 रेंजर्स ने "सिविल हॉस्पिटल करसोग" से "फर्स्ट एड" की ट्रेनिंग लेते हुए "एंबुलेंस मेन बेज" दिनांक 30, जुलाई से 24 अगस्त, 2023 को प्राप्त किया।
8. राज्य पुरस्कार और निपुण की तैयारी कर रहे 36 विद्यार्थियों द्वारा महाविद्यालय परिसर के भीतर "रोवर रेंजर वाटिका" की स्थापना 22 अगस्त, 2023 को की गई।
9. 42 रोवर और रेंजर द्वारा "नारी सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण" विषय पर महाविद्यालय परिसर से "सब डिविजनल मजिस्ट्रेट ऑफिस बरल तक "सामाजिक जागरूकता रैली" का सफल आयोजन दिनांक 27 अगस्त, 2023 किया गया।
10. 32 रोवर्स और रेंजर्स ने "फायर और सेफ्टी डिपार्टमेंट" से डिजास्टर मैनेजमेंट की ट्रेनिंग दिनांक 28 अगस्त, 2023 को उत्तीर्ण की और "सिविल डिफेंस बेज" हासिल किया।
11. 32 रोवर्स और रेंजर्स ने बनूनी जंगल में जाकर एक किलो प्लास्टिक एवं नॉन बायोडिग्रेडेबल कचरा एकत्रित किया और इसका निष्पादन महाविद्यालय में किया।
12. इकाई के 16 रोवर्स और रेंजर्स ने मॉडल स्कूल, ममेल में दिनांक 13 सितंबर, 2023 को विद्यार्थियों के लिए "विशेष वार्तालाप सत्र" का आयोजन किया, जिसमें उन्हें सैनिटेशन, सेल्फ कॉन्फिडेंस बिल्डिंग और लुप्त होती जा रही परंपरागत गेम्स से अवगत करवाया।
13. 40 रोवर्स और रेंजर ने महाविद्यालय के साथ लगते काणी मंडलाह जंगल में 51 पौधों का पौधारोपण किया। इसके साथ उन्होंने "ओजोन डे 2023" के अंतर्गत "ओजोन डिप्लीशन और प्रोटेक्शन" विषय पर आधारित "सामाजिक जागरूकता रैली का आयोजन काणी मंडलाह से बरल और महाविद्यालय परिसर तक दिनांक 16 सितंबर, 2023 को किया।
14. इस वर्ष महाविद्यालय के लिए यह बहुत ही गर्व की बात रही कि महाविद्यालय की पांच रेंजर्स मोनिका, निहारिका, मासूम, शिल्पा, मीनाक्षी और महाविद्यालय के तीन रोवर्स हितेश, अजय, तेंदुल "राज्यपाल पुरस्कार" के लिए "भारत स्काउट एंड गाइड्स स्टेट ट्रेनिंग सेंटर रिवालसर" से दिनांक 21 से 30 सितंबर, 2023 में चयनित हुए,और इन्हें "राज्यपाल पुरस्कार" महामहिम राज्यपाल के हाथों 22 फरवरी, 2024 को शिमला में प्राप्त हुआ।
15. महाविद्यालय की आठ रेंजर्स और आठ रोवर्स ने राज्य स्तरीय निपुण टेस्टिंग कैंप उत्तीर्ण किया जो कि भारत स्काउट एंड गाइड स्टेट ट्रेनिंग सेंटर, रिवालसर में दिनांक 27 से 30 सितंबर, 2023 को आयोजित किया गया।
16. 7 रेंजर्स और आठ रोवर्स ने माता रानी मंदिर कमेटी सनारली द्वारा आयोजित सामुदायिक भोज में दिनांक 4 से 7 अक्टूबर, 2023 में अपनी सेवाएं प्रदान की।
17. इकाई द्वारा स्काउट फेडरेशन डे महाविद्यालय परिसर में 7 नवंबर, 2023 को फ्लैग होस्टिंग और परिसर की सफाई अभियान कार्यक्रम के साथ मनाया गया।
18. 16 रोवर्स और रेंजर्स ने सब डिविजनल लेवल रिपब्लिक परेड में राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल करसोग में भाग लिया तथा रोवर्स और रेंजर्स ने कार्यक्रम के दौरान ड्रग एब्यूज़ विषय पर एक नाटक भी प्रस्तुत किया।
19. इकाई की पांच रेंजर्स (कनिका, तमन्ना, पुष्पा, वंदना, नीतिका) और दो रोवर्स (आदित्य और मृदुल) ने राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह की परेड में शिमला, हिमाचल प्रदेश में हिस्सा लिया और महाविद्यालय का नाम रोशन किया।
20. दिनांक 5 से 7 फरवरी, 2024 को यूनिट के सदस्यों द्वारा 91 पौधों का पौधारोपण मिट्टी के नए गमले और महाविद्यालय की वाटिका में किया गया।
21. 47 रोवर्स और रेंजर्स ने दिनांक 22 फरवरी, 2023 को "सुकेत सत्याग्रह पार्क" की सफाई "स्काउट फाऊंडेशन डे" के दिन संपूर्ण की और वहां पर पौधारोपण भी किया।
22. इकाई के 66 रोवर्स और रेंजर्स द्वारा एक दिवसीय प्रवेश टेस्टिंग कैंप में दिनांक 26 फरवरी, 2024 को भाग लिया, जिसमें 48 विद्यार्थियों ने प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की।
23. एक रेंजर और पांच रोवर्स के साथ-साथ रोवर्स स्काउट लीडर श्री पंकज गुप्ता ने भी रक्तदान शिविर में रक्तदान देकर अपना सहयोग दिया। यह शिविर महाविद्यालय में दिनांक 27 फरवरी, 2024 को आयोजित किया गया।
24. 32 रोवर्स और रेंजर्स ने रोड सेफ्टी क्लब द्वारा आयोजित सामाजिक जागरूकता रैली में दिनांक 4 मार्च, 2024 को हिस्सा लिया।
25. इकाई के विद्यार्थियों द्वारा रोड सेफ्टी क्लब द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार अर्जित किए। इसके साथ-साथ इकाई के सदस्यों द्वारा महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में भी अपनी सेवाएं प्रदान की गई।

खेलकूद गतिविधियाँ:

अध्ययन के साथ-साथ खेल-कूद गतिविधियों का भी विद्यार्थी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इस सत्र में महाविद्यालय द्वारा खेल-कूद प्रतियोगिता में बहुत उल्लेखनीय प्रदर्शन किया गया जो कि इस महाविद्यालय के लिए बहुत ही हर्ष एवं गर्व की बात है।

1. इस सत्र में महाविद्यालय ने विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया जैसे – वॉलीबॉल, बॉक्सिंग, कबड्डी, खो-खो, जूडो, चेस, और एथलेटिक्स में भाग लिया जिसमें सभी का बहुत ही सराहनीय प्रदर्शन रहा।
2. हमारे महाविद्यालय की बॉक्सिंग टीम ने 18 से 21 नवंबर, 2023 को (राजीव गांधी मेमोरियल) महाविद्यालय, जोगिंदर नगर में भाग लिया, जिसमें दिव्यांशु, इशिता आनंद, और राजेंद्र इन तीनों ने ब्रॉन्ज मेडल लेकर इस महाविद्यालय का नाम रोशन किया।
2. महाविद्यालय की (पुरुष वर्ग) खो-खो टीम का प्रदर्शन भी बहुत सराहनीय रहा। 3 से 5 अक्तूबर, 2023 को राजकीय महाविद्यालय, सुजानपुर (हमीरपुर) में इसका आयोजन किया गया|
4. महाविद्यालय की (महिला वर्ग) खो – खो टीम का प्रदर्शन भी बहुत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय रहा। यह प्रतियोगिता 10 से 14 अक्तूबर, 2023 तक राजकीय महाविद्यालय, लंबाथाच (थुनाग) में आयोजित की गई। प्रियंका शर्मा का चयन इंटर यूनिवर्सिटी खो-खो टीम में हुआ।

शिक्षक वर्ग की व्यक्तिगत उपलब्धियां:

महाविद्यालय के प्राध्यपक अध्यापन के साथ - साथ अध्ययन में भी संलग्न रहते हुए अपनी प्रतिभा को विकसित करते रहते हैं। इस सत्र में महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने अपने-अपने विषयों में विभिन्न स्थानों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए और प्रस्तोता के रूप में विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान दिए:

डॉ० गुलशन महाजन (सह-आचार्य), भौतिक विभाग:

1. इन्होंने डिपार्टमेंट ऑफ़ एटॉमिक एनर्जी सिंपोजियम ऑन न्यूक्लियर फिजिक्स संगोष्ठी में "प्रॉपर्टीज ऑफ़ न्यूक्लियर मैटर एंड न्यूट्रॉन स्टार में लाइट ऑफ़ क्रैकर्स रिजल्ट एक्वेरियस एनालिसिस" नामक शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी का आयोजन आईआईटी इंदौर में दिनांक 9 से 13 दिसंबर, 2023 को हुआ था।
2. इन्होंने डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, धरमपुर द्वारा आयोजित फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम "न्यू एजुकेशन पॉलिसी – 2020" में दिनांक 19 से 24 फरवरी, 2024 में भाग लिया और इसे सफलता से संपूर्ण किया।

श्रीमती रूचि नारंग (सहायक आचार्य) गणित विभाग:

1. श्रीमती रूचि नारंग ने दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस Advances in pure & Applied Mathematic On consecutive, "Odd Natural Number Rhotrix" शीर्षक से शोध पत्र प्रस्तुत किया।
2. इनका एक शोध पत्र इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स आई०जे०सी०आर०टी० में प्रकाशित हुआ।
3. डॉ० रूचि नारंग का शोध पत्र गणिता vol 73(2), 2023,123-139 में प्रकाशित हुआ।
4. इनका शोध पत्र अंतर्राष्ट्रीय QHankel - Like Rhotrices using Self Dual Basis and Conjugate Elements of Finite Field" बुलेटिन ऑफ योर एंड अप्लाइड साइंस में दिसंबर, 2022 को प्रकाशित हुआ।

डॉ० कुलभूषण शर्मा (सहायक आचार्य) अंग्रेजी विभाग:

1. डॉ० कुलभूषण शर्मा ने दिनांक मई 12-13, 2023 को राजकीय महाविद्यालय धामी 16 मील, शिमला व English Teachers' Forum (etf), हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'Mountains in Literature, Cinema and Visual Arts' में अपना शोधपत्र "Reading the Rainbow : A Critical Study of Folk Theatre of Himachal Pradesh" प्रस्तुत किया। इस शोधपत्र के लिए इन्हें प्रोफेसर जयदेव मैमोरियल बेस्ट पेपर अवार्ड 2023 से पुरस्कृत किया गया।
2. इन्होंने दिनांक मई 20, 2023 को राजकीय महाविद्यालय जुखाला द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन 'Environmental Concerns in the Himalayan Region' में अपना शोधपत्र "A Crusade for Survival: Ecological Concerns in SR Harnot's 'Aabhi' प्रस्तुत किया।
3. इन्होंने जून 05-06, 2023 को रबिन्द्रनाथ टैगोर राजकीय महाविद्यालय सरकाघाट, जिला मण्डी द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी "Environmantal Concerns, Climate Change and Resource Management in Western Himalayas on the Occasion of World Environment Day" में "Revaluing Nature: An Eco-critical Study of S. R. Harnot's The Reddening Tree" नामक शोधपत्र प्रस्तुत किया।
4. इन्होंने दिसम्बर 02-03, 2023 को राजकीय महाविद्यालय उना द्वारा आयोजित " Recent Trends in Post Modernism: Reappraising Literary and Cultural Episteme" नामक दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ELCC 2023 में "From Margins to the Mainstream: Negotiating Dalit Consciousness in Bama's Karukku" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
5. इन्होंने फरवरी 02, 2024 को SAAS महाविद्यालय त्रिची द्वारा आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी "National Conference

on Contemporary Literature: Texts and Contexts" में "Twitterature: Analysing the Impact of Microblogging on Contemporary Literature" नामक शोधपत्र प्रस्तुत किया।

6. इन्होंने गणतंत्र दिवस (जनवरी 26, 2024) के उपलक्ष्य पर SAAS, NADA Foundation, India द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में मुख्य बीजवक्ता के रूप में "Tobacco: Its Risk and Role of Youth in Tobacco Control" नामक विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।
7. इन्होंने मार्च 15-16, 2024 को राजकीय महाविद्यालय करसोग, जिला मण्डी व English Teachers' Forum (etf), हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'Exploring the Intersections: Autobiographies, Biographies and Travel Writing in Contemporary Literature" में शोधपत्र "Looking for the Rainbow: A Study of Life Narrative and Memoirs by Ruskin Bond" प्रस्तुत किया। इसमें इन्होंने कांफ्रेंस समन्वयक की भी भूमिका निभाई।
8. इन्होंने महाविद्यालय में जुलाई 03-09, 2023 को IQAC, राजकीय महाविद्यालय करसोग द्वारा आयोजित साप्ताहिक फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में भाग लिया।
9. इसके अतिरिक्त इनके द्वारा लिखित कविता 'For Our Daughter', Cyn Fyn Enliven द्वारा प्रकाशित Daughter: An Adorable Princess नामक पुस्तक (ISBN 978-81-956448-5-8) में प्रकाशित हुई
10. डॉ. कुलभूषण शर्मा द्वारा लिखित कविता 'Infinitum, In Search of Infinity नामक पुस्तक (ISBN 978-81-962360-2-1) में प्रकाशित हुई।
11. Eternal Love' नामक कविता, J Publications (2024) द्वारा प्रकाशित Heart's Tale: An Anthology of Poems नामक पुस्तक (ISBN 978-93-340-0319-2) में प्रकाशित हुई।
12. इनकी तीन कविताएं 'Barbet on the Bank of Brook Bhakhli', 'The Clash for Consciousness' और 'In Meditation', Authorpress, New Delhi (2024) द्वारा प्रकाशित The ETF Mosaic: From Tabriz to Rumi's Soul नामक पुस्तक (ISBN 978-93-6095-615-8) में प्रकाशित हुई।

श्री पंकज गुप्ता (सहायक आचार्य) जीव विज्ञान:

1. इन्होंने (IQAC COORDINATOR) होने के नाते महाविद्यालय में सात दिवसीय "फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम" "नेक एक्रीडिटेशन और सर्विस रूल्स" विषय पर दिनांक 3 जुलाई से 8 जुलाई तक आयोजित करवाया।
2. रामानुजन कॉलेज, यूनिवर्सिटी नई दिल्ली के अंतर्गत इन्होंने दिनांक 16 से 30 सितंबर, 2023 तक जूलॉजी विषय पर रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया और इसे ए ग्रेड के साथ उत्तीर्ण किया।
3. टीचिंग लर्निंग सेंटर रामानुजन कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी के अंतर्गत इन्होंने एक हफ्ते के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम "साइकोलॉजिकल स्किल्स फॉर टीचिंग एंड लर्निंग" में भाग लिया और इसे ए प्लस ग्रेड के साथ से दिनांक 10 से 16 अक्टूबर, 2023 तक उत्तीर्ण किया।
4. भारत स्काउट एंड गाइड हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित "प्रथम अंतर्राष्ट्रीय स्कूटर गार्डर कॉन्फ्रेंस" काठमांडू नेपाल में दिनांक 24 से 28 दिसंबर, 2023 तक भाग लिया और बतौर रोवर्स स्काउट लीडर राजकीय महाविद्यालय करसोग की ओर से प्रतिनिधित्व किया।
5. दिनांक 27 फरवरी, 2024 को राजकीय महाविद्यालय करसोग में जोनल हॉस्पिटल मंडी के साथ आयोजित किए गए रक्तदान शिविर में रक्तदान भी किया।

डॉ० प्रेम प्रकाश (सहायक आचार्य) अर्थशास्त्र विभाग:

1. 29 जून से 12 जुलाई, 2023 तक टीचिंग लर्निंग सेंटर, रामानुजन कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित "इकोनॉमिक्स" में दो सप्ताह का ऑनलाइन रिफ्रेशर कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया ग्रेड ए+ प्राप्त किया।
2. "एमएसएमई: भारत में समावेशी विकास में इसकी भूमिका" शीर्षक आईआईएफटी इंटरनेशनल बिजनेस एंड मैनेजमेंट रिव्यू जर्नल में पेपर प्रकाशित पर किया DOI 10.1177/jiift. 231191159 PP 1-12
3. आईक्यूएसी, गवर्नमेंट कॉलेज करसोग, जिला मंडी (एचपी) द्वारा जुलाई, 2023 को NAAC पर आयोजित सात दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रो० विद्या देवी (वणिज्य विभाग):

1. प्रो. विद्या द्वारा राजकीय महाविद्यालय करसोग द्वारा आयोजित सात दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (3 जुलाई, 2023 से 9 जुलाई, 2023 तक) में NAAC Criterion : Research, innovation and Extension विषय पर प्रस्तुति दी।
2. इन्होंने रामानुजन महाविद्यालय, दिल्ली द्वारा आयोजित सात दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (3 अक्तूबर, 2023 से 9 अक्तूबर, 2023) के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाग लिया।

डॉ० सावित्री देवी (सहायक आचार्या), हिंदी विभाग:

1. डॉ० सावित्री देवी ने राजकीय महाविद्यालय करसोग द्वारा आयोजित सात दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (3 जुलाई, 2023 से 9 जुलाई, 2023 तक) में NAAC Criterion : Infrastructure and Learning Resources विषय पर प्रस्तुति दी।
2. इन्होंने 30, 31जुलाई, 2023 को डॉ० एन०एस०ए०एम० कॉलेज (निटटे एजुकेशन ट्रस्ट) बेंगलुरु एवं विश्व हिंदी संगठन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी "संवेदनशील सरोकारों के क्रांतिधर्ममी योद्धा: प्रेमचंद" में भाग लिया।
3. इन्होंने 25 अक्तूबर से 31 अक्तूबर, 2023 को SRM Institute of Science and Technology कट्टनकलाथुर, तमिलनाडु द्वारा आयोजित सात दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (Indian Knowledge System and Research Methodology) को सफलतापूर्वक पूर्ण किया।
4. इन्होंने 10 जनवरी, 2024 को गांधी मेमोरियल नेशनल कॉलेज, अंबाला छावनी नैक प्रत्यायित A++ संयुक्त तत्वावधान हिंदी विभाग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी "वैश्विक फलक पर हिंदी: ऑस्ट्रेलिया के विशेष संदर्भ में भाग लिया।
5. इन्होंने 5 मार्च, 2024 को SRM INSTITUTE OF SCIENCE AND TECHNOLOGY के हिंदी विभाग एवं सृजनलोक द्वारा आयोजित "हिंदी साहित्य में विविध विमर्श" राष्ट्रीय संगोष्ठी में "अपने अपने पिंजरे आत्मकथा में दलित विमर्श" पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

प्रो० सोनिया चौधरी (राजनीतिक विभाग)

1. प्रो० सोनिया चौधरी ने राजकीय महाविद्यालय करसोग द्वारा आयोजित सात दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (3 जुलाई, 2023 से 9 जुलाई, 2023 तक) भाग लिया।
2. इन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना के पाँच दिवसीय कार्यक्रम में 18 दिसंबर से 22 दिसंबर, 2023 तक राजकीय महाविद्यालय बंजार, कुल्लू में भाग लिया।
3. 27 दिसम्बर, 2023 को इन्होंने केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश में आयोजित एक दिन के बेबिनार जिसका विषय चेंज एंड ग्लोबल वार्मिंग था, में भाग लिया।
4. 15 और 16 मार्च, 2024 में राजकीय महाविद्यालय करसोग में अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

प्रो० अनुपमा शर्मा (सहायक आचार्य) अंग्रेजी विभाग:

1. अनुपमा शर्मा ने राजकीय महाविद्यालय जुखाला द्वारा 20 मई, 2023 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'Environmental Concerns in the Himalayan Region' में अपना शोध-पत्र "A Crusade for Survival : Ecological Concerns in SR Harnot's 'Aabhi' प्रस्तुत किया।
2. सहायक आचार्य अनुपमा शर्मा ने रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित (18 जून से 2 जुलाई, 2023) अंग्रेजी विषय में रिफ्रेशर कोर्स सफलतापूर्वक पूर्ण किया।
3. अनुपमा शर्मा ने राजकीय महाविद्यालय करसोग, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित सात दिवसीय FDP (3 से 8 जुलाई, 2023) में भाग लिया एवं 'Institutional Values and Best Practices' विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।
4. अनुपमा शर्मा ने राजकीय महाविद्यालय आनी, हरिपुर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित सात दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला 'International Faculty Development Programme on Academic Writing and Research Methodology' में 23 से 30 नवंबर तक चलने वाली कार्यशाला में भाग लिया।
5. अनुपमा शर्मा ने राजकीय महाविद्यालय करसोग, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित दो दिवसीय (15-16, मार्च 2024) राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में अपना शोध पत्र 'Embarking on the Journey to Self Discovery: A Critical Analysis of Tehmina Durrani's Autobiography My Feudal Lord' प्रस्तुत किया।

सुनीता कुमारी (सहायक आचार्य) अंग्रेजी विभाग:

1. इनका 'Significance and Precious Gems of Values and Wisdom that the Ramayana's Sunderkand Have' नामक शोध-पत्र Hill Quest : A Multidisciplinary, राष्ट्रीय पीअर - रिव्यूएड पत्रिका में जून 2023 में प्रकाशित हुआ।
2. इन्होंने रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित (18 जून से 2 जुलाई, 2023) अंग्रेजी विषय में रिफ्रेशर कोर्स सफलतापूर्वक पूर्ण किया।
3. इन्होंने राजकीय महाविद्यालय निहरी में 24 जून, 2023 को ICSSR स्पॉन्सर्ड एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार 'Changes and Challenges of Post Covid-19 in India's Education System' में सह-समन्वयक के रूप में सेमिनार का सफलतापूर्वक आयोजन किया।
4. इन्होंने राजकीय महाविद्यालय आनी, हरिपुर, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित सात दिवसीय (23 से 30 नवंबर, 2023) अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला 'International Faculty Development Programme on Academic Writing and Research Methodology' में भाग

लिया।

5. इन्होंने राजकीय महाविद्यालय मंडी, हिमाचल प्रदेश की अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में 23-24 फरवरी, 2024 को अपना शोध पत्र 'How Relevant and Appropriate is Gandhi Marg/Path in the Present Context' प्रस्तुत किया।
6. इन्होंने राजकीय महाविद्यालय करसोग, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित 15-16 मार्च, 2024 दो दिवसीय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में अपना शोध पत्र 'Search for Identity: Critical Analysis of Omprakash Valmiki's Autobiography 'Joothan' प्रस्तुत किया।

श्री भीष्म कुमार (सहायक आचार्य) समाजशास्त्र:

1. इन्होंने राजकीय महाविद्यालय आनी और आईसीएफ आर्मी हिमालयन फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट शिमला द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इंटरनेशनल कांफ्रेंस में अपना शोध पत्र द "सोशल फैब्रिक का लोंगिबिलिटी इंटरव्यूइंग कम्युनिटी एंड लाइफ़स्टाइल फॉर हेल्थ" नामक शोध पत्र प्रस्तुत किया इस इंटरनेशनल संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 2 से 4 दिसंबर, 2023 को किया गया था।

डॉ० लोमेश्वर (सहायक आचार्य) वनस्पति विज्ञान विभाग:

1. डॉ० लोमेश्वर ने Ramanujan College, University of Delhi द्वारा आयोजित 2 सप्ताह का Refresher Course in "Managing online classes & Co- creating MOOCS 26.0" 8 से 22 मई, 2023 को पूरा किया।
2. इन्होंने Ramanujan College, University of Delhi द्वारा आयोजित 2 हफ्ते का Refresher Course in "Botany" 29 से 13 अगस्त को पूरा किया।
3. इन्होंने Ramanujan College, University of Delhi द्वारा आयोजित 1 सप्ताह का Faculty Development Programme on "How to create your own MOOCS" 26 अप्रैल से 2 मई, 2023 को पूरा किया।
4. इन्होंने Govt. College Karsog द्वारा आयोजित 1 सप्ताह का Faculty Development Programme on "NAAC ACCREDITATION AND SERVICE RULES" 3 से 6 जुलाई, 2023 को पूरा किया।
5. इन्होंने Ramanujan College, University of Delhi द्वारा आयोजित 1 सप्ताह का Faculty Development Programme on "National Education Policy 2020" 3 से 9 अक्तूबर, 2023 को पूरा किया।

डॉ० प्रियंका राणा (कंप्यूटर एप्लीकेशन):

1. शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में दिल्ली विश्वविद्यालय के रामानुजन कॉलेज से 29 फरवरी से 14 मार्च, 2024 तक कंप्यूटर विज्ञान में दो सप्ताह का रिफ्रेशर पाठ्यक्रम ऑनलाइन पूरा किया गया।
2. 12 अक्तूबर, 2023 को सूचना प्रणाली प्रभाग और पुस्तकालय एवं प्रलेखन केंद्र केएससीएसटीई द्वारा आयोजित 'रिसर्च मेट्रिक्स' पर वेबिनार में भाग लिया।
3 कंप्यूटर अनुप्रयोग एवं विज्ञान विभाग, इंजीनियरिंग एवं प्रबंधन संस्थान, कोलकाता द्वारा आयोजित 'स्मार्ट कंप्यूटिंग के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं मशीन लर्निंग में आधुनिक रुझान पर 5 दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम में भाग लिया।
4. आईक्यूएसी, जीसी करसोग, मंडी (हिमाचल प्रदेश) द्वारा आयोजित गवर्नमेंट कॉलेज करसोग, जिला मंडी (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित 'एनएएसी प्रत्यायन एवं सेवा नियम' विषय पर एक सप्ताह का संकाय विकास कार्यक्रम पूरा किया गया। 03 जुलाई, 2023 से 08 जुलाई, 2023 (ऑफलाइन)।

रेणुका शर्मा (सहायक आचार्य) रसायन विज्ञान विभाग:

1. रेणुका शर्मा ने 5-6 सितंबर, 2023 को अकाल यूनिवर्सिटी कैंपस में आयोजित "हरित और सतत विकास पर हालिया प्रगति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीआरएजीएसडी-2023)" में एक मौखिक प्रस्तुति दी।
2. रेणुका शर्मा ने 24 जुलाई से 30 जुलाई, 2023 तक गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन में एक सप्ताह के फैकल्टी इंडक्शन ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग लिया।

डॉ० वीरेंद्र ठाकुर, प्रो० गौरव ठाकुर, प्रो० दिनेश कुमार, प्रो० रितेश कुमार, प्रोफेसर हितेश शर्मा और प्रोफेसर पुष्पा देवी ने गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन धर्मशाला में एक सप्ताह के फैकल्टी इंडक्शन ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग लिया।

ENGLISH SECTION

Ms. Anupama Sharma
Staff Editor

Ms. Simran
Student Deditor

Contents

Sr. No.	Title	Written by	Page No.
1.	Editorial	Anupama Shama	16
2.	Student Editorial	Simran	17
3.	A Call for Reform	Simran	18
4.	Mental Health and Well Being	Sushma Kumari	18
5.	Skeleton Lake	Masoom	19
6.	Fascination with Nature Makes Me a Theist	Aastha	20
7.	It Starts and Ends with Zero	Kamal Kishore	21
8.	Was it Clear?	Kamal Kishore	21
9.	Wandering through Memories	Naveen Kumar	21
10.	To My Almighty GOD	Renuka Verma	22
11.	How to Become Successful in Life?	Priti Kapoor	22
12.	Loneliness as a Pandemic	Raj Kumar	23-24

Editorial

Dear Students,

It gives me immense pleasure in presenting the bouquet of articles in English Section of College Magazine 'Kamaksha'. It provides a platform to bring out the latent talent of the budding writers. 'Kamaksha' invigorates the creative urge of the writers in the making. Creativity has its own nick. It's an innate talent that ushers from within when we embark on the path to know the truth, to know the essence and taste the nectar of love through the journey of life. So, one should always endeavour to explore the 'self' and script it creatively.

Writing process is personal. Real writers write, and they don't give up until they succeed. It

does no good to worry about the progress of others. We all proceed at our own pace. Every

story, every book, develops from scenes placed in order according to cause and effect. When

we express our feelings through words and place them in the right order, a story is born. Good writing will always require hardwork, discipline, and perseverance, but it neednot to be an act of forbearance. Plan as best you can, but have faith in your subconscious ability to create order out of chaos, and something out of nothing. Read, observe, think, write and revise! Focus on the incident at hand, and a story will emerge.

I congratulate all the students who contributed their articles to the college magazine. May you

keep the flame ablaze, achieve success in life and continue scripting stories, anecdotes, and

poems from the leaf of life!

Anupama Sharma
Staff Editor, English Section

Student Editorial

Dear Readers,

As we embark on the new academic year, I extend a warm welcome to you all on behalf of the editorial team. I am Simran, honoured to serve as the Student Magazine Editor for the 2023-2024 edition. Our college magazine serves as a vibrant reflection of the diverse talents and perspectives within our campus community. It is a platform for expression and exploration, where voices are heard, stories are shared, and connections are forged.

This year's edition encapsulates a myriad of voices, stories, and perspectives, each contributing to the rich tapestry of our publication. From the exploration of various themes to the celebration of creativity, our magazine aims to provoke thought and inspire dialogue among our readers.

As contributors, you have played a pivotal role in shaping this edition, and I extend my deepest gratitude to each one of you for sharing your insights and passions. I invite you all to immerse yourselves in the pages of our magazine, to explore the diverse narratives and engage with the thought-provoking content presented within. Together, let us celebrate the spirit of inquiry, expression, and community that defines our college magazine.

Thank you for your continued support, and I am excited to embark on this journey with you all.

Warm regards!

Simran
M.A. English, Sem. III
Student Editor

A Call for Reform

In India's higher education landscape, several tough challenges threaten to overshadow the dreams of many students and the country's potential for growth. From highly qualified people settling for low-level jobs due to a lack of opportunities to the widespread problem of fake degrees, the issues facing higher education in India are complex and urgent.

One concerning trend is the sight of well-educated individuals, like those with PhDs and MBAs, applying for jobs that are much below their qualifications, like Peon positions. This mismatch between qualifications and job opportunities highlights a broader problem in Indian education – the focus on getting degrees rather than gaining meaningful skills.

India's ranking of 48th in the Global Innovation Index 2020 paints a concerning picture. Despite having many universities and a large number of graduates, India's performance in research and innovation is not up to par. This raises questions about how resources are allocated and whether our education system is fostering innovation effectively.

A significant issue contributing to this challenge is the prevalence of fake degrees being sold openly across the country. This undermines the credibility of academic qualifications and creates a culture of dishonesty within the education system.

The rapid growth of private universities, often prioritizing appearance over academic quality, adds to the problem. Government colleges also face challenges due to insufficient funding, leading to a lack of proper infrastructure and a decline in global rankings. The brain drain, where talented individuals seek opportunities abroad, further exacerbates these issues.

To address these challenges, concerted efforts are needed from all stakeholders. This includes increasing funding for research, improving infrastructure in government colleges, and cracking down on fraudulent practices. Additionally, measures to retain talent, such as sponsoring higher education with a return commitment, can help mitigate the brain drain phenomenon.

In conclusion, India's higher education sector is at a critical juncture, facing numerous hurdles but also holding immense potential. By implementing reforms focused on transparency, accountability, and inclusivity, India can overcome these challenges and pave the way for a future defined by educational excellence and innovation.

Simran
MA English, Sem III

Mental Health and Well Being

Mental health encompasses our emotional, psychological, and social well-being, influencing how we think, feel, and act, as well as our ability to manage stress and make decisions. Just like physical health, mental health requires attention and care, including self-care practices, fostering healthy relationships, and seeking support when needed.

Developing resilience and adopting positive coping mechanisms are essential for navigating life's challenges. It's crucial to acknowledge that mental health fluctuates along a spectrum, and seeking help shouldn't be hindered by stigma. Engaging in self-reflection, mindfulness, and enjoyable activities can significantly contribute to our mental well-being. Remember, it's okay to ask for support, whether from mental health professionals or helplines, as prioritizing mental health is a continuous journey toward overall well-being.

Sushma Kumari
MA English, Sem III

Skeleton Lake

More than 75 years ago, ancient remains of hundreds of people were found in a Himalayan lake. Scientists recently revealed more clues about where the people came from and how they could have died. In a thousand-year-old Himalayan folk tale, a king and queen, followed by their attendants, trek into the mountains of northern India to the shrine of Nanda Devi, the mountain goddess. But on the way, the goddess strikes the pilgrims down for their celebratory and inappropriate behavior, and they fall into small, glacial Roopkund Lake.

In 1942, a British forest ranger assigned to patrol the Indian Himalayas during the Second World War came across the lake and found the skeletal remains of hundreds of people. News spread, and Roopkund Lake, in the present-day Indian state Uttarakhand, was rechristened Skeleton Lake. Thus began a now 77-year-old mystery about who these humans were, what brought them to the isolated, often frozen lake, and how they died. The Nanda Devi tale could help explain the bodies. The pilgrimage they attempted, the Nanda Devi Raj Jat, is a three-week journey still undertaken today to worship the goddess. Some hypothesize that the bodies could be evidence of a fatal 19th-century military expedition, but when many women's bodies were found in the lake, this idea fell out of favor.

Based on evidence of compression fractures on a few of the humans' skulls, the most common belief is that a hailstorm killed them all at once sometime between 830 and 850 A.D. Researchers radiocarbon-dated and genetically analysed the skeletal remains of 38 bodies found in the lake to find out how old the bones are and the individuals' ancestry. They also analysed the stable isotopes in the samples to learn more about what they ate. What the researchers found surprised them. “The assumption was that all the skeletons dated to around the eighth century, but it became clear that this is not what happened”. The bodies in the lake, instead of dying in a single catastrophic event, range from a few hundred to a thousand years old. The authors also assumed that the individuals were all from the Indian subcontinent, as this is what previous studies had thought. But once they had the ancient DNA samples, “it was clear this was definitely not the case,”.

Genetically, the remains fall into three distinct groups, ranging from 1,000-year-old populations from South Asia to 200-year-old populations from Greece and Crete, along with one individual from East Asia. Twenty-three of the bodies analysed were from South Asia, whereas 14 were of Mediterranean origins. Even those individuals from South Asia have ancestry that's really diverse “It's not a single population coming from somewhere within India. Instead it's people from all over the subcontinent .As for how they died there and why, The only hint that we have is that Roopkund Lake is located along the pilgrimage route that may have been used for the last 1,000 years.” And yet, it is difficult to imagine this as the sole reason for such a genetically and culturally diverse set of people to die in the same remote lake, and more research is needed to determine the exact nature of these deaths.

A massive hailstorm still can't be ruled out, but the scientists wonder if the hailstorm was the fatal blow or if it occurred after the people died. And compared to other archeological sites, Roopkund is challenging to study. It's been subject to so much disturbance, both from the natural environment, like rockslides, and from hikers on the nearby trail going down to retrieve bones or look at the site. The study does highlight the ways in which humans have travelled to far-off places for hundreds, if not thousands, of years. “We knew that there were long-distance connections,” says Harney, but the new knowledge demonstrates “how important migration and connections between different parts of the world have been throughout history.

Masoom,
B.Sc. III

Fascination with Nature Makes Me a Theist

My fascination with nature shows how deeply I believe in God and his unmatched creations. In fact, the beauty of nature is the only reason that makes me a theist. When I was a teenage girl, I used to believe that I was an atheist. At that time, I had misunderstood the meaning of atheist. As I grew up, my perception of God changed completely.

Seeing and admiring every single creation of nature increases my faith in God. Whenever I look at nature, my soul is overwhelmed, and I could die just for a glimpse of it. How can someone look at nature and not believe in God? The sky and moving clouds make me feel like this is what heaven might look like. The falling leaves show us everything has a limited time period and has an ending. Everything is temporary, so a new beginning should be welcomed.

The beauty of the moon fascinates me the most. How beautifully the Moon waits for 15 days to disappear from the sky and then waits for 50 days to shine brightly in the sky. The change is not fractional; it is a long-term process like healing.

Even a flower growing on grass is so beautifully made. All the creations look like someone is sitting above and making them with his own geometry, tools, materials, and equipment.

How beautifully the creator created the colours. Colours of nature such as green grass, blue sky, blue river, brown wood, red sun, white moon, red blood, white clouds, dark night, and so many more. How perfectly the creator selected all of them for every individual thing. How beautiful the creator gives life to all of us. What if there is no creator - who will tell the season when it will start and when it will end? Who will tell the sun when to rise and when to set? Who would give warmth to the sun? Who would have made the water cold? Who would have taught water and wind to flow? Why would fire burn us? Who will give coolness to the moon? How are all these things possible without a creator?

How beautifully the Creator gave us this life and its beauty. And how cruelly he takes that life away and ends our lives. Did this make the Creator sad or has he become accustomed to it? Ahh! These endless questions!

All this forces me to believe that the Creator is God. I can give a scientific reason to prove the existence of God - did you know that if gravity were slightly more powerful, the universe would collapse into a ball? Also, if gravity were slightly less powerful, the universe would fly apart. There would be no stars or planets. It's just that gravity is precisely as strong as it needs to be. And if the ratio of the electromagnetic force to the strong force was not 1%, life would not exist. What are the odds that would happen, and all by itself? The precision of the universe makes it logical to conclude there is a creator. And for me, the creator is God.

Aastha
M.A. English, Sem. III

It Starts and Ends with Zero

Zero is a significant term of having nothing

No displacement as in science, and nothing productive in your life, time flows in his own way but that zero comes somewhere in between, when you start something with the power of your understanding and find nothing, it feels helpless when you got nothing in your hands, the sorrow, the sadness is everywhere, it's hurts you internally, even can't laugh in funny situations, it has a bad impact on that mindset of being happy everytime, when you can't make the thing you are serious for by your own fault, can't be forgotten and forgiven because that walks with you always, though you have to figure it out by taking good decision for yourself as nothing happened in between, it starts with zero and ended up with zero.

Kamal Kishore
B.A. I

Was it Clear ?

Was it clear,
To say things as I hear,
I want to see and be her,
Man,
As I can,
I will do,
Same things to you,
Feel your black and blue,
Stuff you going through,
Every breath was going deep,
Let me feel how close you keep,
That sorrow in your soul,
I was in you as a whole,
Hold my hand and let me hear,
Every moment of your fear,
Your forehead was not clear,
Tell me whole thing let me steer,
Hold her tight like kids of bear,
I think it was not clear.

Kamal Kishore
B.A. I

Wandering through Memories

As I walked down that muddy road,
The smell of grassland
Reminded me that nostalgia,
Cool wind did stroke my face,
Those hills were dancing on a stage,
Everything was amusing
Under the blue sky,
My soul was chanting
As it found its stay.

As I walked through memories,
The echoes of laughter glowed in every step,
Memory of childhood flowed in each turn,
A strong, untold recalling joys,
Life`s abode in the symphony of moments bestowed.

Naveen Kumar
B.A. III

To My Almighty GOD

Oh my almighty lord!
In whatever road I may walk;
Take me to the destiny where I can find you.
In whatever home I may live,
Let that home be known by your name.
In whatever country I may roam,
Let me have the power
to propagate your principles.
Whatever thought came in my mind,
Let it have the bliss of you.
In whatever place I may Go,
Let me feel the essence of you.
Whatever mountain I may trek,
Let it be your "Mount Kailash"
for sure.
Whatever day I die
Please take me to the shadow of you.
Whenever I take my next birth
Let me be the "Stone Throne" seated by you.
Oh Almighty!
No matter how many birth I may pass;
Let me have unswerving devotion to you.

RenukaVerma
M.A. English, Sem. II

How to Become Successful in Life

Present time is a time of struggle. Nothing is achieved in life without struggle. Struggle is the thing that transforms/makes us from zero to hero. Nowadays every person wants to be successful but he does not understand which path to follow. Every person makes every effort to achieve success but is not able to succeed. If we want to achieve success in our life then we have to bring changes in our life. The biggest key to success is discipline. Success will not be achieved without discipline.

To achieve success we must set goals. We must work every day to achieve that goal. Along with the goal, we should also keep our thinking positive. We should try to stay away from the crowded world. Our way of living should be simple. We need to manage time. We must have self-confidence. We should not be too attached to social media. We must be emotionally and mentally strong. To be successful one must keep trying. We need to follow all these things in our life, only then we will get a successful life.

"Believe in yourself and the world will be at your feet".

Priti Kapoor
B.A. III

Loneliness as a Pandemic

If we talk about technology and innovation today, humans have already sent their innovative satellites to Mars and Hubble telescope to space so that the mystery of the universe can be understood better, And today we can reach New York 11,747 kilometres away from Delhi in just a few hours.

Today, with technology like internet, we can get news from any corner of the world in just a few seconds. We have many types of apps like Facebook, Instagram, WhatsApp, Telegram etc., through which we always stay connected with our family, friends and relatives. But despite all this, we are failing to understand loneliness and overcome it. The legendary Greek philosopher, Aristotle said that man is a social animal. He cannot live without society. But today one-third of the world's population is fighting loneliness. Loneliness is a psychological state. Man has to face this situation at some point in his life. Loneliness is also understood as a social affliction.

There can be many reasons for loneliness. Often we mistake solitude and loneliness as one and the same. Solitude is simply the state of being separated from others. A person who is living in solitude is not necessarily feeling lonely. Loneliness can be felt even while being in a crowd. Therefore, it is not necessary to be alone to be lonely. In present times, loneliness has become a big problem. As per some Academics and professions loneliness has become an epidemic in 21st century. There are many reasons for this: Impaired relationship, Low self efficiency, Beliefs, Financial hardness, Low educational attainment. Loneliness gives rise to depression and hypertension.

In the present time, a person is not able to share the problems of his personal life with any other person, there is a kind of social pressure on him that if he shares his feelings with anyone, then he is considered coward and weak. Many people do not get affection and love.

Many people become victims of loneliness since childhood. When he grows up he is afraid to socialize. Loneliness is a major epidemic not only in India but also in the world. The survey conducted by Euro Foundation found that In Europe 32%, in US 62% and in New Zealand 20.8% young population are struggling with loneliness. In a technology rich country like Japan, which is said to be the 34th richest country in the world, in Japan 21000 people committed suicide only in 2020 due to loneliness.

Japan maybe the most advanced in technology but it has lagged in emotional harmony. Today, loneliness and mental

health issues are increasing in the Indian population too. If significant changes are not made in time, the results can be very dangerous. According to WHO in 2014 there is only 0.3 psychiatrist for 1 million people in India. There are not enough psychologist and psychiatrist in India who can address the growing mental health use.

One reason for this is that mental health awareness is very low in India. If an individual is suffering from mental health, can't identify whether he needs professional help or not. Besides medical care, there should be Awareness of Mental Health. Loneliness is no longer a normal phenomenon but is becoming an adverse mental health condition that needs to be addressed.

Not only social media but also socio-economic conditions, competitive environment, unemployment, low self-efficacy, loneliness has started increasing due to COVID pandemic. To address these factors, it is important to have mental health awareness. In such a situation, evidence based progressive government policy, vibrant education system, responsive and engaging media industry and creative crowd sourcing have been said by experts to be necessary for mental health.

Many studies show that genuine care and understanding is decreasing due to increasing self- centered, individualistic or less empathetic attitudes among people. In such a situation, people feeling lonely do not find anyone trustworthy to talk to with whom they can share their feelings. It is necessary to us to be with our loved ones and family members to discuss our problems.

"Your mental health is everything,
prioritise it. Make the time like
Your life depends on it,
Because it does."

Raj Kumar
M.A. English, Sem. I

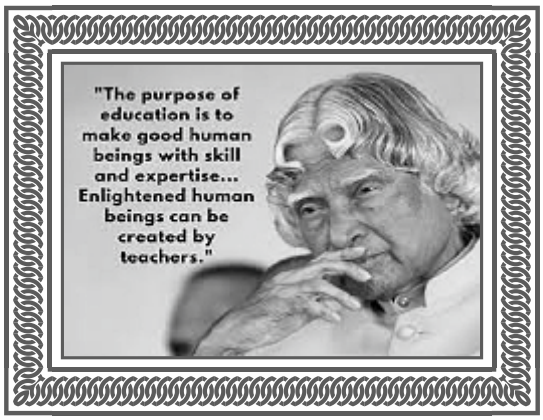

हिन्दी अनुभाग

डॉ० सावित्री ठाकुर
आचार्या सम्पादिका

मनिषा ठाकुर
छात्रा सम्पादिका

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विषय	लेखक का नाम	कक्षा	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	मनिषा ठाकुर,	छात्रा सम्पादिका हिन्दी	26
2.	माँ प्यारी माँ	मनिषा ठाकुर	कला निष्णात हिन्दी तृतीय वर्ष	27
3.	बचपन कितना सुहाना था	कशिश कुमारी	कला स्नातक प्रथम वर्ष	27
4.	उलझन	रीतिका शर्मा	कला स्नातक तृतीय वर्ष	27
5.	जय नाग कालवी व माता काण्डी चलाउणी	महिमा ठाकुर	कला स्नातक तृतीय वर्ष	28
6.	फसल	रीतिका शर्मा	कला स्नातक तृतीय वर्ष	29
7.	पश्चाताप	सानिया	कला स्नातक प्रथम वर्ष	29
8.	दीवारें	बनिता	कला स्नातक तृतीय वर्ष	29
9.	जिंदगी	विपाशा चौहान	कला निष्णात तृतीय वर्ष	30
10.	पिता	तनुजा	कला स्नातक तृतीय वर्ष	30
11.	भ्रष्टाचार	वंशिता ठाकुर	कला स्नातक द्वितीय वर्ष	31
12.	गुरु	तोयाशी शर्मा	कला निष्णात हिन्दी तृतीय वर्ष	31
13.	दर्द	प्रीति शर्मा	कला निष्णात हिन्दी तृतीय वर्ष	31
14.	कृष्णा	गायत्री शर्मा	कला निष्णात हिन्दी तृतीय वर्ष	31
15.	गौ माता की उपयोगिता व महत्त्व	मीनाक्षी	कला स्नातक तृतीय वर्ष	32
16.	प्रकृति की दहाड़	दिव्या शर्मा	कला निष्णात हिन्दी तृतीय वर्ष	32
17.	मुझे याद मत रखना, परन्तु मेरी बातों को हमेशा याद रखना	उमेश शर्मा	कला स्नातक तृतीय वर्ष	33

सम्पादकीय

साहित्य एक सृजनात्मक कला है क्योंकि साहित्य में भावों के साथ-साथ प्रतिभा और प्रेरणा का विशेष महत्त्व है। जब मनुष्य के मन में विद्यमान भावों का प्रकटीकरण लिखित रूप में प्रभावी बनता है तो साहित्य पक्ष बनता है।

जैसा कि आपको ज्ञात है कि हमारे महाविद्यालय द्वारा 'कामाक्षा' प्रत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका द्वारा अनेक छात्र साहित्य सृजन के लिए प्रेरित होते हैं और अपने भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति सृजनात्मक दृष्टिकोण का उद्भव प्रकाशित रचनाओं में बखूबी देखा जा सकता है। वास्तव में यह पत्रिका नवीन छात्रों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। मुझे इस बात की खुशी है कि प्राप्त रचनाओं में सभी लेख स्वलिखित हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में जिन रचनाओं का प्रकाशन हुआ है वे पाठकों के लिए प्रेरणादायक और प्रभावी सिद्ध होंगी। साथ में मैं समस्त पाठकों से निवेदन करती हूँ कि साहित्य में अनुकरण का क्षेत्र सीमित है। साहित्य में अनुकरण का प्रयोग उतना ही करें जितना आवश्यक है, अन्यथा अनुकरण साहित्य रचना को प्रभावहीन बनाता है।

मैं डा0 सावित्री ठाकुर (प्राध्यापिका सम्पादिका हिन्दी अनुभाग) जी का दिल की गहराईयों से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ कि उन्होंने मुझे हिन्दी अनुभाग के सम्पादकीय कार्य को करने के योग्य समझा और मुझे आशीर्वाद के रूप में कार्य सौंपा। साथ ही मैं धन्यवादी हूँ उन सभी विद्यार्थियों की, जिन्होंने 'कामाक्षा' पत्रिका में अपने लेख लिखकर समाज को प्रेरित किया।

शुभकामनाओं सहित।
धन्यवाद!

मनिषा ठाकुर
छात्रा सम्पादिका (हिन्दी अनुभाग)
कला निष्णात, तृतीय वर्ष

माँ... प्यारी माँ

कितना प्यार करते हो आप माँ
सबसे दुलार करते हो आप माँ।
वो दिन कितने प्यारे थे माँ,
जब आप हमारे साथ थे माँ।
जब आप साथ थे माँ
तो सब कुछ कितना अच्छा था माँ,
अब आत साथ न हो तो
घर बिखर-सा गया माँ।
वो बातें जो आपसे कहनी थी माँ,
दिल में रह गई वो सारी बाते माँ।
यूँ तो जमाना भर साथ है माँ,
पर आपके जैसा यहाँ कोई नहीं माँ।
उस छोटी-सी उम्र में साथ छोड़ गए माँ,
जब मुझको सबसे जरूरी थे आप माँ।
स्कूल से घर आकर आप को आवाज लगाना माँ,
एक अलग सा सुकून देता था माँ।
बस एक बार आपसे गले लगना था माँ,
ख्वाहिश-ख्वाहिश ही रह गई माँ।
आपकी याद आती है माँ,
बहुत याद आती है माँ।
माँ प्यारी माँ।

मनिषा, कला निष्णात तृतीय वर्ष

बचपन कितना सुहाना था

हमारा बचपन कैसा था
बिल्कुल बचपन जैसा था
खबर न सुबह की थी,
न शाम को ठिकाना था।
थक का स्मूल से आना,
पर खेलने भी जाना था।
वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिनका रोज नया फसाना था।
बारिश होती तो कागजों
की नाव तैराने चले जाते थे।
हवाई जहाज बनाकर
पूरे घर में उड़ते थे।
वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिनका रोज नया फसाना था।
न रोने की थी वजह,
न हँसने का बहाना था।
माँ की कहानियाँ थीं,
वो मौसम कितना सुहाना था।
वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिनका रोज नया फसाना था।

वो बचपन कितना
बेफिक्र था,
दुनिया जहान का न
होशा था।
ख्वाहिशें कम और
खुशियां ज्यादा थी,
थकान से दूर वो उम्र बड़ी ताजा थी।
वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिनका रोज नया फसाना था।
बचपन की यादें जब भी आती,
मन के बच्चे को फिर जगा जाती।
क्यों हो गए हम इतने बड़े,
इससे अच्छा तो बचपन का जमाना था।
वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिनका रोज नया फसाना था।

कशिश कुमारी,
कला स्नातक द्वितीय वर्ष

उलझन

ये उलझन जो सिर पर लिए फिरता हूँ
अब भारी-सा बोझ है इसका।
कितनी दफ़ा समेटा इसे
ये उलझा तो रहा उलझा।
गुज़रा हर गाँव, गली, शरी से
कुछ बिक जाए तो हो हल्का।
लोग कीमत में खींचातानी करते
पर बेमोल-सा मोल है इसका।
मिले कोई तो... थमा दूँ बस
पास कोई तिनका भी नहीं रखता।
इसमें क्रोध भी है
शोध भी है, है स्नेह
विरोध भी है
बस एक हल्के सहारे को तरसता।
ये उलझन जो सिर पर
लिए फिरता हूँ
अब भारी-सा बोझ है इसका।

रीतिका शर्मा, हिन्दी स्नात्कोत्तर, तृतीय सत्र

जय नाग कालवी व माता काण्डी चलाऊणी

हिमाचल प्रदेश देवी-देवताओं कीभूमि के नाम से जाना जाता है। करसोग से लगभग 24 किलोमीटर दूर काण्डी नामक स्थान पर नाग कालवी जी का एक सुंदर मंदिर स्थापित है। मालवी नाग जी को काली पुत्र के नाम से जाना जाता है। इनकी शक्तियों और जन्म की बहुत बड़ी गाथा है।

नाग कालवी एक बाल ब्रह्मचारी नाथ संप्रदाय से संबंधित एक बहुत बड़े तपस्वी हुआ करते थे। उसके बाद उनका प्रादुर्भाव नाग के रूप में हआ। इनके ठेयोग नामक स्थान में भी तीन मंदिर हैं जो कि भराणा गांव कंदरू एवं जटून में हैं। मान्यता के अनुसार भ्राणागांव का एक बुजुर्ग व्यक्ति जिसका नाम कालू था वह नाग का एक मैहरा वहां से लेकर काण्डी आया था। कहते हैं उन्होंने जैसे ही वहां से इस मैहरे को लाया उनके पीछे बहुत सारी स्थानीय लोग उन्हें रोकने लगे। लोकिन वह इसको लेकर वहां से भागे और रास्ते में सतलुज नदी पर लोगों के डर के कारण कालूराम ने सतलुज नदी में छलांग लगा दी। परन्तु लाग की शक्ति से वह दरिया में डूबने से बच गया और आगे बढ़ता गया। जैसे ही वह काण्डी में पहंुचा तो वहां नौगतु नामक खानदान के बुजुर्ग से उसका सामना हो गया। नाग ने अपनी शक्ति दिखाना शुरू कर दिया और वहां कुछ बच्चों की रोने की आवाज आने लगी। काण्डी गाँव के बुजुर्ग ने कालू से कहा अगर बच्चों की आजवाज बन्द हो जाए तो मैं आपको यहाँ स्थान दे दूंगा। नाग ने अपनी शक्ति से ये आवाजें बन्द की दी थी।

कालवी नाग जी जदुन धार भराना और काण्डी में प्रतिष्ठापित हैं। ये एक मात्र ऐसे देव हैं जिनके साथ माँ नवदुर्गा, माँ महामाया, माँ महाकाली विराजमान हैं। आज भी नवदुर्गा माता के मंदिर के सामने से कोई भी देव रथ नहीं जा सकता। काण्डी, चलाऊणी में एक साथ इन महाशक्तियों का संगम है। जो भक्त निःस्वार्थ भाव से यहां आता है तो उसकी हर मुराद पूरी होती है।

कालवी नाग जी ने करसोग में अनेकों चमत्कार किए हैं। काण्डी के समीप जाबला में एक भयानक चट्टान थी। उस विशाल चट्टान की सुबह की परछाई जाबला से चुराग और शाम की शांगरी तक छाया जाती थ। जब कालवी नाग जी काण्डी आए सबसे पहले कालवी नाग जी ने निर्मल आकाश से उस चट्टान के लिए बीच गिराई और उसे चकनाचूर कर दिया। आप आज भी इस चट्टाान के पत्थरों के अंदर लोहे के टुकड़े देख सकते हैं। भैरव इस इलाके के लिागों को बहुत कष्ट देता था। दुःखी होकर लोगों ने कालवी नाग जी से प्रार्थना की बोआ नामक स्थान पर कालवी नाग जी का घमासान भेरों के साथ हुआ। पहली पटखनी में कालवी नाग जी ने भैरव को बोआ से चलाऊणी में फेंका। दूसरी बार घरेणा और तीसरी बार हाजरा नाले में फेंका और वहां भैरव के लिए सीमा बांध ली और भैरव को वहाँ से अपने क्षेत्र में आना वर्जित कर दिया।

भैरव वहाँ से भाग कर कामाक्षा माता की शरण में गया। साथ में यह भी मान्यता है कि यदि किसी व्यक्ति की आँख की रोशनी बहुत कमजोर हो जाती है तो वह यहां पर चाँदी की धातु की आँखें चढ़ाता है वह उसकी रोशनी वापस लौट जाती है। आप यहाँ पर बस, कार या पैदल आकर माता व नाग कालवी के दर्शन कर सकते हैं। नाग कालवी व माता काण्डी चलाऊणी के मात्र नाम लेने से ही दूर हो जाती हैं सभी समस्याएँ।

महिमा ठाकुर
कला स्नातक, तृतीय वर्ष

फसल

जब विश्वास के खेतों पर
उम्मीदें बोई जाती हैं,
एक कपट-सी बारिश क्यूँ
बीज बहा ले जाती है।
मासूमीयत की जमीं भी है,
वफ़ा की नमी भी है,
कुछ बातों में सूख-सा है,
कुछ भरपूर कुछ कमी भी है।
निराई भूलों की करके भी,
संदेह की घास आ जाती है,
न सब तेरा, न सब मेरा
रियाज़त ये हम दोनों की है।
धीरज की हथेली से
ये ज़मीं सहलाई जाती है,
भूल के सब कुछ
सोहबत से
इस फ़सल उगाई
जाती है।

रीतिका शर्मा
हिन्दी स्नात्कोत्तर, तृतीय सत्र

पश्चाताप

मुस्कान चेहरे पर लेकर जैसे,
कोई गुनाह किए जा रहा हूँ मैं।
माथे पर आती चिंता की लकीरों को,
बहाने से समतल किए जा रहा हूँ मैं।
सपनों को मुट्ठी में भ्र करके,
रेत के जैसे छोड़ता जा रहा हूँ मैं।
कहता हूँ - 'गुनाहगार नहीं हूँ'।
खुद को तसल्ली दिए जा रहा हूँ मैं।
बसी इन आँखों में विचित्र छवि को
अश्कों से धुधला किए जा रहा हूँ मैं।
पश्चाताप एक जंग है क्या?
खुद में ही उत्तर खोजता जा रहा हूँ मैं।
मुस्कान चेहरे पर लेकर जैसे,
कोई गुनाह किए जा रहा हूँ मैं।

सोनिया
कला स्नातक, प्रथम वर्ष

दीवारें

खड़ी है जो दीवरें सब्र की,
अब सीलन-सी उन पर आने लगी है।
कई जमानों से गुज़री हुई एक तस्वीर,
कुछ आड़ी-टेढ़ी टंगी हुई है।
खिड़की के टूटे काँच से,
ये दर्द हवाएँ गुज़रती हैं।
बार-बार हजार करके,
वो तस्वीर सरकाया करती है।
कोनों पर आई दरारें अब
हल्की-हल्की बढ़ने लगी हैं।
खत्म हो चला वजूद है अब,
अब नींव भी डगमगाने लगी है।
कितना ज़माना गुज़रा होगा,
कदमों को अंदर आए हुए।
कितने वक्त से ठहरी हुई है
कितना वक्त हुआ है
मालिक को आए हुए।
ढहती डगमगाती हुई ये
दीवारें पीली पड़
गई हैं।
इस बंद बदबुदार
कमरे की,
एक रंगीन कहानी रही हुई है।

बनिता
कला स्नातक तृतीय वर्ष

जिंदगी

दो पल की जिंदगी है
आज बचपन, कल जवानी,
परसों बुढ़ापा, फिर खत्म कहानी है।
चलों हँसकर जिए, चलों खुलकर जिए
फिर न आने वाली यह रात सुहानी
फिर न आने वाला यह दिन सुहाना।
कल जो बीत गया सो बीत गया
क्यों करते हो आने वाले कल की चिंता
आज और अभी जिओ, दूसरा पल हो न हो।
आओं जिंदगी को गाते चलें,
कुछ बातें मन की करते चलें
रूठों को मनाते चलें।
आओ जीवन की कहानी
प्यार से लिखते चलें
कुछ बोल मीठे बालते चलें
कुछ रिश्ते नए बनाते चलें।
क्या लाए थे क्या ले जाएँगे
आओ कुछ लुटाते चलें
आओ सब के साथ चलते चलें
जिंदगी का सफ़र यूँ ही काटते चलें।

विपाशा चौहान
कला निष्णात तृतीय सत्र

पिता

पिता एक उम्मीद है एक आस है
परिवार की हिम्मत और विश्वास है।
बाहर से सख्त और अंदर से नम है
उसके दिल में दफन कई मरम हैं।
पिता संघर्ष की आंधियों से हौंसलों की दीवार है
परेशानियों से लड़ने की दो धारी तलवार है।
बचपन में खुश करने वाला बिछौना है
पिता जिम्मेदारियो से लदी गाड़ी का सारथी है।
सबको बराबर का हक दिलाा एक महारथी है
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है
इसी में तो माँ और बच्चों की पहचान है।
पिता जमीर है, पिता जागीर है
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है।
कहने को तो सब ऊपर वाला देता है
पर खुदा को ही एक रूप पिता है।
मेरा साहस, मेरी इज्जत, मेरा सम्मान
है पिता
मेरी ताकत, मेरी पूंजी, मेरी पहचान है पिता।
घर के एक पत्थर में शामिल उनका खून-पसीना
सारी घर की रौनक उनसे, सारे घर की शान हैं पिता।
मेरी इज्जत मेरी शौहरत, मेरा मान हैं पिता
मुझे हिम्मत देने वाला मेरा अभिमान है पिता।
सारे रिश्ते उनके दम से सारी बातें उनसे हैं
सारे घर के दिल की धड़कन सारे घर की जान है पिता।

तनुजा
कला निष्णात, तृतीय सत्र

भ्रष्टाचार

देखो देखो देखा अपने चारों ओर देखो,
हर जगह फैला है भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार।
राजनीति से लेकर शिक्षा के क्षेत्र में,
हर जगह फैला है भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार।
आज के इस युग में नहीं रहा ईमानदारी का काम,
जिधर भी देखोगे, उधर ही भ्रष्टाचार का नाम।
क्या करेगा एक इंसान अकेला लड़कर,
सबो मिलकर आवाज़ उठानी होगी,
तभी मिल पाएगा इस भ्रष्टाचार से आराम।

वंशिता ठाकुर
कला स्नातक द्वितीय वर्ष

दर्द

घाव गहरा था पर न दिखता था,
जख्म पुराना था पर न रिसता था।
साँसों में बेचैनी थी, नजरों में बेताबी थी,
सीने पर कोई पत्थर था, जो न घिसता था।
दर्द मेरे पास था, दुनिया दाम लगाती थी,
शायद वो मेरा हिस्सा था, इसलिए न बिता था।
बाद समें सब कहते थे, मुझसे कह सकते थे,
कितनी बार कहना चाहा पर , काई समझता न था।
दर्द के अंदर मरने से, चेहरा शून्य हो जाता था,
लोगों को हम पढ़ते थे, पर खुद में न कुछ दिखता था।
यदि मुझसे तुम पूछोगे, प्रेम में क्या पाया है,
मैं कहूँगा आधा चाँद हूँ मैं, जो पहले पूरा दिखता था।

प्रीति शर्मा, हिन्दी स्नात्कोत्तर तृतीय सत्र

गुरु

गुरु हमारे ज्ञान के दाता,
पढ़ना-लिखना इन्हों से आता।
माता-पिता ने चलना सिखाया,
गुरु ने हमको राह दिखाया।
कलम की ताकत का एहसास दिलाया,
डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर बनाया।
सदैव करें हम इनका सम्मान,
रहे अधूरा बिन गुरु ज्ञान।
हमारे ज्ञान को गुरु ने बढ़ाया,
सच्चाई की राह हमें दिखया।
करे सदा गुरु का सम्मान,
तभी बढ़ेगा आपका-हमारा ज्ञान।

तोयाशी शर्मा,
हिन्दी स्नात्कोत्तर, तृतीय सत्र

कृष्णा

सांवला सा, मोर मुकुटधारी वो,
राधा का प्रिय, मेरा घनश्याम वो।
माखन चोर, गाय का रखवाला वोत्र
गोपियों संग रास रचाता वो।
नंदलाल, ब्रज का ग्वाला वोत्र
यशोधानंदन, ब्रज वासियों का लाल वो।
ऋषि संदीपन को शिष्य, सुदामा के मित्र वो,
रूकमणी प्रिय, 16108 रानियों के संग वो।
धर्म रक्षक, पाण्डवोंके साथ वो,
कौरवों की सभा में, द्रोपदी के साथ वो।
अर्जुन के सारथी, गीता का उपदेश देते वो,
चक्रधारी द्वारिकाधीश वो।
दुःख नाशक, सबके दुःख हरत वो,
बांके बिहारी इस कलयुग में सबके साथ वो।
खाटू श्याम, सबके प्रिय बाबा वो,
मेरे कान्हा, मेरे प्रिय सखा वो।

गायत्री शर्मा,
कला निष्णात तृतीय सत्र

गौ-माता की उपयोगिता व महत्त्व

गौ-माता की उपयोगिता की बात करें तो इसकी हर चीज बेहद उपयोगी है। गाय एक पवित्र पशु है जिसकी हर चीज हमें पवित्र कर देती है जो कि कुछ इस प्रकार है:-

1. खेती की बात करें तो गाय का गोबर हमारी खाद के रूप में काम आता है। इसके गौंत्र का प्रयोग हम स्प्रे के रूप में भी करते हैं।
2. दूध का तो हर व्यकित सेवन करता है जिसकी विभिन्न प्रकार की मिठाईयाँ तथा अन्य वस्तुएं बनती हैं।
3. पंजगव्य एक ऐसा पदार्थ है जो कि गाय से प्राप्त होने वाले पदार्थों से मिलकर बनता है जिसका प्रयोग हम पूजा-पाठ के दौरान घरों को पवित्र करने के लिए इसका छिड़काव किया जाता है।
4. जिस स्थान में हवन या कोई भी पूजा करनी हो उसकी लिपाई भी गौ-माता के गोबर से की जाती है। अर्थात कोई भी पूजा गौ-माता के बिना संभव ही नहीं है।
5. गाय से प्राप्त होने वाले गोबर से गोबर गैस प्लांट लगाकर हम घर में प्रयोग होने वाली गैस के खर्च से बच जाते हैं। दूसरा गैस बनने के बाद बचे पदार्थ को खेतों में डालने से खेतों में उर्वरक व दवाईयाँ डालने की ज्यादा आवश्यकता नहीं रहती, उसका खर्च भी बच जाता है।

तो क्या आज हमारी गौ-माता इतने कष्टों से जूझ रही है। क्यों उसको दूध न देने के बाद छोड़ दिया जाता है।

अतः मेरा मानना है कि आजकल सरकार सबको गौ-शाला बनाने के लिए पर्याप्त धनरशि दे रही है परन्तु इससे अच्छा सरकार गाय से प्राप्त होने वाली से व्यापार कर सकती है। जिससे बहुत से लोगों को रोजगार मिल जाएगा और गौ-माता भी कष्टों से बच जाएगी।

इसके लिए स रकार को कुछ योजनाएं बनाने की आवश्यकता है। क्योंकि ईश्वर ने गाय को बनाया ही ऐसा है कि मरने के बाद इनसे निकलने वाली चमड़ी का प्रयोग जूते इत्यादि बनाने के लिए किया जाता है। अतः गाय एक पवित्र पशु है जिसकी पैदा होने से लेकर मरने तक हर चीज बेहद उपयोगी है।

मिनाक्षी, कला स्नातक तृतीय वर्ष

प्रकृति की दहाड़

अटल पहाड़ अटल न रहे
शांत न रहे जलधारा
क्या धौलाधार क्यार शिवालिक
खतरे में हिमालय सारा
हर जगह बरस रहे बादल,
गरज रही नदियाँ
ये जर्गन, काल का शंखनाद है
सुनो इसे ध्यान से
ये प्रकृति की दहाड़ है,
हर किसी से हुई गलती हर कोई सहेगा
किसे पता, कौन निछड़ेगा, कौन रहेगा,
स्वार्थी मन में, परखने मनुष्यता,
धरा पर दरारें छाई हैं
सोचे, कहाँ, कब कैसे हुई गलती
जो प्रकृति हिसाब करने आई है
कृत्य मनुष्य का, लालच मनुष्य का
जो, प्रकृति से खिलवाड़ हुआ
पर शायद अब प्रकृति की बारी है
आधुनिकता के पुतले माटी में स माए हैं
जब, जब पहाड़, नदी से मिलने आए हैं
कौन जाने क्या होगा
ये तो बस शुरूआत है
आओ एक साथ मिले
ये पहाड़ और पहाड़ की बात है
ये इस बदलाव के रण में, प्रकृति की दहाड़ है।

दिव्या शर्मा, हिन्दी स्नात्कोत्तर तृतीय सत्र

मुझे याद मत रखना, परन्तु मेरी बातों को हमेशा याद रखना

अभी कुछ ही समय हुआ था कि अचानक अपने आचार्य प्रो0 डालिम कुमार जी (सहायक आचार्य हिन्दी विभाग) तबादले की खबर सुनकर मन मायूस सा हो गया। ऐसा लगा मानो एक बड़ी रिक्ति हो गई। बड़े समय से मिलने की मन र रहा था। तभी एकाएक 2 मार्च, 2024, मंगलवार को तप्त धूप की दोपहरी में दोपहर के करीब 12 बजे महाविद्यालय परिसर में देखा। सभी प्राचार्य व प्राचार्य अन्य दिनों की तरह बैठे थे परन्तु उस क्षण चेहरे के भाव कुछ अलग ही थे। सभी एक व्यक्ति से बड़ी गहरी व ठहाकेदार हंसते हुए किस्सों की बातें कर रहे थे।

जिस व्यक्ति से इतने आचार्य व आचार्य बात रह रहे थे वो थे हाल ही में हमारे महाविद्यालय से स्थानान्तरित हुए हिन्दी विषय के सहायक आचार्य प्रो0 डालिम कुमार। सभी को बात करते देखकर मुझे कला स्नातक प्रथम वर्ष की हिन्दी की कक्षा (मध्यकालीन हिंदी कविता) की यादें सामने दिखने लगी। वह कक्षा में आना, पढ़ाते समय बीच-बीच में व्यंग्यात्मक व शायराना अंदाज में अपनी बात को कहना बड़ा प्रिय लगता है।

इन स्मृतियों को याद करके गुरुदेव (प्रो0 डालिम) से मिलने को मन आतुर हो गया। बहुत क्षणों की प्रतीक्षा के पश्चात् जब श्रीमान वापसी के लिए तैयार थे तो मैंने उन्हें अपने महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 जगजीत सिंह पटियाल जी के कक्ष में बातें करते हुए देखा। उनकी बातचीत को देखकर स्पष्ट लगर रहा था कि क्यों ये समय थम जाता और कुद समय और साथ करर्य करते। उस समय ऐसा लग रहा था कि दो यायावर अपने यात्रा वृतान्त कर रहे थे और एक-दूसरे को दिलासा रूप अनुभव प्रदान कर रहे थे।

अन्त में जाते समय उनका गले मिलना स्पष्ट बता रहा था कि हो सकता है कि यह आखिरी मिलन हो। पत्पश्चात् जब गुरुदेव महाविद्यालय परिसर छोड़कर महाविद्यालय के प्रवेश द्वार पर खड़े चौकीदार व प्रो0 प्रेम प्रकाश जी (सहायक आचार्य अर्थशास्त्र) से कुछ बातें कर रहे थे तो मैं और दिव्या दीदी जल्दी से भागकर उनसे मिलने चले गए। जब उन्होंने हमारी ओर देखा तो उनकी नम आँखों ने अनके अन्दर के भावों को स्पष्ट बता दिया।

जब मैंने उनसे बात की तो मुझे पता नहीं चला कि मैंने उनसे तबीयत संबंधी प्रश्न क्यों पूछा? उन्होंने जवाब में कहा - फिट तो हूँ। लेकिन उन्होंने मेरे मन के भावों को शायद समझ लिया और गले लगाया। उसके बाद नके लिए गाड़ी आ गई थी तो मेरा मन हुआ कि एक छायाचित्र स्मृति हेतु खींच लिया जाए। छायाचित्र खींचने के बाद उन्होंने एक बात कही तो मेरे मन में घर कर गई और उसी ने मुझे यह लेख लिखने के लिए वाधित किया:

"मुझे याद मत रखना, परन्तु मेरी बातों को हमेशा याद रखना।"

स्वर भावुक था तो मैंने भी कह दिया इतनी आसानी से भी नहीं भूलेंगे।

विदा लेते हुए कहा - जो वाक्य उनका सबसे प्रिय है:-

स्वथ रहो, खुश रहो

मस्त रहो, प्रसन्न रहो।

तो मैंने भी अचानक कह दिया 'मिलते हैं कुछ ही क्षणों में एक नए अंदाज के साथ', ऐसा क्यों कहा अभी तक सोच नहीं पा रहा हूँ।

उमेश शर्मा, कला स्नातक द्वितीय वर्ष

SCIENCE SECTION

Dr. Lomeshwar
Staff Editor

Ms. Gargi Gupta
Student Editor

Index of Articles

Sr. No	Title	Name of student	Class	Page
1	Navigating Allergies: Understanding, Symptoms, and Management	Yamini Sharma	B.Sc. III	35
2	Unveiling Ayurveda: A Time-Honored Path to Holistic Well-being	Anjali	B.Sc. III	36
3	Amyotrophic Lateral Sclerosis (ALS)	Vanadana	B.Sc. III	37
4	BIOFUELS: A NEW GENERATION FUEL TOWARDS CLEAN FUTURE	Gargi Gupta	B.Sc. III	38
5	Nanotechnology Unveiled: A Glimpse into the Future of Medicine	Rajani Mehta	B.Sc. III	39
6	HOW AI IS MAKING IT EASY TO DIAGNOSE DISEASES	Neha Verma	B.Sc. II	40
7	Unlocking Nature's Pharmacy: A Journey Through Some Important Medicinal Plants	Nikita Sharma	B.Sc. II	41
8	Black holes Cosmic Vacuum Cleaner	Renuka	B.Sc. II	42
9	Empowering Hope: The Evolving Landscape of Medical Oncology	Veena Sharma	B.Sc. II	43
10	CHORELLA ALGAE IN SPACE	Aarti	B.Sc. II	44

Navigating Allergies: Understanding Symptoms, and Management

Allergies, a common yet intricate facet of our immune system, materialize when the body reacts to substances in the environment that are typically harmless to most individuals. This overzealous response triggers an array of symptoms, affecting various parts of the body.

Symptoms of Allergies:

Allergic reactions manifest in inflammation and irritation across diverse bodily regions, including the gut, skin, sinuses, airways, eyes, or nasal passages. The symptoms vary depending on the allergen, but common manifestations include:

Dust and Pollen Allergies:

- Blocked or congested nose
- Runny nose
- Itchy eyes and nose
- Coughing

Food Allergies:

- Vomiting
- Swollen tongue
- Tingling in the mouth
- Shortness of breath
- Stomach cramps

Insect Stings:

- Itchy skin
- Wheezing
- Dizziness
- Chest tightness

Causes of Allergies:

When an allergic reaction occurs, allergens bind to antibodies known as immunoglobulin E (IgE), produced by the body. These antibodies, designed to combat foreign substances, initiate a cascade of events. Histamine, a key player in this process, tightens muscles in the airways and blood vessel walls, instructing the nasal lining to produce more mucus.

Treatment:

Effectively managing allergies involves a multifaceted approach:

Avoidance:

The primary strategy is steering clear of allergens whenever possible. This may entail lifestyle adjustments, such as creating allergen-free environments at home or being cautious about dietary choices.

Medication:

Antihistamines play a pivotal role in allergy management by blocking histamines, the triggers of allergic swelling. These medications can alleviate sneezing, itching, and a runny nose, providing relief from common symptoms.

Understanding the nuances of allergies empowers individuals to take proactive measures in minimizing their impact on daily life. While complete avoidance may not always be feasible, judicious use of medications and adopting allergen-conscious practices contribute to a better quality of life for those navigating the complexities of allergic reactions. As research advances, ongoing efforts in allergy management aim to enhance our understanding and refine strategies for improved outcomes in individuals dealing with allergies.

Yamini Sharma
B.Sc. III

Unveiling Ayurveda: A Time-Honored Path to Holistic Well-being

Originating in India over 3000 years ago, Ayurveda, the natural system of medicine, weaves a profound tapestry between life and science. The term itself, Ayurveda, stems from the Sanskrit words "ayur" meaning life and "veda" meaning science or knowledge. Essentially, Ayurveda stands as the knowledge of life, a testament to the ancient Indian approach to healthcare that delves into the essence of human existence and its interplay with illness.

Acknowledged as the "Father of Ayurveda," Charaka left an indelible mark through his seminal work, the "**Charaka Samhita."** In this ancient tome, he cataloged approximately 340 plant types and 200 animal types, unveiling a rich reservoir of natural remedies.

Ayurveda operates on a holistic philosophy, treating the individual as a whole and embracing personalized medicine. The system encompasses Rasayana, a traditional medicine approach, exhibiting remarkable efficacy in addressing chronic ailments like cancer, diabetes, asthma, and arthritis—conditions often deemed untreatable by modern medicine.

Central to Ayurveda are the four foundational elements of the human body—dosha, dhatu, mala, and agni. These cornerstones, known as "Mool Siddhant" or the basic fundamentals of Ayurvedic treatment, play a pivotal role in maintaining optimal health.

In a harmonious synergy with alternative medicine, Ayurveda finds practical applicability for everyday well-being. Remarkably, the World Health Organization notes that 70-80% of the global population relies on nonconventional medicines, predominantly sourced from herbal origins. Countries like India and Nepal have taken significant strides by implementing national policies on Ayurveda, with Rishikesh in Uttarakhand emerging as a premier destination for Ayurvedic treatments.

The Union Ministry of Ayush marked the inception of 'National Ayurveda Day' on October 28, 2016, coinciding with Dhanvantari Jayanti, celebrating the God of Ayurvedic Medicine. This year, the celebration is slated for November 10, 2023, further underscoring Ayurveda's enduring significance.

While Ayurveda is revered for its efficacy, it is essential to acknowledge that its richness comes at a cost. The use of potent herbs, though therapeutic, renders Ayurveda relatively expensive. Caution is warranted, as some Ayurvedic products may carry the risk of contamination with heavy metals like lead and mercury.

In conclusion, Ayurveda emerges as a beacon of hope for the new generation, weaving ancient wisdom into the fabric of modern wellness, offering a holistic approach to health that resonates across cultures and time.

Anjali

B.Sc. III

Amyotrophic Lateral Sclerosis (ALS)

Lou Gehrig's illness, or amyotrophic lateral sclerosis (ALS), is a powerful foe in the field of neurodegenerative diseases. This rapidly developing illness is responsible for a considerable proportion of adult fatalities worldwide, similar to the occurrence of its more well-known cousin, multiple sclerosis. ALS is a life-threatening illness that usually first appears in people between the ages of 50 and 60. It progresses relentlessly over a period of three to five years.

Although most occurrences are incidental, a small percentage might be linked to familial inheritance, highlighting the intricate genetic makeup of the illness. Guam and the Kii Peninsula in Japan are two notable geographical oddities where incidence rates are reported to be much higher than expected globally. This has prompted interdisciplinary study involving the fields of epidemiology, neurovirology, neurochemistry, neuropathology, and immunology. After physician Jean-Martin Charcot discovered ALS in 1869, the disease became well-known in the US after legendary baseball player Lou Gehrig passed away from it in 1939. Since ALS is frequently referred to as Charcot's illness, Charcot's legacy lives on.

There are two types of ALS; the sporadic variety accounts for 90–95% of cases and is not clearly linked to any one gene. Muscle weakness, cramps, dysphagia (difficulty swallowing), and dysphonia (limited speaking) due to anatomical abnormalities in the mouth and tongue are all terrible signs of ALS.

Even with advances in medical knowledge, diagnosing ALS remains difficult and mostly depends on clinical assessment. Unfortunately, Riluzole, an FDA-approved medication, prolongs some patients' survival by three months, but there is still no cure for ALS.

According to recent research, ALS is a multisystem neurodegenerative disease that affects both the brain and brainstem. This highlights the disorder's complex character. ALS is characterized by the degradation of both upper and lower motor neurons, and it can be inherited in one of three ways: autosomal dominant, autosomal recessive, or X-linked.

Scholars are working nonstop to identify the complex genetic and environmental causes of ALS in an effort to find a treatment. Every breakthrough in the fight against this powerful foe by the medical community advances our knowledge of, ability to treat, and ultimately victory over amyotrophic lateral sclerosis.

Vandna
B.Sc. III

BIOFUELS: A NEW GENERATION FUEL TOWARDS CLEAN FUTURE

What are Biofuels?

Any hydrocarbon fuel that is produced from an organic matter (living or once living) in a short period of time is considered a 'biofuel'. They can be used to power vehicles, heat homes and generate electricity.

Biofuels can be solid (wood, dried plants), liquid (bioethanol), or gaseous (biogas).

What are the Pros of Biofuels?

RENEWABLE: Biofuels can be produced by growing biomass and thus are renewable.

ENERGY SECUIRUTY: Biofuels will help reduce dependence on foreign oil, which will also help in reducing import bills.

CLEANER ENERGY: They limit less greenhouse gases than fossil fuels, making them a cleaner alternative.

INCREASE IN FARMER'S INCOME: Biofuels contribute to additional income of farmers and have potential to contribute to the goal of doubling famer's income.

ABAUNDANT AVAILABILITY OF BIOFUELS: Biofuels can be produced from a variety of sources, including crops, waste and algae.

What is the Global Biofuel Alliance?

GBA was recently launched by world leaders to expedite the global uptake of biofuels, under "India's G20 Presidency". The alliance brings together major biofuel producers and consumers such as US, Brazil, and India.

19 countries and 12 international organizations have already agreed to join and support the GBA. The GBA aims to strengthen global biofuels trade for a greener sustainable future.

What are the Recent Steps Taken For Biofuels?

Pradhan Mantri Ji-Van Yojana, 2019: Its objective is to create an ecosystem for setting up commercial projects.

Increased Blending Mandates: The Indian govt. has raised blending mandates for ethanol in petrol and biodiesels in diesel, aiming to reduce fossil fuel dependency.

Global Collaborations: International alliances like "Global Bioenergy Partnership (GBEP)" and partnerships among countries promote knowledge sharing and best practices in biofuel production.

Sustainability Criteria: Efforts towards establishing global sustainability criteria for biofuels production technologies and knowledge to faster global development and adoption.

GOBAR, 2018: It focuses on managing and converting cattle dung and solid waste in farms to useful compost, biogas and bio-CNG.

CONCLUSION:

Biofuels stand at a forefront of our journey towards a more sustainable and eco-friendly future. With continual advancements in technology, steadfast commitment to sustainability, supportive policies and global collaboration, biofuels offer a promising solution to reduce carbon emissions, enhance energy security and pave the way for a cleaner planet. As we navigate the complexities of our energy landscape, investing in biofuels represents not just a viable alternative but a crucial step towards a more resilient and greener world for generations to come.

Gargi Gupta
B.Sc. III

Nanotechnology Unveiled: A Glimpse into the Future of Medicine

In the ever-evolving landscape of science and technology, nanotechnology emerges as a game-changer, poised to revolutionize the field of medicine. The applications of nanotechnology hold immense promise, particularly in pharmaceuticals, where drugs containing nanosized active ingredients are set to transform treatment modalities.

At the heart of nanotechnology lies the manipulation of particles at the nanoscale, a dimension defined by the National Nanotechnology Initiative (NNI) as particles having about 100 nanometers or less. A nanometer, a billionth of a meter, exemplifies the infinitesimally small scale at which this groundbreaking science operates.

The advantages of working at this minuscule scale are profound. Nanoparticles exhibit a significantly increased ratio of surface atoms to total material, endowing them with expansive surface areas. This characteristic brings about notable changes in both physical and biological properties. Among the benefits are improved bioavailability, reduced toxicity, sustained and controlled release, targeted drug delivery, and enhanced diagnostic precision.

However, as with any scientific advancement, there are concerns. Despite the plethora of advantages, certain pharmaceutical applications of nanotechnology face challenges. Nanoparticles, with their large surface area, can exhibit rapid reactivity, leading to potential issues such as the aggregation of silver nanoparticles. Carbon nanotubes, while promising, face hurdles like quick scavenging by the Reticulo Endothelial System (RES), resulting in shortened biological half-life and high immunogenicity.

In our daily lives, we witness the impact of nanotechnology through products like sunscreens containing nanoparticles of zinc oxide and titanium dioxide. These formulations, once applied, provide transparency on the skin, offering a more aesthetically pleasing experience. Yet, studies suggest caution, revealing increased reactive free radical levels with nanoparticle exposure, raising concerns about potential cellular damage.

The journey of nanotechnology in medicine is still in its nascent stage, with both remarkable potential and challenges lying ahead. As researchers delve deeper into harnessing the power of the nanoscale, the future holds promises of more effective drug delivery systems, innovative diagnostic tools, and groundbreaking treatments that could redefine the landscape of healthcare. The delicate balance between potential benefits and risks requires careful navigation as we step into this microscopic realm of possibilities.

Rajani Mehta
B.Sc. III

HOW AI IS MAKING IT EASY TO DIAGNOSE DISEASES

Artificial Intelligence (AI) is rapidly transforming the landscape of medical diagnosis, offering novel solutions to longstanding challenges. With its ability to accelerate processes and sometimes even outperform clinicians in various tasks, AI is increasingly becoming an integral part of daily patient care routines.

In medicine, particularly in the diagnosis of diseases, AI is witnessing exponential growth. Traditional diagnostic methods often involve manual and time-consuming processes, such as interpreting patient scans, which can be skill-intensive and prone to human error. Moreover, the shortage of specialized healthcare professionals, like radiologists, exacerbates these challenges. However, AI presents a promising solution by supporting clinical decision-making and streamlining care delivery across diverse healthcare settings. By leveraging AI, healthcare providers can achieve more consistent and efficient patient care while freeing up valuable time for other essential tasks.

The National Institute for Health and Care Research (NIHR) plays a crucial role in advancing AI innovation in healthcare, from initial conceptualization to adoption within the National Health Service (NHS). Through funding and support, NIHR facilitates the development, prototyping, and real-world testing of AI technologies in health and social care settings.

Researchers at the Institute of Cancer Research in London, backed by NIHR funding, have developed a groundbreaking prototype test capable of predicting effective drug combinations for cancer patients within a remarkably short timeframe of 24-48 hours. By harnessing AI to analyze extensive data from tumor samples, this innovative approach enhances the accuracy of predicting patient responses to drugs, surpassing current methods. The process involves two stages: initially predicting cellular responses to individual cancer drugs, focusing on specific genetic markers, followed by analyzing combinations of two drugs. Such advancements hold immense promise for personalized cancer treatment strategies.

Similarly, at Moorfields Eye Hospital in London, researchers have pioneered an AI model for predicting the development of wet age-related macular degeneration (wet-AMD) with unparalleled accuracy compared to clinicians. This condition, which can lead to rapid and severe vision loss, demands early diagnosis and intervention for optimal outcomes. By relying solely on eye scans, the AI model outperformed predictions made by healthcare professionals, highlighting its potential to expedite diagnosis and treatment initiation, ultimately enhancing patient outcomes.

Dr. Jenna Tugwell Allsup, a radiographer and researcher at Betsi Cadwaladr University Health Board in North Wales, focuses on AI-driven research initiatives aimed at improving diagnostic processes. Notably, her work includes the MIDItrial, which investigates an AI tool's ability to identify abnormalities on MRI head scans. By training the AI tool on a diverse dataset comprising patient and healthy volunteer scans, Dr. Allsup aims to expedite abnormality detection, enabling timely assessment by clinicians. Furthermore, her research endeavors extend to studying the potential of AI algorithms in reducing the time to diagnose lung cancer by retrospectively analyzing chest X-rays of known lung cancer patients.

In essence, the ability of AI technologies to analyze vast datasets and scans rapidly holds immense potential in revolutionizing medical diagnosis. By leveraging AI's capabilities to interpret patient scans and assist in diagnosis, healthcare professionals can enhance accuracy, expedite treatment decisions, and ultimately improve patient outcomes. The ongoing collaboration between researchers, healthcare providers, and funding bodies underscores a collective commitment to harnessing AI's transformative potential in healthcare delivery.

Neha Verma
B.Sc. II

Unlocking Nature's Pharmacy: A Journey Through Some Important Medicinal Plants

Nature has long been the source of remedies for various ailments, and among its treasures lie several medicinal plants that have been revered for their healing properties for centuries. Let's take a closer look at some of these botanical wonders:

1. Tulsi (*Ocimum tenuiflorum*): Revered as the "Mother Medicine of Nature" and "Queen of Herbs," Tulsi is an aromatic shrub belonging to the Lamiaceae family. With its kapha balancing property, it aids in reducing asthmatic symptoms, strengthens the stomach, and treats respiratory ailments like coughs and colds. Additionally, it serves as an anti-stress agent, purifies the blood, and offers benefits in managing diabetes.

2. Mint (*Mentha*): Mint, or Pudina, has been used in folk medicine to induce perspiration and menstruation. It aids in relieving stomach issues such as ache, gas, and bloating, while also improving brain function and alleviating bad breath. Its leaves are celebrated for their appetizing properties.

3. Aloe Vera (*Aloe barbadensis*): Known as the "King of Herbs," Aloe Vera is an evergreen perennial succulent plant with antioxidant and antibacterial properties. It aids in detoxification, lowers blood sugar levels, and provides relief from heartburn and dental plaque. Additionally, it may assist in managing Gastroesophageal Reflux Disease (GERD).

4. Neem (*Azadirachta indica*): Aptly termed "The Village Pharmacy," Neem is renowned for its blood-purifying effects and antimicrobial, anti-inflammatory, and anticancer properties. It finds applications in treating various conditions, including skin disorders, cardiovascular disease, and liver ailments.

5. Gooseberry (*Phyllanthus emblica*): Amla is a treasure trove of antioxidants and exerts an antithrombotic effect. It enhances metabolism, boosts immunity, and aids in the treatment of diarrhea, jaundice, and inflammation.

6. Water Hyssop (*Bacopa monnieri*): Brahmi is celebrated for its ability to enhance brain function, reduce stress, and treat conditions like insomnia, epilepsy, and Alzheimer's disease. It may also possess analgesic and antidepressant properties, along with the ability to lower blood pressure and boost immunity.

7. Periwinkle (*Catharanthus roseus*): Though commonly cultivated for ornamental purposes, Sadabahar offers numerous medicinal benefits. It aids in lowering blood sugar levels, provides relief from respiratory ailments, and may help alleviate menstrual cramps and heavy menstruation. Additionally, it exhibits anti-tumor and astringent properties.

These medicinal plants serve as a testament to the rich bounty of nature, offering a plethora of benefits for health and well-being. Incorporating them into our lives can pave the way for a healthier and more sustainable future.

Nikita Sharma
B.Sc. II

Black holes Cosmic Vacuum Cleaner?

INTRODUCTION:

Black holes are regions in space where gravity is incredibly strong because matter has been squeezed into a tiny space. They form from the remnants of massive stars collapsing under their own gravity, creating a point of infinite density called a singularity. Black holes have an event horizon, a boundary beyond which nothing, not even light, can escape their gravitational pull.

Myths:

There are several myths surrounding black holes, like the idea that they act as cosmic vacuum cleaners or that everything that gets close to them gets immediately sucked in. In reality, only objects within a certain distance, the event horizon, can't escape.

Types:

There are three main types: stellar black holes, formed from the collapse of massive stars; supermassive black holes, found at the centers of most galaxies and can be millions to billions of times more massive than the Sun; and intermediate black holes, whose origins are still being studied.

Their gravitational pull is incredibly strong near the event horizon, the boundary surrounding the black hole. This pull can stretch objects through a process called spaghettification. Despite their intense gravity, black holes are not cosmic vacuum cleaners; they only pull in matter that comes close enough to their event horizon.

Facts:

Interesting facts include the concept of spaghettification, where the immense tidal forces near a black hole can stretch an object into long, thin strands. Also, black holes can "evaporate" over time due to Hawking radiation, a process proposed by Stephen Hawking.

These mysterious concepts always attract me. Not only me but millions of students. The journey into the heart of black holes beckons us to unravel more about the universe's enigmas. Are you ready to embark on this cosmic quest?"

Renuka
B.Sc. II

Empowering Hope: The Evolving Landscape of Medical Oncology

In the realm of healthcare, few battles are as daunting and relentless as the one against cancer. It's a journey fraught with uncertainty, fear, and pain, where every day brings new challenges and triumphs. Yet, amidst the darkness, there shines a beacon of hope – medical oncology.

On December 23, 1971, US President Richard Nixon ignited a revolution with the National Cancer Act, declaring a resolute "WAR AGAINST CANCER." This monumental act propelled a wave of research and development, ushering in an era of innovation and progress in cancer treatment. At its core, cancer is a disease where cells rebel, proliferating uncontrollably and spreading havoc throughout the body. Medical oncology emerges as a stalwart defender, specializing in the diagnosis and treatment of cancer using a myriad of therapies, from traditional chemotherapy to cutting-edge immunotherapy.

In the intricate tapestry of cancer care, medical oncology stands as a cornerstone, embracing a multidisciplinary approach. A diverse team of healthcare professionals, including medical oncologists, radiation oncologists, surgeons, and nurses, collaborate tirelessly to provide comprehensive care tailored to each patient's unique needs.

Chemotherapy, targeted therapy, immunotherapy, and radiation therapy stand as pillars in the arsenal against cancer, offering a spectrum of treatment options. Among these, immunotherapy emerges as a beacon of hope, harnessing the body's immune system to combat cancer cells with unprecedented precision.

Enter CAR-T cell therapy, a revolutionary concept leveraging the immune system's formidable prowess to target and eliminate cancer. Scientists, armed with artificial intelligence, DNA sequencing, and precision oncology, are pioneering groundbreaking advancements, reshaping the landscape of cancer treatment.

Yet, amidst the flurry of scientific breakthroughs, the heart of medical oncology remains deeply human. It's a journey marked not only by medical interventions but by compassion, empathy, and unwavering support. Patients grappling with the burdens of cancer find solace in the hands of dedicated professionals, offering healing for both body and soul.

In the mosaic of cancer care, personalized medicine takes center stage, tailoring treatment strategies to the individual intricacies of each patient's condition. Medical oncologists, as stewards of this personalized approach, navigate the complexities of cancer with precision and empathy, offering a ray of hope amidst the darkness. As we stand at the precipice of a new dawn in cancer care, the role of medical oncology grows ever more vital. By fostering collaboration, embracing innovation, and championing personalized medicine, medical oncology continues to redefine the boundaries of possibility in cancer treatment.

In conclusion, medical oncology embodies the essence of hope in the face of adversity. Through its relentless pursuit of progress and unwavering commitment to compassionate care, it offers a lifeline to those navigating the treacherous waters of cancer. Together, as a unified force, we can harness the power of medical oncology to illuminate the path towards a future where cancer is no longer a formidable foe, but a conquerable challenge.

Veena Sharma
B.Sc. II

CHORELLA ALGAE IN SPAC

Chlorella algae has been studied for its potential use in space exploration and colonization. Its ability to photosynthesize and produce oxygen makes it a candidate for oxygen generation and food production in closed-loop life support systems on spacecraft or space habitats. Additionally, its high nutrient content makes it a potential source of sustenance for astronauts during long-duration missions. Several experiments have been conducted to test the growth of Chlorella algae in microgravity conditions aboard spacecraft and space stations. These studies aim to understand how microgravity affects the growth, metabolism, and overall viability of Chlorella algae, with the goal of developing efficient bioregenerative life support systems for future space missions.

CHORELLA

There are different strains of Chlorella algae that have been studied for their suitability in space environments, focusing on factors such as growth rate, nutrient content, and resilience to stressors like radiation and microgravity. These strains undergo rigorous testing to ensure they can thrive in the challenging conditions of space and contribute effectively to life support systems and food production.

Chlorella algae has been explored for its potential use in space for several reasons:

Oxygen Production: Chlorella algae undergoes photosynthesis, producing oxygen as a byproduct, which can be vital for sustaining life in space habitats or during long-duration missions.

Food Source: Chlorella is rich in protein, essential fatty acids, vitamins, and minerals, making it a potential food source for astronauts on extended missions.

Carbon Dioxide Utilization: Chlorella can consume carbon dioxide, which is abundant in spacecraft environments, helping to regulate carbon dioxide levels and potentially contributing to life support systems.

Water Recycling: Chlorella can also help with water recycling by consuming nutrients from wastewater, potentially providing a sustainable way to recycle water on long-duration missions.

There are different strains of Chlorella algae that have been studied for their suitability in space environments, focusing on factors such as growth rate, nutrient content, and resilience to stressors like radiation and microgravity. These strains undergo rigorous testing to ensure they can thrive in the challenging conditions of space and contribute effectively to life support systems and food production.

The algae that live inside the Photobioreactor belong to the species Chlorella vulgaris, which is very resilient and has been the subject of extensive research on Earth. The small aquatic organisms in the reactor use the principle of photosynthesis for the production of oxygen, needing only light and some nutrient solution for this purpose. Another strength of the greenish freshwater algae is that it is a suitable form use as food. The further processing of the emerging biomass is not examined in the current experiment, but it would be possible in principle. Less food would then have to be carried or subsequently delivered on space missions, further increasing the closed nature and sustainability of the system. About 30 percent of an astronaut's food could be replaced by algae biomass, due to its high protein content.

"With the first demonstration of the hybrid approach, we are right at the forefront when it comes to the future of life-support systems. Of course, the use of these systems is interesting primarily for planetary base stations or for very long missions. But these technologies will not be available when needed if the foundations are not laid today," says Oliver Angerer, team leader for Exploration and project leader for the Photobioreactor experiment at the DLR Space Administration.

Photobioreactor forms a hybrid system with the physicochemical air reprocessing plant

The Photobioreactor is expected to help produce breathable air on the International Space Station for six months. It will be supported by the Advanced Closed-Loop System (ACLS) in this process. This physicochemical air recycling plant, which was built by Airbus in Friedrichshafen, has been on the ISS since September 2018. It was transported there by a Japanese HTV space freighter and installed in the US Destiny laboratory.

Airbus built the air recycling plant – which is about two meters tall and one meter wide – as a technology demonstrator. Nonetheless, it remains part of the ISS life-support system for the time being and generates oxygen for the astronauts. The ACLS uses part of the carbon dioxide from the cabin air in order to extract methane and water from it. The water, which is formed in this Sabatier process, is then fed back into the electrolysis process to produce oxygen. This increases the efficiency of the overall system and minimizes the need for water supplies delivered from Earth.

However, the ACLS cannot use all of the carbon dioxide from the breathing air to produce water. The algae in the Photobioreactor process some of the remaining carbon dioxide to generate oxygen, thus complementing the output of the ACLS. In this way, a hybrid system – called PBR@ACLS – emerges from the interaction of this biological system with the physiochemically-based ACLS.

As a result, the functioning of a hybrid life-support system will be demonstrated for the first time under real space conditions.

The Photobioreactor's contribution to oxygen production is nowhere near enough to cover the daily needs of a person, so the scientists are currently aiming to demonstrate the functioning of such a hybrid system. In the future, reactors could be much larger and constructed in such a way that they are, for example, part of the inner walls in a space habitat, such as on the Moon or on Mars.

Aarti Verma
B.Sc. II

COMMERCE SECTION

Ms. Vidya Devi
Staff Editor

Ms. Nirjala
Student Editor

Index

Sr. No.	Title	Written By	Class	Page
1.	Editorial	Nirjala Sharma	B.Com. III	46
2.	Artificial Intelligence	Megha	B.Com. I	47
3.	Love as in Commerce	Pallavi Thakur	B.Com. III	47
4.	Advertisement	Ankita	B.Com. I	48
5.	Accountant	Manisha	B.Com. I	48
6.	Balance Sheet of Life	Renuka	B.Com. I	48
7.	The Role of Artificial Intelligence in Enhancing Customer Experience in E-Commerce	Minakshi Thakur	B.Com. III	49
8.	The Future of E-Commerce Innovations Shaping the Industry	Nirjala Sharma	B.Com. III	50
9.	Time Management	Rohini	B.Com. I	51
10.	Herd Behaviour in Stock Market	Nirjala Sharma	B.Com. III	51
11.	E-Commerce	Manisha Bharti	B.Com. I	52
12.	Personal Finance: Masking Your Money	Tushar	B.Com. I	53
13.	The Importance of Management in Business	Neha Verma	B.Com. I	54
14.	GST and Role of GST in the Indian Economy	Deepak Sharma	B.Com. III	54

Student Editorial

Dear Readers,

It gives me immense pleasure to present the "Commerce Section" of the College Magazine "Kamaksha" for session 2024-25. I am very grateful to Teacher Editor of Commerce Section, Professor Vidya Sharma, who gave me the chance to be the Student Editor and for their Continuous support. The magazine provides platform to many students to express their creativity. It will also help the readers who want to read about Commerce and it will build up the quality thinking among readers.

Nirjala Sharma
Student Editor
B.Com. III

Artificial Intelligence

In a world full of data and information galore
Artificial Intelligence steps in the explore
With its super smart algorithms and capabilities,
It brings a whole new level of possibilities.
In our daily lives, Artificial Intelligence plays a part,
Helping us navigate with a smart GPS chart.
From voice assistants that answer our every command,
To personalized recommendations that truly understand.
It helps doctors in healthcare making diagnoses clear,
Improving treatments and patient care year after year.
Analyzing trends, patterns and insights.
It empowers us to make choices that feel right.
Remember to use AI with care,
Ethical development and implementation, we must dare.
Respecting privacy, eliminating bias and fear
Ensuring AI's benefits are far and near.
Let's embrace Artificial Intelligence and all that it brings,
Innovation, progress and amazing things.
This technology with its immense might,
Will shape our future, shining ever so bright.

Megha, B.Com. I

Love as in Commerce

Love can be called as an Intangible Asset
But it is surely a fixed one.
It is also the goodwill of the Business Firms,
Where firms are the human souls.
It changes its form as
Capital in the Balance Sheet and is the
Summation of Commitment and special care
Where the Former Being Assets and
Later as Liabilities
It should always be credited as
Net Profit in the Profit and Loss Account.
Should be debited as surplus in
The income and Expenditure Account.
The admission is restricted, once retired
Then not possible to Re-registered
If death occurs than the executors Account
Gets over flooded with love.

Pallavi Thakur, B.Com. III

Advertisement

Advertising in today's era, it has been possible to reach people about any product and give information about it only because of advertising. In earlier times, people themselves used to get from one place to another and tell people about it in order to reach the people about the ideas and principles.

Today's advertising has become so fast, it is not necessary to work too hard to tell any product. Today advertising benefits both the producer and the consumer. Due to more promotion of the products of production, their sales increase in the other hand, through advertising, the consumer easily gets information about the utility and qualities of any commodity.

In the modern era, due to the development of the means of communication, the means of advertising have also developed. Newspapers, radio, television and cinemas are powerful mediums of advertisements. That's why advertisements are very important nowadays.

"A good advertisement is one which sells the product without drawing attention to itself"

Ankita, B.Com. I

Accountant

Accountants are professionals who manage financial information and ensure its accuracy. They may work for business, government organization or public accounting firms. Accountants are responsible for preparing financial statements, tax returns and budgets. Some accountants specialize in areas such as auditing, tax management accounting or financial planning, etc. The duties of an accountant can include bookkeeping payroll financial analysis and fraud detention. The role of an accountant is crucial to the success of any organization, as they help ensure that financial information is accurate, transparent and in compliance with regulations.

"Balance sheet filled with emotions,
Profit and loss account with dedication
Vision of caution, protection and solution
Yet money is the foundation and devotion..."

Manisha, B.Com. I

Balance Sheet of Life

Birth is your opening stock
What comes to you is credit
What goes from you is debit
Your ideas are your assets
Your bad habits are your liabilities
Your happiness is your profits
Your sorrow is your loss
Your soul is your goodwill
Your heart is your fixed assets
Your character is your capital
Your knowledge is your investment
Your age is your depreciation
Thinking is your current account
Friends are your general reservoirs
Education is your patents
Experience is your premium account
Apology is your accrual
Promises are your loans
And finally...
Always remember, God is your auditor

Renuka, B.Com. I

The Role of Artificial Intelligence
in Enhancing Customer Experience in E-Commerce

Introduction:

The rapid emergence and evolution of e-commerce have greatly changed the way retailers operate. Dut to the increasing reliance on technology, e-commerce companies are now able to improve their customer experience by using AI. This report explores the various ways in which AI is being used in to enhance the customer experience in the industry.

AI in E-commerce:

Artificial Intelligence (AI) is a type of simulation that is designed to mimic the actions and tasks that humans would typically perform. Through the use of AI in e-commerce, businesses can now automate at various process and improve their customer experience.

Personalization:

One of the most effective ways that AI can help improve the customer experience in e-commerce is by providing customized products and promotion based on the customer's specific needs and performance. This can help boost sales and improve the customer loyalty of business.

Chatbots:

AI-powered chatbots are becoming increasingly popular in e-commerce as they enable businesses to provide 24/7 customer support. Chatbots can answer frequently asked questions, provide product recommendations and even complete purchase on behalf of customers. This makes the shopping experience more convenient for customers, leading to increased customer satisfaction.

Predicative Analytics:

AI-powered predictive analytics can help business anticipate customer needs and behavior, enabling them to provide better customer service.

Image – recognition:

AI-powered image recognition is becoming increasing important in e-commerce as it enables business to provide more accurate product recommendation.

Conclusion:

In conclusion, AI is playing an increasingly important role in enhancing customers experience in e-commerce.

Importance of Commerce Education

Commerce education plays a vital role in shaping the future of India's economy by producing competent professionals, who are equipped with the necessary skill and knowledge to succeed in the business world. It prepares students to participate in global trade, promotes entrepreneurship and contributes to the growth of various sectors. With the increasing demand for skilled professionals in finance, accounting, banking and management, the importance of commerce education in India has only grown over the years.

Here are some of the key points highlighting the importance of commerce education in India:

Enhances Business Acumen:

Commerce education provides students with the knowledge and skills required to understand the complexities of business and finance. It helps to develop a strong foundation in business management, financial accounting, economics, taxation and other critical areas.

Career Opportunities:

Commerce education opens up various career opportunities in the fields of finance, accounting, banking and management. It equips students with skills that are in high

demand in the job market, enabling them to secure well-paying job.

Promotes Entrepreneurship:

Commerce education also plays a significant role in promoting entrepreneurship in India. It provides students with the necessary skills and knowledge to start their business and manage them efficiently.

Contributes to the Economy:

The growth of the India economy is heavily depended on the business and commerce sectors. Commerce education plays a vital role in shaping the future of the economy by producing competent professionals, who can contribute to the growth of these sectors.

International Trade:

With the globalization of the economy, international trade has become an essential aspect of business commerce education prepares students to participate in global trade by providing them with knowledge of international laws, regulations and business practices.

Financial Literacy:

Commerce education also helps in promoting financial literacy among students it equips them with the knowledge and skills needed to manage personal financers make sound investments and plan for the future.

Minakshi Thakur, B.Com. III

The Future of E-Commerce

Trends and Innovations Shaping the Industry

When it comes to the future of commerce, there are some exciting trends and innovations shaping the industry.

1. Personalization: E-commerce platforms are leveraging data and AI to offer personalized shopping experiences. From tailored product recommend to customized marketing campaigns, it's all about making the customer feel special.
2. Mobile Commerce: With the increasing use of smartphones, mobile commerce is on the rise. Retailers are optimizing their websites and apps for mobile devices, making it easier for customers to browse and make purchase on the go.
3. Vice Commerce: Virtual assistants like Siri, Alexa and Google Assistant are changing the way we shop. Voice-activated devices allow to make purchase and place orders simply by speaking, making the shopping process more convenient.
4. Augmented Reality (AR) AR technology is transforming the online shopping experience by allowing customers to virtually try on product or visualize how they would look in their space before making a purchase.
5. Social Commerce: Social medial platforms are becoming more integrated with e-commerce, allowing users to discover and try products directly withing their favourite social apps. It's all about seamless shopping experiences.
6. Social Influencer Marketing: Influencer marketing is becoming increasingly popular in the e-commerce space. Brands are collaborating with social media influencers to promote their products and reach a wider audience.
7. Same Day Delivery: Fast and reliable delivery options are becoming a priority for e-commerce retailer. Same day or next day delivery services are being offered to need the growing demand for quick shipping.
8. Artificial Intelligence: Customer support – AI powered Chatbots and virtual assistants are being used to enhance customer support in e-commerce. They can provide instant responses to customers' queries, improving the overall shopping experience.

Nirjala Sharma, B.Com. III

Time Management

Time is one of most valuable things in life. Time is that which never waits for anyone and keeps on moving at its own pace. Time management is a way to plan and organize time so that most work can be done. Good time management enables you to work smarter rather than harder.

Time is just irreversible. So, we must think twice before wasting it. The skill of time management will make more goals oriented. Everyone has the same amount of time – 12 hours of a day. The key is to allocate appropriate time to your activities based on their importance.

Time management is an ability to utilize one's time efficiently so to be more productive and organised. It is important to time wisely. Time needs to be divided in a certain way. This will help the person to complete all his tasks.

"Time isn't the main thing,
It's the only thing".

Rohini, B.Com. I

Herd Behaviour in Stock Market

Stock market is a financial marketplace, where buyers and seller trade ownership in companies through stock (stock defines shares or equity that represent ownership in a company).

Herd behaviour or herd mentality refers to the phenomenon where individual in a group tends to follow the action or decision of the majority, often without critical analysis, resembling a flock of sheep following the movement of majority.

In stock market, when investor tends to follow the action of the larger group, influenced by emotion and instinct rather than their own independent analysis. This behaviour can head to asset bubbles and market crashes.

Greater Fool Theory: Some investor may buy stocks in herd behaviour knowing that they are overpriced based on the assumption that they can find a greater fool to buy the stock at even prices.

Market Gurus: Investor may look for leadership in the form of market gurus or other influential individual, who claims to have insider information. However, these individuals can be first to crumble when market conditions changes.

In the latest scenario during the COVID-19 Pandemic factor such as increased market volatility, Govt. responses and the presence of speculative trading have contributed to heard behaviour in Indian stock market.

This causes financial instability and great market fluctuation.

To mitigate herd mentality a investor should educate himself about the fundamentals of the stock, they are investing in and conduct through research before making investment decision.

Jitender, B.Com. III

E-Commerce

E-commerce also known as electronic commerce (EC) is the process of buying and selling goods and services via internet. In other words, e-commerce is the use of modern-day electronic communication technology in business transaction to generate income. The term eas coined by Dr. Robert Jacobson, principal consultant to the California State Assembly's Utilities and Commerce Committee. E-commerce is driven by the technological advances of the semi-conductor industry and forms the largest sector of the electronics industry. Modern electronic commerce uses email and internet for online transactions common uses of e-commerce includes buying and selling of online books, electronic gadgets, home décor etc. from websites like Amazon, Flipkart, etry etc.

E-Commerce

E-commerce also known as electronic commerce (EC) is the process of buying and selling goods and services via internet. In other words, e-commerce is the use of modern-day electronic communication technology in business transaction to generate income. The term eas coined by Dr. Robert Jacobson, principal consultant to the California State Assembly's Utilities and Commerce Committee. E-commerce is driven by the technological advances of the semi-conductor industry and forms the largest sector of the electronics industry. Modern electronic commerce uses email and internet for online transactions common uses of e-commerce includes buying and selling of online books, electronic gadgets, home décor etc. from websites like Amazon, Flipkart, etry etc.

E-commerce is used indifferent business-like digital marketing, e-auctions, online trading and selling music online. In modern times, most of the corporations are building their presence online presence online through websites and mobile phone applications.

Day to day e-commerce is getting popular and have managed to gain the trust of people. This is because using this platform people are able to buy good products at relatively low prices at the comfort of their homes. Customers are now able to buy wider range of products and save their valuable as time. In turn, it is also profitable for sellers as it helps them to cut various costs of opening a brick and motor store, hiring sales team, inventory cost etc. Apart from that, e-commerce allowed sellers to overcome geographical barriers and helped them to market products anytime and from anywhere.

E-commerce helped in creating new job opportunities due to information related services, software application related and digital products. During the COVID-19 lockdown, e-commerce has seen on unprecedented growth. More and more people are now inclined to shopping online even after the lockdown is ended. The CORONA crises has a significant impact on e-commerce growth as online sales are increasing to huge members.

Manisha Bharti, B.Com. I

Personal Finance: Masking Your Money

The term personal finance means to be aware about the money flow in the life of a person. Even knowing the fact that our society and culture also regulates money wisely and people criticize the capitalist thinking. Personal finance is an important aspect of every life whether you are a student, employee, professional or businessmen. Because value of money decreases over a period of time and having score resources a normal person will waste his whole life paying the debt on many are trapped in debt traps by money lenders.

The fundamental of a sound personal finance is to create a gadget and monitor your flow of money. List your sources of inflow of money like salary, any loan or any other income and most important to list the outflow of your money such expenses should categories into essentials and non-essential. This will give a clear picture of case flows in your life and can cut-off the non-essential expenses. Now after clearing this picture, let's understand some important principle of personal finance.

Investment and Debt Management:

Investment is an exponential factor of growth and for building wealth overtime. By creating a retirement fund or tanking advantage of employer sponsored retirement plans and explore for more investment option. And diversiting the investment by investing in stock, shares, debentures funds etc. It's advisable for students the best investment can only be himself. Debt plays an important role in our life as it provides liquidity and lumpsum amount but at a high cost of interest. Managing your debts solves the 40% of problem of finance.

Insurance and Emergency Funds:

Our lives are full of uncertainties, we can't change those but can reduce the effort by preparing emergency fund and taking insurance policies. Try to save at least three to six months living expenses in liquid. This will provide a gutter in case of unexpected expenses, job loss, medical emergencies. Ensure that you have adequate insurance coverage including health insurance, life insurance and property insurance and review your policy regularly. Its advisable to distinguish between investment and insurance.

Tax Planning and Continuous Loanings:

Tax is an important factor of economic growth but living such money in hand of other may prove a wrong decision so, planning your fax liability can help for long term. Financial literacy is an ongoing journey, nobody can fully master it changes with time staying informed about market situation, economy situation will pay off in selecting the investment plans.

Conclusion:

Mastering your money is a long process that requires discipline, commitment, efforts. By implementing those key principles one can cultivate healthy financial habits. you can take central of your financial future and work towards acting your personal goals. Remember, financial success is not about the amount of money you make but rather how effectively you manage and grow what you have today.

Tushar, B.Com. I

The Importance of Management in Business

Management is the process where a person plans, organizes, directs and controls the activities and resources of the organization or company to achieve its goal in an ever-changing environment. It is the process of supervising and controlling the business affairs of the organization.

According to Paul Hawken, Good management is the art of making problems so interesting and their solutions so contractive that everyone wants to get to work and deal with them. Almost 90% of startup business fail miserably withing the first five years of starting up of which almost 90% fail due to poor management. Management has always been a core aspect of every business. But unlike the old times, managing the organization has become a more difficult job to the increasing competition in the internal as well as the external business environment.

Good management can just throw the company out of the competition. The importance of management can never be underestimated or ignored as it's a proven fact that the success of a company entirely depends on how well it is managed. Here's why management is important for any business.

Neha Verma, B.Com. I

GST and Role of GST in the Indian Economy

GST: It stands for Goods and Service Tax. It is an indirect tax system implemented in many countries including India. Here are some key features of GST:

Simplified Tax Structure: GST replaces multiple indirect tax levied by the central and state governments with a single, unified tax structure. It simplifies the tax regime and promotes ease of doing business.

Destination Based Taxation: GST is a destination-based tax, meaning it is levied at the final point of consumption. It ensures that the tax burden falls on the end consumers rather than on the manufacturing or distribution stage.

Single Registration: Under GST business need to be register only once for both central and state governments. This eliminates the complexities of maintaining multiple registrations for different taxes.

Input Tax Credit: GST allows businesses to claim input tax credit, which means they can deduct the taxes pain on inputs from the taxes owed on final goods or services.

Transparent and Online Filling: GST facilitates online filling of tax returns and makes the entire process more transparent. It provides a robust IT infrastructure for seamless and efficient tax administration.

GST Plays a Crucial Role in the Indian Economy in Several Ways:

Boosts to Economic Growth: It leads to the integration of the Indian market by creating a unified common market for goods and services across the country.

Reduction in Tax Cascading: With the introduction of input tax credit, GST curbs the cascading effect of taxes. It allows business to claim credit for taxes pain on inputs reducing the tax burden on the production and distribution processes.

Simplified Tax Structure: GST simplifies the tax regime by replacing numerous taxes with a single tax. It reduces the compliance burden for business and promotes ease of doing business.

Elimination of Tax Barrier: It eliminates multiple state level taxes, such as entry tax, octroi and central sales tax, which used to act as barrier to the movements of goods across states.

Deepak Sharma, B.Com. III

PLANNING FORUM

Dr. Prem Prakash
Staff Editor

Ms. Veena Kumari
Student Editor

Index

Sr. No.	Composition	Written by	Page No.
1.	Editorial	Veena Kumari, B.A. III	56
2.	मोबाईल बैंकिंग	Hitesh Kumar, B.A. I	57
3.	Schemes for Promoting Natural Farming	Veena Kumari, B.A. III	58
4.	How Bad is the Impact of Pollution on the Economy?	Dikshit, B.A. I	58
5.	Need for Another Green Revolution	Diksha Verma, B.A. III	59
6.	India to be World Third Largest Economy by 2030	Varun Thakur, B.A. III	60
7.	भारत में बेरोजगारी की समस्या	Priya Sharma, B.A. III	61
8.	भारतीय अर्थव्यवस्था	Neha, B.A. III	62
9.	Navigating Challenges for Sustainable Growth in India	Yogesh Thakur, B.A. III	63
10.	The Impact of Privatization on Economic Growth of India	Isha Sharma, B.A. II	64
11.	भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था के रूप में	Bandna, B.A. III	65

Editorial

Dear Readers,

It gives me immense pleasure to present the Planning Forum of the College Magazine "Kamaksha" for session 2023-24. I am very thankful to teacher editor of Planning Forum, who gave me opportunity to be the student editor. The Planning Forum is designed to present to its readers the events, issue and trends of economics world.

As you know, India is a developing country and its economy is grading day by day. It is the one of the fastest growing economies of the world.

I would like to congratulate all those creative writers whose articles are going to be published in this magazine. It gives an opportunity to the students to express their emotions, thoughts or feelings. At last, I wish a successful and bright future to all of you.

Veena Kumari
Student Editor
Planning Forum
B.A. III

मोबाईल बैंकिंग

मोबाइल बैंकिंग बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को दी जाने वाली एक ऑनलाईन सेवा है। इस सेवा की सहायता से ग्राहक अपने मोबाईल का इस्तेमाल करके अपने बैंक खाते तक पहुंच सकते हैं और कई तरह के लेन-देन कर सकते हैं। इसकी सहायता से ग्राहक अपने खाते की पूर्ण जानकारी अपने मोबाईल में ही प्राप्त कर सकते हैं। भारत में मोबाईल बैंकिंग की शुरूआत 2008 में हुई जब भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा पहली बार मोबाईल बैंकिंग ट्रांजैक्शन के लिए नियम निर्धारित किए।

मोबाईल बैंकिंग के लाभ:

मोबाईल बैंकिंग की सहायता से ग्राहक अपने बैंक खाते से किसी अन्य बैंक खाते में केवल इंटरनेट की सहायत से कहीं से भी धनराशि स्थानांतरित कर सकते हैं। यह सुविधा ग्रहकों के लिए 24 घण्टे उपलब्ध होती है। इसकी सहायता से ग्राहकों के समय की बचत होती है। उन्हें अपने खाते की जानकारी लेने के लिए बैंक शाखा में नहीं जाना पड़ता। इससे नगदी का झंझट कम होता है जिससे चोरी जैसी घटनाएं कम होती हैं।

मोबाईल बैंकिंग की हानियाँ:

मोबाईल बैंकिंग लाभदायक होने के साथ हानिकारक भी है। इस सेवा का लाभ केवल वही ग्रहक उठा सकते हैं जिनके पास स्मार्ट फोन हैं। जिन ग्राहकों के पास स्मार्ट फोन नहीं हैं वो इसका लाभ नहीं उठा सकते। इससे ग्राहकों को नकली एस0एम0एस0 संदेश और घोटाले का खतरा है। मोबाईल बैंकिंग के नियमित उपयोग की सेवा प्रदान करने के लिए बैंक द्वारा कुछ अतिरिक्त शुल्क भी लगाया जाता है।

सावधानियाँ:

मोबाईल बैंकिंग का प्रयोग करते समय हमें कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए, जैसे - अपना बैंक संबंधी ओ0टी0पी0 अर्थात वन टाईम पासवर्ड किसी के साथ भी साझा न करें। अकाउंट में कोई अजीब या अवांछित गतिविधि होने पर तुरंत बैंक को सूचित करें। सभी खातों के लिए मजबूत पासवर्ड लगाएं।

हितेश कुमार,
कला स्नातक, प्रथम वर्ष

Schemes for Promoting Natural Farming

Himachal Pradesh practices Natural Farming under the Prakritik Kheti Khushhal Kissan (PK3) Yojna. The scheme aims to reduce the cost of cultivation and enhance farmer's income. The scheme was announced by the Chief Minister in the Budget speech of 2018-19. The scheme seeks to promote the production of food grains, vegetables and fruits without the use of synthetic chemicals, pesticides and fertilizers.

A survey done in the first year of implementation of the scheme found that Natural Farming lowered the cost of cultivation by 46% and increased profit by 22%. Another survey was conducted on the impact of this practice on the incidences of diseases in apples. The results were encouraging. Scab incidents were found to be 9.2% on leaves and 2.1% on fruit in chemical farming, such incidences are found on 14.2% of the leaves and 9.2% of fruits. The incidences of marssolina were also found to be only 12.2% in Natural Farming orchards as compared to 18.4% in the chemical ones.

The Himachal Pradesh government hops to bring 9.61 lakh farmer families under the ambit of this Yojana by the end of 2022.

The PK3 is being implemented at district level under Agriculture Technology Management Agency (ATMA) capacity building programmes of farmers are organized and focus on regular contact with the farmer for regular advisories and handholding for Natural Farming SPIU provides free of cost literature to the farmers on natural farming techniques for better understanding and long term welfare of small and marginal farmers.

Veena Kumari, B.A. III

How Bad is the Impact of Pollution on the Economy?

If you think that while sitting in an air-conditioned office, room, pollution does not affect you as much as it does on people working outside, then you are wrong. The economic impact of pollution on gross domestic product (GDP) is profound.

With the arrival of winter, the winds in North India become poisonous. Delhi and surrounding areas are covered with a blank blanket of smog. Duet to this, people are facing breathing and lung related problems. Pollution is also dangerous for economic health. Due to this, productivity decreases and health costs increases. Closing pollution vehicles and factories undoubtedly has an impact on the economy, but many global studies have revealed that pollution is becoming very costly.

A World Bank report in 2016 revealed that India last 8.5 percent of its GDP due to air pollution in 2013. This happened due to increase in welfare prices and reduction in labour. If we consider the current size of GDP at 2.6 trillion dollars, it will be around 221 billion dollars. Air pollution is the most dangerous all types of pollution and is the fourth largest cause of premature death in the world. These deaths caused to loss of $225 billion to the global economy in 2013.

According to the report by the Indian Institute of Technology. Bombay pollution in Mumbai and Delhi cost India $10.66 billion (about Rs. 70 thousand crore) in 2015, i.e. half of county's GDP.

The main impact of air pollution in India is on productivity and agricultural production. In middle income countries, 7 percent of healthcare expenditure is due to pollution. If the government takes strict action, then production will actually increase and the economy will benefit.

Dikshit, B.A. I

Need for Another Green Revolution

हरित क्रान्ति 1960 में नार्मन बोरलॉग (Norman Borlaug) द्वारा शुरू किया गया था। इन्हें विश्व में 'हरित क्रान्ति का जनक' कहा गया है। भारत में हरित क्रान्ति का नेतृत्व मुख्य रूप से एम०एस० स्वामिनाथन द्वारा किया गया। हरित क्रान्ति कीटनाश्कों के उपयोग और बेहतर प्रबंधन तकनीकों के प्रयोग से खाद्यान्नों में भारी वृद्धि हुई, जिसे हरित क्रान्ति कहा जाता है। हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न के उत्पादन मं भारी वृद्धि हुई, जिसकी शुरूआत 20वीं शताब्दी में हुई। इसी की प्रारम्भिक सफलता भारत और मौक्सिको उपमहाद्वीपों में देखी गई। वर्श 1967-68 तथा वर्श 1977-78 में हरित क्रान्ति की शुरूआत हुई थी। इसके प्रमुख प्रभाव पंजाब, हरियाणा और उत्तरप्रदेश में देखने को मिले।

हरित क्रान्ति के फलस्वरूप खाद्यान्न की कमी वाला भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बन गया। हरित क्रान्ति के प्रभाव से किसानों के जीवन स्तर में वृद्धि हुई। भारत में औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिला। रासायनों, कीटनाशकों आदि के अधिक प्रयोग होने से इनकी मांग में वृद्धि हुई, जिसने Agro-based Industries की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। देश में सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप एक साल में बहुत सी फसलें बोई जाने लगी। हरित क्रान्ति से बहु-फसलीकरण को बढ़ावा मिला।

हरित क्रान्ति के लाभ के साथ-साथ इसकी कुछ हानियाँ/दोश भी हैं। हरित क्रान्ति में कीटनाशकों और रासायनों का अधिक प्रयोग होने और बहु-फसलीकरण के कारण एक साल में कई फसलें उत्पादित की जाने लगी जिससे मिट्टी की उपजाऊ क्षमता में कमी आई और भूमि के बंजर होने का खतरा बढ़ गया। इसमें सीमित क्षेत्रों को ही शामिल किया गया और ये क्षेत्र पहले से कृशि उत्पादन में समृद्ध थे। इसमें केवल कुछ ही फसलों - धान, गेहूँ इत्यादि को ही शामिल किया गया। व्यापारिक फसलें (जूट, कपास आदि) के उत्पादन में कोई विशेश ध्यान नहीं दिया गया।

20वीं सदी की शुरूआत में तत्कालीन वायसराय जॉर्ज कर्जन द्वारा दिया गया बयान कि भारतीय अर्थव्यवस्था, विशेश रूप से कृशि मानसून का जुआ है। इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था को हरित क्रान्ति को दोबारा दोहराने की आवश्यकता है। मानसून से अधिक तापमान किसानों के लिए अनिश्चितता का बड़ा स्त्रोत बनकर उभर रहा है। इसलिए भारत की हरित क्रान्ति 2.0 की आवश्यकता है। भारत को एक और हरित क्रान्ति की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि खाद्यान्न उत्पादन की मांग लगातार बढ़ती जा रही है जिसे पूरा करने के लिए दूसरी हरित क्रान्ति की आवश्यकता है।

वर्तमान में भारत की कुल जनसंख्या 140.76 करोड़ है। इतने बड़े जनसंख्या के आकार के लिए खाद्यान्न उपलब्ध करवाना कठिन है। इसलिए हरित क्रान्ति 2.0 की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए कड़ा संकट उभर कर आ रहा है। बदलते मौसम, अत्याधिक तापमान और वर्शा में अनिश्चितता के कारण फसल में अप्रत्याशिता आ रही है। जिससे खाद्य असुरक्षा और किसान संकट पैदा हो रहा है। मिट्टी के क्षरण एवं रासायनों के अधिक प्रयोग के कारण मिट्टी की उपजाऊ क्षमता कम हो रही है। इसलिए ऐसी फसलों को विकसति करना चाहिए जिसमें कम पानी और उर्वरक की आवश्यकता है। दालें, फल, सब्जियों आदि पौश्टिक फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए। पहली हरित क्रान्ति में इनके उत्पादन में विशेश ध्यान नहीं दिया गया।

भारत में किसान पिछड़ी तकनीकों का प्रयोग कर रहे हैं। मिट्टी जाँच केन्द्र भी उनकी पहुंच से बाहर हैं जिससे कृशि उत्पादकता में कमी आ रही है। फसलों का बीमा, एवं फसलों को बिमारियों से बचाने की जानकारी भी उन्हें प्राप्त नहीं है। इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था में अन्य हरित क्रान्ति या दूसरी हरित क्रान्ति की आवश्यकता है। अतः भारत को भविश्य में भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों से पार पाने के लिए एक नए कृशि परिवर्तन की आवश्यकता है।

दीक्षा वर्मा, कला स्नातक तृतीय वर्ष

India to be World Third Largest Economy by 2030

India will become the third largest economy by 2030 and the country's GDP is likely to grow from 6.4% in 2023 to 7% in 2023, a report released by S & P Global said. India is currently the fifth largest economy in the world behind the US, China, Germany and Japan.

We see India reaching 7% in 2026-27 fiscal year. India is set to become the third largest economy by 2030 and we expect it will be the fastest growing major economy in the next three years.

According to the 'Global Credit Outlook 2024' by S & P, India is projected to be the fastest growing emerging market globally. However, the critical challenge lies in determining whether the country can successfully evolve into the next major global manufacturing hub.

The report further highlighted that's India's growth is projected to be 6.4% in the fiscal year 2023-24, a decline from the 7.2% recorded in the preceding financial year. The rating agency anticipates that the growth rate will persist at 6.4% in 2024-25 before experiencing an increase to 6.9% in the subsequent year and reaching 7% in 2026-27.

A strong logistics framework will be key in transforming India from services dominated economy into a manufacturing dominate one. The rating agency underscores the significance of India emerging as a global manufacturing hub, underscoring a substantial opportunity for the country. It stresses the importance of establishing a strong logistics framework to shift India's economic landscape from service oriented to manufacturing dominated.

To unleash the potential of the labour market, S & P recommends enhancing the skills of workers and boosting female participation in the workforce. The agency is of the opinion that success in these domains will empower India to leverage its demographic dividend. Success in these two areas will enable India to realise its demographic dividend.

In summary, India is fastest growing economy in the world. India's growth is estimated 6.4% this year. India economy is likely to grow from 6.4% in 2023 to 7% in 2026 (estimated). India is fastest growing market globally. We can say in future India can successfully evolve into the next major global manufacturing hub for the end of this decade.

Varun Thakur, B.A. III

भारत में बेरोजगारी की समस्या

बेरोजगारी आधुनिक समाज की मुख्य समस्या बन गई है। भारत में बेरोजगारी की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है, जिसे दूर करने के लिए सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता है। भारत में वर्तमान बेरोजगारी की दर सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (CMIE) के अनुसार मार्च 2023 में भारत की बेरोजगारी दर 8.11 प्रतिशत थी। भारत में शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर 7.93 प्रतिशत थी जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर 7.44 प्रतिशत थी। भारत में सबसे अधिक बेरोजगारी दर वाला राज्य हरियाणा, जिसकी बेरोजगारी दर 29.4 प्रतिशत है, राजस्थान जिसकी बेरोजगारी दर 28.3 प्रतिशत, बिहार, झारखण्ड और जम्मू कश्मीर है। भारत में केन्द्रशासित प्रदेशों में सबसे अधिक बेरोजगारी दर वाला राज्य दिल्ली है। भारत में बेरोजगारी के मुख्य तीन कारण हैं। सबसे पहला व प्रमुख कारण जनसंख्या में वृद्धि है। भारत दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला देश बन चुका है। भारत की जनसंख्या लगभग 140 करोड़ के आस-पास है। इसके उपरांत भी भारत की जनसंख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। भारत में बेरोजगारी का दूसरा मुख्य कारण है हमारी शिक्षा प्रणाली जो विद्यार्थियों को किसी प्रकार की जीविका या रोजगार तैयार करने में सक्षम नहीं है। तीसरा कारण औद्योगिक क्षेत्र का कम विकास है।

जनसंख्या में वृद्धि तो हो रही है परन्तु उसी गति से औद्योगिक उन्नति नहीं हो पा रही है। जिसके कारण बेरोजगारी में निरन्तर वृद्धि हो रही है। बेरोजगारी भारत के विकास में बाधा बन चुकी है। इसके कारण भारत की अर्थव्यवस्था का पूर्ण रूप से विकास नहीं हो पास रहा है। अन्य देशों की तुलना में भी भारत बहुत पीछे है।

परन्तु बेरोजगारी की समस्या के अंदर ही इसका समाधान निहित है। इसके लिए हमें जनसंख्या की वृद्धि को रोकने के प्रयास करने चाहिए। विकसित देशों की तरह जनसंख्या पर नियन्त्रण के लिए कानून बनाने चाहिए। ऐसी शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था होनी चाहिए जो शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात अपना रोजगार शुरू करने में सक्षम हो। औद्योगिक क्षेत्रों का विकास होना चाहिए ताकि अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्राप्त हो। पिछले दशक से बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त कदम उठाए जा रहे हैं। सरकार द्वारा कई रोजगार सम्बन्धी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसमें जनसंख्या के प्रभावपूर्ण नियंत्रण सम्बन्धी उपाय अपनाने पर भी बल दिया गया है। परन्तु इससे ज्यादा लाभ नहीं हुआ है। अतः हम सरकार से एक ऐसी नीति का निर्माण करने की आशा कर सकते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता व प्रतिभा का उपयोग करके समाजिक दायित्व का निर्वाह कुशलतापूर्वक कर सकेगा।

प्रिया शर्मा, कला स्नातक तृतीय वर्ष

भारतीय अर्थव्यवस्था

भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में बात करने से पहले भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति को जानना और समझना बहुत आवश्यक है। भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति कृशि प्रधान है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने 1950-51 में अपनी पहली पंचवर्शीय योजना शुरू की। तब से हर साल पर पंचवर्षीय योजना चलाई जा रही है, जो देश की अर्थव्यवस्था और विकास के लिए आवश्यक है। 1990 के दशक की शुरूआत में भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलने से औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई और साथ ही साथ भारत में मुद्रा स्फीति की दर भी बढ़ी। भारतीय अर्थव्यवस्था का पहला अंग ''सार्वजनिक क्षेत्र'' है। इस क्षेत्र में सभी आर्थिक संगठन शामिल हैं जो सरकार द्वारा नियंत्रित और प्रबंधित हैं। सभी सरकारी स्वामित्व वाली उत्पादन इकाईयां इसके अतंर्गत आती हैं। ये इकाईयां कल्याणकारी उद्देश्यों के उद्देश्यों से आम जनता के बीच वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और वितरण करता है। 'महात्मा गाँधी' के अनुसार - भारत की जीवन गाँव हैं। भारत में कुल आबादी का लगभग तीन-चौथाई भाग ग्रामीण क्षेत्रों में रहता था। इस क्षेत्र का मुख्य व्यवसाय कृशि है। भारतीय अर्थव्यवस्था का दूसरा भाग 'निजी क्षेत्र' है। इस क्षेत्र में सभी आर्थिक उद्यम शामिल हैं जो निजी उद्यमों द्वारा निर्धारित और प्रबंधित किए जाते हैं। ये इकाईयां लाभ के उद्देश्य से लोगों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन और वितरण करती हैं। इस क्षेत्र में रहने वाले मुख्य रूप से द्वितीयक क्षेत्र या तृतीयक क्षेत्र में लगे हुए हैं।

भारत एक कृषी आधारित अर्थव्यवस्था है। लेकिन उद्योगों, सेवा क्षेत्र, सामाजिक आर्थिक बुनियादी ढांचे के विकास पर बहुत जोर दिया है। जैसे - शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा, परिवहन, संचार आदि। उत्पादन के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था को तीन भागों में बांटा जा सकता है। प्राथमिक या कृशि क्षेत्र - इस क्षेत्र में कृशि और सहयोगी गतिविधियां शामिल हैं, जैसे - डेयरी, मछली पालन तथा पशुपालन इत्यादि। द्वितीयक या विनिर्माण क्षेत्र को औद्योगिक क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है। लघु तथा कुटीर उद्योगों में कपड़े, मोमबती, मुर्गी पालन, माचिस की डिब्बी आदि शामिल हैं। ये इकाईयां बहुत बड़ा रोजगार प्रदान करती हैं। दूसरी ओर बड़े पैमाने पर उद्योग जैसे - लोहा, इस्पात, रसायन, उर्वरक निर्माण हमारे घरेलू उत्पादन में एक बड़ी राशि का योगदान करते हैं। तृतीय क्षेत्र या सेवा क्षेत्र में सरकार द्वारा नागरिकों के कल्याण के लिए प्रदान की जाने वाली सेवाएं शामिल की जाती हैं। इसमें राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह के व्यापार शामिल हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता के बाद कई सकारात्मक बदलावों से गुजर रही है। यह अच्छी गति से बढ़ रही है। हालांकि हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्र अभी भी विकास के क्षेत्र में पिछड़े हैं परन्तु सरकार द्वारा इन क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति में सुधार किए जा रहे हैं।

नेहा, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

Navigating Challenges for Sustainable Growth in India

The Indian economy has been impacted by moderating demand and high inflation, leading to a slowdown in economic activity. Inflation, especially for energy and food reduced purchasing power and household consumption particularly in urban areas. The Indian economy in 2023 predicted to be hopeful yet challenging. The World Bank has predicted the economy grow at 6.6% in fiscal year 2024 as well. Hence, India's March to become the third largest economy by 2047 seems to be on track.

We believe India can sustain about 6.7% per year growth till the end of this decade preceding the pandemic. This will make Inda s 6.7 trillion economy and catapult it to middle income status by 2030-31.

India's growth prospects are strongly influenced by global developments such as the increased impact of energy and fertilizers from Russia. Microeconomy policies remain restrictive with a focus on anchoring inflation expectations and reducing government debt.

India lacks adequate infrastructure such as roads, railways, ports, power, water and sanitation which harms its economic development and competitiveness. According to the World Bank, India's infrastructure gap is estimated to be around $1.5 trillion. The fiscal policy prioritizes controlling debt and reducing interest payments to allocate resources for public investment and initiatives to adopt population aging.

The projected growth rates for India's real GDP indicate a slowdown to 6% in FY 2023-24, followed by a recovery to 7% in FY 2024-25. However, risks to these projections are predominantly titled to the downside challenges include potential deterioration of banks asset quality, delays in fiscal consolidation, difficulties in trade agreements and the impact of below normal monsoon season on the positive side declining geopolitical uncertainty and the conclusion of free trade agreements could boost confidence and benefit all sector.

In summary, India's economic outlook involves navigating challenges to achieve sustainable growth. Addressing poverty, gender gaps and climate change through targeted policies and investments will be crucial for India's long-term development.

Yogesh Thakur,

B.A. III

The Impact of Privatization on Economic Growth of India

Introduction: We all know economic growth is one of the most important goals for every nation in the present times. In 1960s and 1970s academician, politician and economists favoured state ownership over private ownership. This was also visible in Indian economic policies and we can see that industrial policy.

The Main Objective of Privatization are:

- To reduce the burden on Government
- To strengthen competition
- To improve public finances
- To fund infrastructure growth
- Accountability shareholders
- To reduce unnecessary interference
- More disciplined labour force

Advantages of Privatization:

State owned enterprises generally are outdone by the private enterprises competitively. When compare the letter, it shows better results in terms of projects and efficiency and productivity.
Privatization has a positive impact on the financial growth of the sector which was previously state dominated by way of decreasing the deficits and debts.

Disadvantages of privatization:

Privatization has provided the unnecessary support to the corruption and unlawful ways of accomplishments of licenses and business deals amongst the government and private bidders. Privatization results in high employee turnover and a lot of investment is required to train staff and even making the existing manpower of PSU abreast with the latest business practices.

Major Impact of Privatization:

Private concerns tend to be profit oriented and transparent in their functioning as private owners are always oriented towards making projects and get rid of sacred cows and hitches in conventional bureaucratic management.

Since the system becomes more transparent all fundamental corruptions are minimized and owners have a free reign and incentive for profit maximization so they tend to get rid of all free loaders and vices that are inherent in government functions.

Gets rid of employment inconsistencies like free loaders or over employed departments reducing the stain on resources. Lessen the government's financial and administrative load. Effectively minimizes corruption and optimizes output and function permit the private sector to contribute to economic development.

Conclusion:

In short, privatization is the process of transfer of ownership, can be of both permanent or long-term lease in nature, of a once upon a time state owned or public owned property to individuals or groups that intend to utilize it for private benefits and run the entire to generate revenues. Privatization is overriding process to enhance productivity and competitiveness as well as attracting foreign direct investment.

Isha Sharma, B.A. II

भारत एक विकासशील अर्थव्यवस्था के रूप में

भारत अंग्रेजी शासन काल से लगभग 200-300 वर्शों की अवधि के बाद 15 अगस्त 1947 को एक अल्पविकासित देश के रूप में आजाद हुआ। इसका कारण थी अंग्रेजी नीतियां। अंग्रेजी नीतियों के कारण ही भारत की अर्थव्यवस्था अल्पविकसित, गतिहीन, घिसी हुई, औपनिवेशक तथा विच्छेदित अर्थव्यवस्था बनकर रह गई। अल्पविकसित शब्द का प्रयोग हम उन राष्ट्रों के लिए करते हैं जिनकी प्रति व्यक्ति आय अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया जैसे विकसित देशों से कम हो, जैसे कि पश्चिमी यूरोपीय देश। यू0एस0एस0 की विनिमय दर के आधार पर उनकी प्रति व्यक्ति आय 63,206 डॉलर है जो कि भारत से 32.8 गुना अधिक है। विश्व विकास रिपोर्ट 2021 के अनुसार प्रति व्यक्ति GNP 1,972 डॉलर है। इसी प्रकार स्विटजरलैंड की प्रति व्यक्ति GNP भारत से 37 गुना अधिक है। प्रो0 केयरनक्रॉस के अनुसार ''अल्पविकसित देश विश्व अर्थव्यवस्था के लिए गन्दी बस्ती है'' देश के अल्पविकसित होने के कई कारण हैं, जैसे पर्याप्त मात्रा में पूंजी निर्माण का सृजन न कर पाना, जनसंख्या का भारी भार, कृषी तथा औद्योगिक दोनों क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति उत्पादन कम, प्राकृतिक संसाधनों का सही से उपयोग न कर पाना, बड़े पैमाने पर छिपी बेरोजगारी, कृशि की उत्पादकता इत्यादि।

आज भारत की बढ़ती जीडीपी आकार 3,750 अरब डॉलर होना है और भारत की प्रति व्यक्ति आय 2,600 डॉलर है। बढ़ता मध्यम वर्ग, लेबर फोर्स भारतीय अर्थव्यवस्था की ताकत है। भारत मुख्य रूप से घरेलु मांग संचालित अर्थव्यवस्था है जिसमें उपभोग और निवेश का आर्थिक गतिविधि में 70 प्रतिशत योगदान है। कोविड-19 महामारी के झटके से उभरने के लिए अर्थव्यवस्था में कई विकास तथा निवेश किए गए जिससे भारत की अर्थव्यवस्था में तेजी आ सके। आज के समय में भारत की अर्थव्यवस्था में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि आई है, वहीं 2023 और 2024 में सेवा नियति में 16489 बिलियन अमेरिकन डॉलर तथा 2023-24 (अप्रैल - सितम्बर) में भारत की कुल निर्यात सेवा और माल में 376.29 बिलियन अमेरिकन डॉलर का अनुमान लगाया जा रहा है।

जिस प्रकार भारत की अर्थव्यवस्था में स्वतन्त्रता के पश्चात उल्लेखनीय वृद्धि हुई है यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत 10-15 वर्षों में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अब भारत में 'लोअर मिडल इनकम' वाले देशों में शामिल किया गया है क्योंकि अभी भी भारत की विकास की गति धीमी है। विकासशील देशों के रूप में भारत की अर्थव्यवस्था आज के समय में अन्य देशों से आगे है।

वन्दना, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

संस्कृत अनुभाग

जय कुमार
आचार्य सम्पादक

मनीष कुमार
छात्र सम्पादक

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विषय	लेखक का नाम	कक्षा	पृष्ठ
1.	सम्पादकीयम्	मनीष कुमार छात्र संपादक	कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)	67
2.	श्री गीताज्ञानम्	मनीष कुमार	कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)	68
3.	चतुरः अध्यापकः	लता	कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)	69
4.	मम भाषा संस्कृत भाषा	मनीष कुमार	कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)	69
5.	आधुनिकता	उमेश कपूर	कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)	70
6.	वानरः च खगः कथा	दिव्या शर्मा	कला स्नातकोत्तर, द्वितीय सत्र (हिन्दी)	70
7.	प्रहेलिका	मनीष कुमार	कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)	70
8.	चित्रग्रीव - हिरण्यक कथा	मुस्कान शर्मा	कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)	71

सम्पादकीयम्

प्रियाः पाठकवर्गाः

हरि ॐ !

अस्माकं महाविद्यालये प्रतिवर्षे 'कामाक्षा पत्रिका' प्रकाश्यते। अस्मिन वर्षे आचार्यणाम अनुकम्पया अस्या पत्रिकायाः संस्कृत अनुभागस्य सम्पादनकार्यम मह्यम् दत्तम्। अयं मम सौभाग्यं अस्ति। प्रियाः बन्धुवर्गा एषा भाषा विश्वस्य सर्वासु प्राचीनतम् भाषा अस्ति। संस्कृत भाषा परिशुद्धा व्याकरण संबंधि दोषरहिता संस्कृत भाषेति निगद्यते। संस्कृत भाषैव भारतस्य प्राणभुता भाषा अस्ति। संस्कृत भाषा जिवनस्य सर्वसंस्कारेषु संस्कृतस्य प्रयोगः भवित। अस्माकं समस्तमपि प्राचीनं साहित्यं संस्कृतभाषायामेव रचितमस्ति, समस्तमपि वैदिक साहित्यं रामायणं महाभारतं, पुराणानि, दर्शनग्रन्थाः, स्मृतिग्रंथाः, काव्यानि, नाटकानि, गद्यनीति, आख्यानग्रन्थाश्च अस्यामेव भाषायां लिखिताः प्राप्यन्ते। एषा भाषा देवभाषा अस्ति।

आधुनिकापि सङ्गणकस्य कृते संस्कृत भाषा अति उपयुक्ता अस्ति। भारतीय गौरवस्य रक्षणायः एतस्याःप्रसारः सर्वैव कर्त्तव्यः।

''कुपुत्रो जायते क्वचिदपि

कुमाता न भवित।''

मनीष कुमार, छात्र संपादक
कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)

श्री गीताज्ञानम्

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शासत्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्मद्विनिः सृता॥

1. क्रोधाद्भवति सम्मोहः समोहात्सृतिविभ्रमः।
   स्मृतिभ्रंषाद बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

अर्थात् - क्रोध से अत्यंत मूढ़भाव उत्पन्न होता है। मूढ़भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है। स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि का नाश होता है। बुद्धि के नाश से पुरूष अपनी स्थिति से गिर जाते हैं।

2. वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
   तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

अर्थात् - जैसे मनुष्य पुराने पकड़े उतारकर नए वस्त्र धारण करता है, वैसे ही यह जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होता है।

3. नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
   न चैनं क्लेदयन्त्यायो न शोष्यति मारूतः॥

अर्थात - इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु सुखा नहीं सकती।

4. अच्छे द्योऽयमदाह्योऽयमकलेद्योऽशोष्य एव च।
   नित्यः सर्वगतः स्थाणूरचलोऽयं सनातनः॥

अर्थात् - यह आत्मा अच्छेद्य है, यह आत्मा अदाह्य, अक्लेद्य और निःसंदेह अशोष्य है तथा यह आत्मा नित्य सर्वव्यापी अचल और सनातन है।

5. यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः।
   जानाग्निदिग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः॥

अर्थात् - जिसके सारे शासत्रसम्मत कर्म बिना किसी कामने और संकल्प के होते हैं तथा जिसके समस्त कर्म ज्ञानरूप अग्नि के द्वारा भस्म हो गए हैं उस महापुरूष को ज्ञानीजन भी पण्डित कहते हैं।

6. श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधमत्स्विनुष्ठितात्।
   स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः॥

अर्थात् - अच्छी प्रकार आचरण में लाए हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में तो मरना कल्याणकारी है और दूसरे का धर्म भय देने है।

7. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिभवति भारत।
   अभ्युत्थानामधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

अर्थात् - भगवान श्री कृष्ण जी कहते हैं कि हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होगी, तब-तब मैं अपने रूप को रचता हूं अर्थात् साकार रूप से लोगों के समक्ष प्रकट होता हूँ।

8. परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
   धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे॥

अर्थात् - साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं (भगवान) प्रकट होता हूँ।

9. सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
   अहं त्वा सर्वपापेभ्यों मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

अर्थात् - भगवान श्री कृष्ण जी कहते हैं कि सम्पूर्ण धर्मों अर्थात् कर्त्तव्य कर्मों को मुझ में त्यागकर तू केवल मुझ सर्वशक्तिमान सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे संपूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा। शोक मत कर।

10. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
    मा कर्मफलहेतुभूर्मा ते संङ्गऽस्त्वकर्माणि॥

अर्थात् - भगवान श्री कृष्ण जी कहते हैं कि तेरा (जीवात्मा) का कर्म करने में ही अधिकार है। उसके फल में नहीं। कर्मों के फल का हेतु न हो। कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

मनीष कुमारः
कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)

चतुरः अध्यापकः

चत्वारि मित्राणी ते विद्यालयं गन्तुं न इच्छन्ति पठितुं न इच्छन्ति। परीक्षायाः पूर्वम् आरात्रं कोलाहलं कुर्वन्ति। अध्यापकं किमपि असत्यम् उक्तत्वा परीक्षातः विमोचनं प्राप्नुमः। इति चिन्तयन्ति। अग्रिम दिने अध्यापकं मिलन्ति वदन्ति च गतदिने वयम् एकं मित्रस्य विवाहार्थम अन्यं नगरं गतवन्तः पुनरागमनसमये चक्रम भग्नं जातम्। अपरं चक्रं नास्ति। अरात्रं कारयान नुदन् कालः अतीतः। विलम्बेन एव गृहं आगतवन्तः। तस्मात परीक्षार्थ पठितु न शक्त्वन्तः। परीक्षातः विमोचनं प्राप्तुमः किम्? इति प्रर्थितवन्तः। अध्यापकः तेषां प्रार्थनाम् अङ्गीकृतवान्। अपरस्मिन् दिने परीक्षां लेखितुम अनुमति दत्तवान्। छात्राः सन्तुष्टाः। द्वितीय अवसरः लब्धः इति मत्वा श्रद्धया पठितवन्तः। परीक्षायाः दिनम् आगतम्। छात्रान् पृथक-पृथक प्रकोष्ठेषु उपवेष्टुव आज्ञापितवान् अध्यापकः। परीक्षापत्रिकायां प्रश्नद्वयम एव आसीत्।

1. भवतः नाम किम्?
2. कस्य चक्रस्य भग्नं जातम्? एकं विकल्पं चिनोतु।
3. अ = पुरतः दक्षिणतः
4. आ = पुरतः वामतः
5. इ = पुरतः दक्षिणतः
6. ई = पुरतः वामतः

असत्यं नैव वक्तयं।

लता

कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)

मम भाषा संस्कृत भाषा

मम भाषा संस्कृत भाषा अस्ति। संस्कृत भाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतम् भाषा अस्ति। एषा भाषा परिशुद्धा व्याकरण संबंधि दोषारहिता संस्कृत भाषेति निगद्यते। संस्कृतभाषैव भारतस्य प्राणभुताभाषा अस्ति। राष्ट्रस्य ऐक्या च साधयति भाषा अस्ति। संस्कृतभाषा जिवनस्य सर्वसंस्कारेषु संस्कृतस्य प्रयोगः भवति।

सर्वासामेताषा भाषाणाम इय जननी। अस्माकं समस्तमपि प्राचीनं साहित्यं संस्कृतभाषायामेव रचितमस्ति, समस्तमपि वैदिक साहित्यं रामायणं, महाभारतं, पुराणानि, दर्षन ग्रन्थाः, स्मृतिग्रन्थाः, काव्यानि, नाटकानि, गद्य-नीति, आख्यानग्रन्था अस्यामेव भाषायां लिखिताः प्राप्यन्ते।

संस्कृतवाङ्गये विश्ववाङ्गये स्वस्थ आद्वितीयं स्थानम् अलङ्करोति संस्कृत संस्कृतस्य प्राचीनतमग्रन्थाः वेदा सन्ति। इयं भाषायाः महत्त्वं विदेशराज्येवपि प्रसिद्धं। संस्कृत एताद्दशं महत्त्वं द्रष्टैव कश्चित कविना सत्यम् एवं उक्तम्-

''भारतस्य प्रतिष्ठे हे संस्कृतं चैव संस्कृतिः''

अधुनपि सङ्गणकस्य कृते संस्कृत भाषा अति उपयुक्ता अस्ति। भारतीय गौरवस्य रक्षणायः एतस्याः प्रसारः सर्वैरेव कर्तव्यः।

अद्यत्वे केचित् मूढाः जनाः संस्कृतं मृतभाषा कथयन्ति ते न जानान्ति यत् ये संस्कृतस्य रसेन ज्ञानेन, संस्कृति बलेन अद्यपि कृतकृत्याः भवन्ति कि तेभ्यः संस्कृत भाषा मृताः? पुनरपि यदि केचित कुपुत्राः स्वजननी सदृशीमं इमां भाषां मृता कथयन्ति येन च भारतवर्षे संस्कृत भाषा उपेक्ष्येत तर्हि गीर्वाण वाणी एवं क्षमयतु तेषाम् अपराधः।

''कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति।''

मनीष कुमार

कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)

आधुनिकता

- न च पुरूषेषु कक्षित रामः अवशिष्ट अस्ति। गच्छ नानक जी इत्यस्य परमत्यागः। एषः प्रतिशोधस्य दुष्टः अग्निः केवलं पुरूषस्य अंतः नृत्यति।
- स्त्रीषु सीता नास्ति।
- न शंकरः पृथिवीं तारयिषुं विषं पिबती।
- न च श्री कृष्ण इव धर्माधर्मस्य ज्ञानं कस्यचित्। हरिश्चंद्रस्य सदृशस्य कस्यचित् अन्तः निर्मितः राग अस्ति।
- तदा कथयतु, तस्य स्वर्णयुगस्य कः भागः भवतः अन्तः अवशिष्टः अस्ति, यत् त्वं कस्यचित् धनेन सुखी नासि,
- त्वम् स्वयमेव श्रेष्ठः इति घोष्यसि।।

अर्थात्-

न नर में कोई राम बचा, न नानक जी सा परम त्याग।
बस नाच रही है नर के भीतर, प्रतिशोध की कुटिल ये आग।
नारी में न कोई सीता है, न धरा बचाने की खातिर विष कोई शंकर पीता है। न श्री कृष्ण सा धर्म अधर्म का किसी में ज्ञान बचा है।
न हरिश्चन्द्र सा सत्य किसी के अन्दर बसा है।
फिर बोलो कि उस स्वर्णिम युग का क्या बाकी तुममें, कि किसी की धूनी में रमकर, तुम फूले नहीं समाते हो, तुम स्वयं को श्रेष्ठ बताते हो।

उमेश कपूर
कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)

वानरः च खगः कथा

एकस्मिन वने कश्चन वृक्षः आसीत। तस्मिन एकः नीडः आसीत्। तत्र कश्चन चटकः पत्न्या सह अवसत। कदाचित अतीव वृष्टि आसीत। तदा कश्चन वानरः तत्र आगच्छत। तस्य शरीरं वृष्टया कृन्नम आसीत आत्मानं रक्षतुं सः वानरः वृक्षस्य उपरि आगच्छत्। तदा चटका तं वानरम् दृष्टवा किं भो। भवतः हस्तपादसहितं सुदृढं शरीरं अस्ति। अथापि एकं गृहम् निर्मातु न शकनोति किम्? इति अपृच्छत्। तत् श्रुत्वा कुपितः वानराः रे अधमे। तूष्णीं तिष्ठ। मम विषये भवत्याः का चिन्ता इति अवदत्। परन्तु चटका पुनः-पुनः तथैव उपदेशं अकरोत। अन्ते अत्यन्तं कुपितः वानरः चटकायाः नीडं नाशितवान्।

दिव्या शर्मा
कला स्नातकोत्तर, द्वितीय वर्ष (हिन्दी)

प्रहेलिका

!! यो जानाति सः पण्डितः !!

1. स्नेहं ददाति यो मह्यं, नित्यं तस्मै ददाम्यहम्।
   ज्योतिः पदार्थज्ञानर्थं, कोऽपित वदतु साम्प्रतम्।। - दीपकं
2. न तस्यादिः न तस्यान्तः मध्ये यः तस्य तिष्ठति।
   तवाप्यास्ति ममाप्यस्ति यदि नानासि तद्वद।। - नेत्रम्
3. अस्ति कुक्षी शिरो न अस्ति बाहु रस्ती निरंगुली।
   अहतो नर भवशीचा यो जानाति सः पण्डितः।। - युतकं
4. कृष्णमुखी न मर्जारी द्विजिह्वा न च सर्पिणी।
   पंच्भर्तानपांचाली यो जानाति सः पण्डितः।। - लेखनी
5. मेघश्यामोऽस्मि नो कृष्णो, महाकायो न पर्वतः।
   बलिष्ठोऽस्मि न भीमोऽस्मि, कोऽस्म्यहं नासिकारकः।। - गजः
6. वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः त्रिनेत्रधारी न च शूल्पाणीः।
   त्वगवस्त्रधारी न च सिद्ध योगी, जलं च बिप्रन्ह घटोत्कचः न मेघः।। - नारिकेलम् फलम्।
7. वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः तृणं च शय्या न च राजयोगी।
   सुवर्णकायो न च हेमधातुः पुंसश्च नाम्ना न च राजपुत्रः।। - आम्रफलम्
8. एकाकी द्वारी तिष्ठामि गृहपतौ बहिर्यते।
   गृहरक्षाकारः शुरो लघुमूर्तिः सुकीर्तिमान्।। - तालः

मनीष कुमार
कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)

चित्रग्रीव हिरण्यक कथा

अस्ति गोदावरी तीरि निशालः शाल्मलतरूः। तत्र नानादिग्देशादागत्य रात्रौ पक्षिणो निवसन्ति अथ कदाचिदवस्न्नायां रात्रौ लघुपतनकनामा वायसः प्रबुद्ध आयान्तं व्याथम् अपश्यत्। सः तदनुसरणकम्रेण व्याकुलश्चलितः। अथ तेन व्याधेन तण्डुलकणान्विकीर्य जालं विस्तीर्णम्। स च प्रच्छन्नो भूत्वा स्थितः। तस्मिनेव काले चित्रग्रीवनामा कपोतराजः सपरिवारो वियाति विसर्पन तान् तण्डुलकाणान् अपश्यत्। अवलोकयामासा ततः कपोतराजः तण्डुलकणालुब्धान् कपोतान् प्रति आह - ''कुत्रोऽत्र निर्जन वने तण्डुलकणानां संभवः? तन्निरूप्यतां तावत्। भद्रमिदं न पश्यामि।'' तद्वचनं श्रुत्वा कश्चित्कपोतः सदर्पमाह - 'आः। किमेवमुच्यते, ''वृद्धानां वचनं गृह्यय् आपत्काले ह्युपस्थिते। सर्वत्रैव विचारे तु भोजनेऽप्यप्रवर्तनम्।'' एतत् श्रुत्वा सर्वे कपोतास्तत्र उपविष्टाः। अनन्तरं सर्वे जालेन बद्धा वभुवु। ततो तस्य वचनात् तन्नवलम्बिताः तं सर्वे तिरस्कुर्बन्ति। तस्य तिरस्कारं श्रृत्वा चित्रग्रीव उवाच - ''नायमस्य दोषः। विपत्तकाले विस्मय एव कापुरूषलक्षणम्। तदत्र धैर्यम अवलम्व्य प्रतिकारेश्चित्त्यताम्। इदानीमायेवं क्रियताम्। सर्वैः एकाचितीभूय जालमादाय उड्डीयताम्।'' इति विचिन्तय पक्षिणः सर्वे जालम् आदाय उत्पतिताः। अनन्तरं स व्याधः सुद्रात् जालापहारकान् तानवलोक्य पश्चात् धवन् अचिन्तय - सहुंतास्तु हरन्तीमे मम जालं विहङ्गमां। यदा तु विवदिष्यन्तेवशेमेष्यन्ति मे तदा।'' ततस्तेषु चक्षुर्विष्यातिक्रान्तेषु पक्षिणुः व्याधो निवृतः। अथ लुब्धकं निवृतं दृष्टवा कपोता उवु - किमिदानीं कर्तुमुचितम्? चित्रग्रीव उवाच अस्माकं मित्रं हिरण्यको नाम् मूषकराजो गण्डकीतीरि चित्रवने निवसति। सोऽस्माकं पाशन् छेत्स्यति।'' इत्यालोच्य सर्वे हिरण्यकविवरसमीपं गताः ततो हिरण्यकः तद वचनं प्रत्यभिज्ञाय ससंभ्रमं वहिर्निः सत्य अब्रवीत - ''आः पुण्यवानस्मि प्रियसुहृन्मे चित्रग्रीव समायातः।'' पाशयद्धान चैतान दृष्टवा सविस्मयः उवाच - ''सर्वे। किमेतत्?'' चित्रग्रीवोऽवदत् - ''सर्वे अस्माकं लोभस्य फलमेतातं।'' एताच्छृत्वा हिरण्यकं चित्रग्रीव बन्धनं छेत्तुं सत्वरम् उपसर्पति। तेन सर्वेषां वन्धनानि छिन्नानि ततो सर्वान् सपूंज्य आह - ''सखे चित्रग्रीव सवर्था अत्र जालबन्धनविधौ दोषमाश्दक्य आत्मन्यवज्ञा न कर्त्तव्या।'' इति प्रबोध्य अतिथ्य कृत्वा चित्रग्रीवः तेन संप्रोषितो यथेष्टदेशान् सपरिवारो ययो।

मुस्कान शर्मा
कला स्नातकोत्तर, प्रथम सत्र (हिन्दी)

पहाड़ी अनुभाग

भीष्म कुमार
आचार्य संपादक

दिव्या शर्मा
छात्रा संपादिका

विवरणिका

क्र.	शीर्षक	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
1.	छात्रा सम्पादकीय	सम्पादकीय लेख	दिव्या	73
2.	दोस्त	कविता	तनुजा	74
3.	जिन्दगी रा बचार	कविता	दिव्या	74
4.	माठे जे ता जिन्दगी आसी	कविता	मनीषा ठाकुर	74
5.	बचपन	कविता	आँचल	74
6.	आमा-बापू रा प्यार	कविता	बनीता	75
7.	जय देव कमरू नाग जी	कहानी	बन्दना	75
8.	गाथा श्री मूल माँहूनाग शिलगर की	कहानी	मनीष कुमार	76
9.	नैरीकुला	व्यंग्यात्मक कविता	मोनिका ठाकुर	77
10.	मेरी माँ	कवित	उमेश शर्मा	77
11.	बापू जी	कविता	मनिषा ठाकुर	77
12.	दोस्ती के दिन	कविता	दयाल सिंह	78
13.	नैणी	विवाह गीत	राजेन्द्र	78
14.	शिक्षा	कविता	वंशिता ठाकुर	78
15.	पहाड़ी कहावतें	कहावतें	कशिश कुमारी	79
16.	बुझाहणी	बुझाहणी	मिताली	79
17.	मेरा परिवार	कविता	पूजा शर्मा	79

सम्पादकीय

नमश्कार! कामाक्षा पत्रिकाए एस नोए अंक छपि करे इच्छणेई खुशी मेंझ सौभी लै हैन-हैन बधाई होर शुभकामनाएँ।

म्हारा हिमाचल संस्कृति होर लोक साहित्य का हैन समृद्ध आसी। पर हामैं समय बदलदी-बदलदी गोऐदै बदलुए। कोरोना आछणे का तो हामा सभी माँझ हैन बदलाब गोआदा आए। एस कोरोनै का बाद सभीलै लागादा समार्टफोना नशा। ए आसी बड़ी-बड़ी बमारी होर नशे (शराब, ड्रग्स) का भी खराब। एस फौने चकरा दे गोए दै हामैं लागे अपणी संस्कृति, रीति-रिवाज भूलदै। एबै हामैं आपणै बुजुर्गा होर रिश्तेदारा सागे भी बैठो कम ही। एकी कमरे का पड़ो दूजै कमरे लै फोन करना। ऐस फोनै आसी फायदै हैन पर हामैं करो एता दुरूपयोग।

धोरे के सोचो तो आजका माणु आपणी भाषा होर मूल संस्कृति लोकचारा लागे गोआदा भूलदा। अबै आसी म्हारे एही जरूरत कि हामा लागणे आपणे लोक-संस्कृति, रीति-रिवाज होर बोली बचाणी। आपणी लोकभाषा दे गल्ला-बाता कर लेणी चाहिए साऊगी कुछ लिखणा भी चाहिए तै सको बै हामें अपणी संस्कृति बचाए।

ए बड़ी खुशीए गल्ल कि होरी बारी सैंही ऐसी बारी भी ऐया पत्रिका लै दसा सभी शोरू-शोरिए उत्साह आपणे विचार डाए, पहाड़ी कविता, कहावता, गपा श्णाई, गीया (संस्कार गीत), नैणी, नैरीकुला होर आपणै परिवारै बारे दे भी हैन लिखा। तुम्हा सौभिए सहयोगा बिना नी था ए हौणी, तुम्हा सौभिए सहयोगा कठै धन्यवाद। म्हारे 'समाजशास्त्र विषय' रे प्रवक्ता आदरणीय 'श्री भीष्म कुमार' जी तिन्हे हां आभारी कि एतरी बड़ी जिम्मेबारिआ काम मूं गैश तिन्हें विश्वास कौरे सौंपा।

उम्मीद आसी कि तुम्हा सभी पढ़णे आले लै लागणे इओं लेख बढ़िया होर होणा थारा एतेके ज्ञानवर्धन। एक बारी फेरी सभी लेखक मण्डला लै हार्दिक आभार, धन्यवाद।

दिव्या
कला निष्णात्

दोस्त

दोस्त आसी दुनिया दे न्यारा,
हामा सभी लै सभी का प्यारा,
घड़ी-घड़ी दो साथ हमारा
दोस्त आसी ऐसी दुनिया दे
सभी का प्यारा,
दोस्त न देखो धर्म-कर्म
दोस्त न देखो जात-पात
दोस्त न छाड़दी साथ कभी
दोस्त न दे दो जान सभी
पाक्के दोस्त न तोड़ने कभी
धीरे के निभाणें हामा सभी
सागे खेलना, सागे पढ़ना
एकी दुजै गै गुस्सा काढणा।
कभी रूसणा कभे मनाणा।
सागे-सागे घैड़ी स्कूला लै जाणा।
सच्चा दोस्त कभै नी छाडणा
आपणे जीवा का भी न काढणा।
दोस्त आसी दुनिया दे न्यारा,
हामा सभी लै सभी का प्यारा।

तनुजा, कला निष्णात

जिन्दगी रा बचार

जिन्दगी रै बारै दे एक विचार करो,
रोटी दै बारै ता ख्याल करो।
समस्या सभी पढ़ै-लिखे रे आसी,
सोचणे रे गल्ल भी ए सभी री आसी।
आजकल सबी लै नोकरी भी नै मिलदी,
घरै बैठे केरे भी जिन्दगी नै कटदी।
नौवें शोहरू खेचा दे काम भी नै करणा,
नौवे शोहरू फैशना करने का भी नै मनणा।
ऐबै तुम्हें बोल्ला कि केडखे होणा गुजारा,
होर केहडा होणा म्हारी जिन्दगी रा नजारा।
बुरा आया मुआ ए फैशन बुरा आया
जमाना,
खत्म होए जाना ए प्रकृति रा खजाना।
जंगल काटे केरे, तेत बणाए घर,
एबै आसी भगवाना रा ही सहारा।
पता नी जीवण केहड़ा होणा म्हारा।

दिव्या, कला निष्णात

माठे जे तो जिन्दगी आसी

माठी जे ता जिन्दगी आसी
हर गला दे खुश रआ
जो आखे सामने न हो
तेसरी गला दे खुश रहा।
जै कोई रूशा दा हो
तेसरे एस ढंगा दे भी खुश रहा
जो हटया वापस नी आछनी
तेसरी यादे पला देही खुश रहा।
काल कौरे हैरद
आपणे आजा दे ही खुश रआ
खुशियां किजिए कठै लाई नैह्णी
दूजै हासी दे ही खुश रहा
किले होआ लागेदे हर
पल कसरै साथे
कठै जल्दै कैबे ता आपणे
कठे खुश रआ।
मेरा घैर आसी पोखी,
पोखी नागा रे इलाकै। मेरा
मेअन कारण आसी पहाड़ी दी लिखणेअ
कि तुम्हें सोब आपणे घौरे कौरा कोशिश
पहाड़ी बोलणेई। ऐआ पहाड़ी भाषै भी कौरा
थोड़ी कदर। आछा तै धन्यवाद।

मनीषा ठाकुर
कला स्नातक, चीथी वर्ष

बपचन

बचपना दी जिन्दगे केतरे मजेदार थे
कोई चिंता नहीं बस खुशीए बहार
थे।
दोस्त, खिलौने दुनिया सारे थे
बड़े होना बस ये इच्छा हमारे थे।
बड़ी-बड़ी गल्ला, सपने बड़े हमारे थे।
जिम्मेदारे नी पता, हामें बेपरवाह सारे थे
बड़े किजै हुए जिंदगीए बदले जेड़े परिभाषा
वापस आच्छदा बचपन, मना दी यही आशा।
जिम्मेदारे, नौकरे टेन्शना जिंदगी दी अठारहा
कुछ न कुछ करना जिंदगी दी ये मना दी आशा।
कर्त्तव्य करने पूरे, आपू गैश डाना भरोसा।

आँचल, कला स्नातक, तृतीय वर्ष

आमा - बापू रा प्यार

आमा-बापू रा प्यार,
दुनिया दे अनमोल तौफा,
तिन्हा रे बिना अधूरा ये संसार,
आमा दो आँचल सागे बापू रा प्यार,
केबे तिन्हां री ढिड़ा, केबे तिन्हो दा दुलार,
आमा देओ मुश्किलों दे लड़ने री शक्ति
बपचपन बीता आमा-बापू ई छैली दे
धुपा पारली धार,
हर वक्त लगदा जेया गुलशन लांदी बहार,
तेखा जवानी सागे मुसीबते किया मूं गैश वार
लड़खड़ाये पैरे मेरे पर संभली गे
किलैकी मूं सागे था आमा-बापू रा प्यार।
हां करे ऐ ही दुआ
केबी बी न हो आमा-बापू जुदा
आमा-बापू देंदे शोहरू लै शक्ति
आमा-बापू रा प्यार
दुनिया दे अनमोल तोफा।

बनीता
कला स्तनातक तृतीय वर्ष

जय देव श्री कमरुनाग जी

मारे देवा रा नाओं आसी कमरूनाग। इयों आसी हिमाचल प्रदेशा रे सभी का बड़े देपते। इन्हा रा मन्दिर आसी रोहाण्डे का ऊभेयो 6 किलोमीटर। तेई पुजदे लागे 2 का 3 घण्टे सो भी हान्डना पड़ौ। जिहां हामें मन्दिरा हेठ भी पुजो तिंहा हो हामाजो 'भुजडु' देवा रे दर्शन। तेई पड़ो हामाजो 'काठ' चढाना।

मान्यता - मण्डी रे लोग मानो हैन कमरूनागा जो। कमरूनाग जीयो मानो बरखा रे देवते। जिहां भी तिन्हा जो कुछ मांगना हो, तिहां मांगे तियो कमरूनागा जी का। तिन्हां री मन्नत पूरी भी जाओ होए। तेका तिंयो चढ़ाओ खुशी-खुशी देवा जो सोना-चाँदी।

कथा - ऐडा बोला मारहे बुजुर्ग कि कमरूनाग थे महाभारता रे घटोत्कच रे शोरू बर्बरीक। तियो थे हैन ताकता हाले। तेही श्री कुष्णा किता तिन्हा सागे छल और तिन्हा रा मुण्ड मांगा तिन्हा का। कमरूनाग रा एक नाव आसी 'खाटु श्याम' भी।

लोकगीत -

मारहे देवा बोलो कमरूनागा
तैरी जय-जयकारा हो।
उन्धे पड़ो बोलो शीले लटोगली
ऊभे देवा री धारा हो।
हामें आए देवा मन्दिरा तेरे
शत नमन हमारा हो।

मेला - हर साला मनाओ तिन्हा रा मेला 14 या 15 जूना जो। तिहा लागो तेही लंगर, तेत मिलो बे मुफ्ता रा खाना। ऐता का 20 धेड़े बाद लागो रोहाण्डा रा मेला, तेत का बाद लागो जालपा माता रा मेला, ऐता का बाद लागो नेन्दला रे मेले।

स्थायी मान्यता - ऐड़ा बोलो लोग कि तेई आसी अजी भी सीता माता रे बाल।

सफाई - तेई पड़ो झील साफ करनी। झील भीतर हौ नोट और सिक्के। तिन्हा रा बनाओ सोना तेका पाओ तेता जो भी कै झीला भीतर।

साँपा हाले पौधे - कमरूनागा रे मन्दिरा रे ओरू-पोरू मिले अजी भी साँपा रे आकार हाले पौधे। ऐड़ा बोलो तियो करो तेस खजाने री रक्षा।

झील - कमरूनागा रे झील आसी हैन अनोखी। क्योंकि तेई आसी सोना, चाँदी और तेता जो चुराए भी ने कोई सकदा। ऐतरी कसी भीतर हिम्मत ही ने आथी। ऐड़ा भी बोलो कि पाण्डव स्वर्गा जो जाने का पहले आपना खजाना झीला भीतर छाड़े के नाठे गोए।

बन्दना
कला स्नातक, तृतीय वर्ष

गाथा श्री मूल माहँनाग शिरगल की

जय माँ बाण भगवती !

पूरै देशा मैंझ आसी देवभूमि नाओं के बड़ा ही प्रसिद्ध म्हारा हिमाचल प्रदेश। भांती-भांती रै शोभलै-शोभलै देओ देवतै इन्दे भाड़ने लै मिलौ। हिमाचला दे भी बड़ी शोभली होर शांत जैगा मण्डी जिला दे तहसील करसोग आसी। जूण कि घणे जंगला होर इमला-बिमला खाडा बिच दमेडड़ा नामक तिर्था केरे हैन प्रसिद्ध आसी।

करसोगे एक बड़े गौरवशाली देवते हां कथा शणाउं। जेसरा नाओं श्री मूल माहूंनाग शिरगल आसी। जूण कि म्हारा कुल देवता आसी। विष निवारणो कठै ता बड़ा ही मशहूर आसी म्हारा नाग।। जै कर मन्छा कीडा (साँप) काटो तेखा लागो सो नागै मन्दिरा लै लाना। तेखा चीथे (तिसरे) धैड़ै जाओ तेखा सो विष आपु उल्टी सागे निकले।

गल आसी द्वापर युगा रे, म्हारा नाग आसी द्वापर युगा रा राजा कर्ण। जूण कि कुन्तिपुत्र आसी। जिंया छल-कपट सागे अर्जुनै कर्ण मारा थिया कर्णें मारने का थोड़े पैहले देया थिया भगवान श्री कृष्णै कर्णा लै वरदान कि कलयुगा दे होंणा तेरा नाग रूपा दे अवतार होर तेरी दानवीरता कठै पूजणा तू सारे दे।

बस इथी का हो म्हारे नागे कथा शुरू। एकी बारी होआ थिया ऐडा कि करसोग का 26 किलोमीटर दूर आसी एक जैगा, तेता नाओं आसी शैंदल। तिन्दे एक किसाना लै हड़ा लांदी बेरी हड़ा हेठ मिला तेलै म्हारे नागा हासदा मूंहा हाड़ा अष्टधातुआ शिरा मैहरा। तेत कि हड़ा के निशान पड़ारा। आज भी सको सब तेसा हड़ी रेखा भाड़े।

12 जैगा दे आसी म्हारै नागै स्थान। हर स्थाना दे आसी नागै शोभलै-शोभले रथ। एड़ा आसी कि ए मैहरा थिया कुकाहण कोठी दे जुण कि करसोगा का 1 किलोमीटर दूर आसी। तिन्दा का आंणा एक शिरगला लै। कुकाहण कोठे आसी नाग माहूं पाली होर माता भिमाकाली लै समर्पित। तेताका बाद होआ बै म्हारा नाग शिरगलै रथा दे विराजमान।

शिरगल जुण कि करसोगा का लगभग 6 किलोमीटर दूर आसी, धारा गैश ठाण्डी बागरी होर घणे चीलै-केडुए जंगला सेट आसी शिरगल मन्दिर।

घरा-घरा का लोग आछो इन्दा लै। बड़ा ही सत-तप म्हारै नागा। म्हारा नाग लाओ सत जल्दी होर दण्ड देओ बड़ै राम्मै के। म्हारे बोलो कि ए आसी मांहूआ नाग, सिन्ने गोष्ठुए आग।

आषाढ़ै महिने साज्जै धैड़े एकी प्रविष्ठे हो म्हारे बाण मातै मन्दिरै मेला। जूण कि नागा सागे आसी। नाग भी आछो इन्दा लै रथा छत्रा सागे।

12, 13 प्रविष्ठै आषाढ़ लै हो तेखा नागा मेला। बड़ै ही धूम-घामा के मनाओ हाम्मे तेस। दूरा-दूरा का आछो लोग इन्दा लै। ऐसा धैड़े सांस्कृतिक कार्यक्रमा आयोजना भी हो।

3 प्रविष्टे श्रावणे महीने मनाओ म्हारे नागा जन्म धैड़ा। एस धैड़े धामा आयोजन भी हो। आगलै धैड़े 4 प्रविष्ठै जाओ नाग आपणे बन्छोट देहरै लै। ए स्थान आसी संतान प्राप्ति कठै मशहूर। जै कसरै संतान नहीं हो अगर एस उत्सवा दे राते एस स्थाना दे सच्चे मना के नागे अराधना करो तेखा अगले साल जाओ तिना लै संतान प्राप्त होए। एड़ा दयालू आसी म्हारा नाग।

माघे होर भद्रै महीनै साज्जै का 15 धेड़े तक हो नागी बेड़ा (बेला)। बड़ै ही धूम-घामा के मनाओ हामैं तिन्ना।

हर साल बारी-बारी के जाओ नाग आपणी 'दुई' (दो) शुआठी लै फेरा लै। बड़ा ही शोभला नजारा हो तिंया। नागा आछणा, नाचणा, आशीर्वाद देणा।

बड़ा ही प्यारा आसी म्हारे देवतेया रथ। पहाड़ी कला शैली दे आसी म्हारे नागा मन्दिर। सुन्दर हस्तकला, नक्काशी के आसी सजारा मन्दिर।

ऐड़ा सत-तप आसी म्हारे नागा। होए सको ता एकी बारी तुम्मैं भी आछेया म्हारै नागा गो लै। सच्ची बोलो हां इन्दा लै आछे केरे वापिस जाणेया मन ही नहीं करणा थारा।

जय श्री मूल माहूंनाग! जय माँ बाण भगवती।

मनीष कुमार, कला स्नात्कोत्तर, प्रथम वर्ष

नैरीकुला

- जाणा बै जाणा, लागो नैरी गै कुला फेरदै जाणा बै जाणा, जाण बै बहुए नैरी गै कुला फेरदै जाणा हो मेरे नी जाउंदा गै शाशुऐ मेरा बोलो शोहरो माठा।
- जाणा लागो बै बहुए नैरी कुला फेरदै, मेरा बोला शोहरो चिंगो मेरे नी जाउंदा नैरी कुला फेरदै शाशुए।
- तेरे शोहरू जो हामा बोलो दूध, भात देणा, जाणा बै लागो बहुए नैरी कुला फेरदै।
- मेरा बोलो शोहरो भुखी मर मरण, तेरे शोहरू लै बोला हामा गऊ माता रा दूध देणा, जाणा बै लागो बहुए नैरी कुला फेरदै।
- मेरे बाल डाया बारी जे मेरी आमा जी आऊंणा तेबे मेरी आमा जी मेरे मूंड बालणा, लागो बे बहुए नैरी कुला फेरदै जाणा बै लागो।

मोनिका ठाकुर,
कला स्नातक प्रथम वर्ष

मेरी माँ

सभी का प्यारे हो माँ
सभी लै प्यार करो माँ
माँ तुम्हें आसी एक फला रा पौधा
तेरा आसी हाँ एक हिस्सा
तेरी ही ममता दे हाँ पला-बढ़ा
माँ ताखा ही सब कुछ सीखा
सारे परिवारा जोड़ो माँ
सभी लै प्यार करो माँ
हर मोड़ा दे साथ निभाओ माँ
सही-गलता दे अंतर दसो माँ
तेरा प्यार आसी सभी का लग
तेरा एही प्यार बणाओ
ता दुनिया गा लग
ताखा ही मिलेदे माँ ए जिंदगी
ता बिना अधूरे आसी एक जिंदगे
सभी का प्यारे ही माँ
सभी लै प्यार करो माँ।

उमेश शर्मा, कला स्नातक द्वितीय वर्ष

बापू जी

दुनिया दे सभी का बांकै हो बापूजी
आपणा खून-पसीना दो बहाए
आपणे शोरू-शोरी ले
एणे बांकै हो बापू जी।
आपु दुःखी होए जाओ
आपणे शोरू-शोरी न देणी दुःखी होणे
एणे हो बापूजी।
केड़ा भी वक्त आए जाओ
आपणे शोरू-शोरीआ साथ
कभी न छाडदे बापूजी।
माँ-बाप, गुरु दा उपकार,
भुलणा नी दुनिया दे कधी नी।
पढ़ाए-लिखाए केरे
दुनिया दे हामा ले जो पहचान दो
एतरै बांकै हो पापाजी।

मनिषा ठाकुर, कला निष्णात

दोस्ती के दिन

ऐंउ पल जुण छूटे जाणे
ऐओं दिन लौटकर न आणे
दोस्ता सगे ये साथ नोखा
बस याद बनी करी रही जाणे।
सोबी री आपणी जिंदगी होणी
नयी जिंदगी दी ढली जाणे
हामा सोबी आपणी जिंदगीए पथा दी
ऐंउ अग्रसर हो जाणे।
पर आसा उम्मीद आज भी सोबिका
कीछ बेहतर करी जाणे
हामा सोबी आपणी मेहनता संगे
एक नवा दौर लाणा।
ये जो पल बीत जाणे
ये दिन लौटकर न आणे।

दयाल सिंह,
कला स्नातक तृतीय वर्ष

नैणी

1. *गाडा घरटे पीशे कणका रे दुके, हामें आए थारे पाहोणे, तुम्हें रहे भीतरे लुके।*
2. *गाओ जीबली, पाणी ने कोफरे पीन्दे, भलें घरा रे शोहरे पालें ने छूहणे देन्दे।*
3. *उझे पड़ी बडेहण उन्दे पड़े झेई, हामें आए थारे पाहोणे शेलें डाहेया मांजड़े छेंई।*
4. *ढेका रे कौंकड़ो फूले ढेका रे औंलें, ठाण्डें ने रजुआ पाणीए, थारी ने रजुआ गल्लें।*
5. *ओरे पड़ी स्मणी, पोरे पड़ी मस्ठी, भलें घरा रे शोहरी रहे खीन्थड़ी हेठ सुती।*

राजेन्द्र, विज्ञान स्नातक, प्रथम वर्ष

शिक्षा

शिक्षा का मिला हामा ले बड़ा भारी ज्ञान
शिक्षा पाया बणा मूर्ख वी विद्वान
शिक्षा मकसद होआ हामा ले संस्कार देणा
म्हारा काम होआ ग्रहण करना
शिक्षा हामों सबीआ ज्ञान भण्डार
तौ ही शिक्षा म्हारे जिणेआ आधार
शिक्षा बिणा नी होई सकदा
म्हारे दिमाग विकास
सब शिक्षा पाओ सब विकास करो
ए ही आ म्हारा सभीआ प्रयास।

वंशिता ठाकुर,
कला स्नातक द्वितीय वर्ष

पहाड़ी कहावतें

1. दूरा रा जवाएं फूल बराबर, नेड़ा रा आधा, घर जवाएं गाधा।

अर्थ: दूर का दामाद जो कभी-कभी ससुराल जाता है उसकी खूब आव-भगत होती है। नजदीक वाले की थोड़ी कम लेकिन जो दामाद लड़की के घर रहता है (घर जमाई), उसकी इज्जत नहीं होती।

2. दूर जेहणी चुजर मूही एकीए नी लोड़ी छुई।

अर्थ: एक घर में दो औरतें जो एक जगह काम तो कर रही होती हैं पर आपस में बातें नहीं करती।

3. वरधैए बाकरे जाहा बाखा लै।

अर्थ: मूर्ख व्यक्ति मूर्खता करता जा रहा है।

4. जेठै डेया मरणा ले सो न हटा शाहड़ै न शावणै।

अर्थ: ऐसा व्यक्ति जो किसी काम के लिए भेजा हो, और वापिस आने में अनावश्यक देरी लगाए।

कशिश कुमारी,
कला स्नातक द्वितीय वर्ष

बुझाहणी

1. धरणे गा लागा एक डंग, तेस गैश सौ साठ डवारली।
2. पाच कौंवला फूल करेडा, बोल भाऊआ वचन मेरा।
3. लाल बटुआ पीउंलै पैसे, देखणे आले कुण कैसे।
4. पारा ओरी आ एक नानो, तेस न मूंड न जानो।
5. पार ढेकै उल्टा कीरला।
6. छः जांगा छः बाहा, त्राए मूंड दुए शाह।
7. आर भी छलाका पार भी छलाका, मांझ नालै गुंफलू पाका।
8. आमै जमेआ शोहरू सपूत, बड़े होआ भस्म दूत।
9. कालै बौणे रऊते, लाल पाणे पीऊते, तेत केरै जीऊते।
10. घड़ा नै डुबा धडवाही, हाथी भी नहाया, पीपला रै रूंख डूबै, पंच्छे पछताय।

1. डुगलो (गुच्छी) 2. कथूरल 3. पीपली 4. ठेरणो 5. नाक 6. मूर्दा होर तेस चकणे आले माहणो 7. नवणे (मखन) 8. पेठा, 9 जूं 10. चेओ (ओस)।

मिताली,
कला स्नातक, प्रथम वर्ष

मेरा परिवार

सभी का बढ़िया सभी का न्यारा
पूरी दुनिया दे आसी परिवार हमारा।
घड़ी-घड़ी दो साथ हमारा
हर मुश्किला दे निभाओ साथ हमारा।
दादी आसी सभी का बढ़िया
सीयों आसी जेड़ी जादुई पुड़िया।
पापा आसी बड़े प्यारे
सियों आसी दुनिया दे न्यारे।
मेरी बैहणा आसी बड़ी प्यारी
घरा दे आसी सीओं सभीए राजकुमारी।
मेरा भाई आसी बड़ा न्यारा
सो आसी सभीया राज दुलारा।
मेरी माँ आसी बड़ी प्यारी
सियों आसी दुनिया दे सभी का न्यारी।
दादो आसी हामा सभी लै खुश
क्योंकि एबै नी तिन्हा लै जैणिओ दुःख।
जूणी लाए मेरे परिवार लै नजर
तेखा नी मिलनी दुनिया दे तेखा खबर।
चाँदा का भी न्यारा,
दुनिया दे भी प्यारा
आसी बै संसारा दे
सारा
मेरा परिवार न्यारा।

पूजा शर्मा,
कला स्नातक तृतीय वर्ष।

FORM - IV

Statement about ownership and other particulars required under Rules of Press and Registratin Act, for the magazine 'KAMAKSHA'.

1.	Place of Publication	:	Govt. College Karsog, District Mandi (H.P.)
2.	Period of Publication	:	Annual
3.	Name of the Publisher	:	Dr. Jagjit Singh Patiyal
	Nationality	:	Indian
4.	Name of Printer	:	Adarsh Enterprises, Main Bazar Karsog
			Mob. 9418114452, 85806 75051
5.	Name of Chief Editor	:	Dr. Kulbhushan Sharma
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Assistant Professor, Govt. College Karsog
6.	Name of Owner	:	Government College Karsog

I, Dr. Jagjit Singh Patiyal, Principal, hereby, declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Dr. Jagjit Singh Patiyal

RAINBOW

FACULTY MEMBERS

ADMINISTRATIVE STAFF

Printed By: Adarsh Enterprises, Karsog | 9418114452, 8580675051